मुड़ियाएल घर

मुड़ियाएल घर

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

MURIYAL GHAR

Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-81-936422-9-0
दाम: 251/- (भा.रु.)

चारिम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2016)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

कथा-सत्तैर

बगदल गाम

काल्हि साँझमे बंगलोरसँ आएले रही, गाड़ीक थकान रहने भरि मन अराम केलौं। बेरूका चाह पीब लेलौं, टहलै-बुलैक समय सेहो भाइए गेल अछि। ओना किछु काजक भार तँ ऊपरमे ऐछे, तँए नीक हएत जे पहिने सरलाहीए जाइ, काजो भऽ जाएत आ तीन कोस टहैलो लेब।

सरलाही जाइक कारण रामचन्द्रक परिवारमे रुपैआ आ चिट्ठी पहुँचाएब अछि। रामचन्द्रो बंगलोरेमे रहै छैथ।..पिताजी मरिए गेल छैथ, मुदा माए तँ जीवित छैथे तँए कहि कऽ जाएब नीक हएत। कहि कऽ जाएब आ आदेशसँ जाएब दुनूक दू परिस्थिति अछि। जैठाम पूर्वसँ अबैत कोनो काज अछि, ओइठाम आदेश नइ जना देब माने कहि देब अछि।

ओना पत्नियों लगेमे रहैथ, औझुका मनुक्ख रहितो एते तँ विचारए पड़त जे जखन दुनू परानी बंगलोरमे रहै छी, माए गाममे रहै छैथ तँए ऐठाम जेते शुभ माएकेँ जनौलासँ हएत ओते पत्नीकेँ जनौने नइ हएत...।

माएकेँ कहलयैन-

“माए, सरलाहीमे काज अछि, टहैलो-बुलि लेब आ काजो भऽ जाएत।”

एक तँ पचहत्तैर-अस्सी बर्खक बीच उमेरक माए, कानसँ सुनबो कम भऽ गेल छैन आ आँखिसँ देखबो, ओना अँगनाक काजक लुरू-खुरूमे भरि दिन नचिते रहै छैथ। ..मने-मन सरलाहीकेँ अखियासैत माए बजली- “बौआ, सरलाही गाम तँ बगदल अछि!”

एक तँ कानसँ उच्च सुननिहारि तैपर आँखियोसँ कम देखिते छैथ, तखन जँ अलगटेंट धिया-पुता जकाँ माएसँ बकटेंट करब नीक नइ बुझि जगहक नाओं बदैल टहलै-बुलैक आदेश लऽ ली...।

बजलौं- “माए, अही सभमे सँ धुमने-फिरने अबै छी।”

गपमे केतौ खोंच-खाँच माएकेँ नहियेँ बुझि पड़लैन। बजली- “बौआ! ‘परदेशी’ आ ‘पछबा’ सबेर-सकाल अपन गर पकैड़ लइए, तँए बेसी अबेर नइ करिहह।”

माइयक बात सुनि मन खुशी भेल। मुदा लगले एकटा बात मनमे उखैड़ गेल। उखैड़ ई गेल जे ‘अबेर’ की कहलैन? बंगलोरमे रहै छी तँ दस-एगारह बजे राति धरि डेरा अबै छी, तैठाम माए जे ‘अबेर’ कहलैन, से की कहलैन? फेर मनमे भेल जे सबेर-सकाल ‘परदेशी’ आ ‘पछबा हवा’ गर पकैड़ लइए? ..कोनो बात कोनो गरपर चढ़बे ने कएल। मनमे ईहो होइत रहए जे माइयक बात घुमि कऽ एला पछाइतो बुझि लेब, तइले अखन जेते समय लगाएब ओते घुमि कऽ अबैमे देरी हएत। तहूमे ने माए केतौ पड़ाएल जाइ छैथ आ ने अपने, तखन निचेनसँ किए ने बुझब। माइयो तँ माइये भेली ने जे केहनो अधला-सँ-अधला काज किए ने करी, माटि वा पाथरक मूर्ति माइक सोझामे रखि, दुनू हाथ जोड़ि कहबैन जे माए हम बड़ नमहर पापी छी, अपराधी छी, सएह कहै छी। बुझले तँ बात अछि जे केहनो कुपुत बेटा किए ने होइ मुदा माए थोड़े कुपित हेती, ओ तँ दुनू हाथ उठा कऽ आसिरवचन कहबे करती। भलेँ ओइ आसिरवचनकेँ हम किए ने अपना मने उपयोग करी।

अखन तक आँगनसँ नइ निकलल छेलौं, मुदा माए अपन विचार दैत अपना काज दिस बढ़ि गेली। जेना एक्के बेर गाछक फड़े बनि कहि देने होथि। ओना माइयक बात सुनैत रही दुनू परानियोँ आ दुनू धियो-पुतो, मुदा ओकरा दुनूकेँ माने धिया-पुताकेँ कोन मतलब छै जे बापक माइक बात सुनत, अपन माए लगमे छैहे।

..पत्नी दिस नजैर देलौं तँ बुझि पड़ल जे आँखिमे अस्सी मन पानि जमा भऽ गेल छैन जे सौनक वदलाएल मेघ जकाँ टपटपाइ छैन। भाय! टप-टपो केना ने करतैन, बंगलोरक बाजारमे एगारह-बारह बजे रातिमे दुनू बेकती टहैल-बुलि डेरा अबै छी आ ऐठाम-गाममे- तँ ने ओहन चलैक सड़क अछि आ ने घरे-घर सटल बाजार, आ ने दिनोसँ बेसी चमकदार बिजलीक इजोत, तैठाम दुनू परानी जे दू दिस हएब, से चाहे जेतबे कालक लेल होइ, ओ नीक नहि। किएक तँ क्षणमे जखन छनाक भऽ जाइ छै तखन ई तँ दिनुका कलौक उपरान्तसँ लऽ कऽ बेरहटक कोन बात जे रौतुका भोजन विश्राम धरिक भेल। तहूमे तीन सालपर एलौं हेन, गाम-घरक केहेन रूप-रंग बनल, केहेन चालि-ढालि आ केहेन चालि-ढालिक रस्ता-पेरा इत्यादि बनल, सभ अनभुआरे-अनभुआर अछि। मुदा ईहो तँ उचित नइ भेल जे सभ दिन दुनू परानी संगे टहलै-बुलै छेलौं आ आइ असगर भऽ गेलौं।

..ओना मनमे ईहो उठैत रहए जे अँगनासँ निकलैसँ पहिने पत्नीक मेघौन मनकेँ वौस ली मुदा ईहो होइत रहए जे विरह-वेदनाक वौसबक समय निसचित नइ अछि, जँ बेसी समय लगि जाएत आ माए केम्हरोसँ औती आ देखती तँ टोकिए देती ने जे की भेलह, किए ने गेहलह। तखन की कहबैन जे 'कनी घरवालीकेँ वौसै छी। ..मन छटपटाए लगल जे की करी। मुदा लगले एकटा जुकती फुरल। फुरल ई जे जहिना रंग-रंगक विरह-वेदना होइ छै तहिना ने ओकरा-ले रंग-रंगक खरो-खाँहिंस होइ छै, तखन तँ भेल जे जइ रंगक खर होइ कि खाँहिंस तेकर पूर्ति होइ। काजक पूर्ति ने भारी अछि, किएक तँ ओकर विकल्प नइ छै, मुदा मनकेँ तँ से नइ अछि। जँ से रहितै तँ बाल-बोधक कानबक नोर सुखलो ने रहै छै आ तइसँ पहिने जँ किछु भेट जाइ छै तँ हँसौ लगैए। सएह सोचि कहलयैन-

"हाइ रे वा! अहाँ अखन तक तैयारो ने भेलौं हेन?"

पत्नी बजली- "अहाँ कहनौं ते एको-बेर नइ छेलौं?"

ओना ओ अदहे जीए बजली। अदहा जीए बजैक कारण भेलैन नब जगहपर आएब। बंगलोर अपन कर्मभूमि छी, जँ बच्चाकेँ बारह बजे रातिमे कोनो उपद्रव-बात हेतइ तँ ओकर माइये-बाप ने ओझा-गुनी आकि कि डॉक्टर ऐठाम जाएत। मुदा ई तँ तइसँ हटल अछि, तहूमे बंगलोरमे अपने दुनू परानीक जुति-भाँतिमे जीबै छी, ऐठाम माइयक गारजनीमे आबि गेल छी। ओना पत्नीक मुँहक रूखिसँ बुझि पड़ल जे जे रोग पहिने दबने छेलैन ओ दबि गेलैन आ दोसर रोग मनमे उठि एलैन।..अनुकूल परिस्थिति देखि बजलौं- "दोसर साँझ धरि घुमि कऽ एबे करब।"

जखन डिबिया, लालटेन घर-अँगनामे टहलैए, वएह भेल दोसर साँझ। भाय, डिबिया कि लालटेन बिजली-बौल नइ ने छी, जे एकठामसँ दोसरठाम नइ टहलत। डिबिया तँ ओ डिबिया छी जे हाथमे बैस टहलैए। जरौला पछाइत सिरा आगूसँ उठैत घरसँ निकैल आँगन पहुँच चारू दिशा देखैत अपन जगहपर आबि बैसैत अछि।

..अँगनासँ निकैलते मन भुतिया लगल। भुतिया ई लगल जे जखन माइयक मन मणि देखै छी तखन इजोत जकाँ बुझि पड़ैए आ नजैर जखन पत्नीपर अबैए कि आँखिक आगू अन्हार जकाँ भऽ जाइए।

केतबो मनकेँ बुझा-बुझा मनाबी तैयो किम्हरो-ने-किम्हरो चुपे-चाप ससैर जाए। फेर जखन काज दिस नजैर उठए तँ बुझि पड़ए जे अनेरे मनक मोइनमे डुबै छी। भाय, सरलाही गाम जा रामचन्द्रक परिवारमे चिट्ठी आ रुपैआ देब अछि तखन अनेरे मनक जंजालमे ओझरा रस्ता रोकि ठाढ़ छी। डेग उठबैक उत्साह मनमे भेल। आगू डेग उठिते पत्नीक संगीक रूप जेना आगूसँ आबि मनकेँ घेर लेलक। घेर ई लेलक जे जँ पत्नीकेँ बंगलोर जकाँ संगे लऽ चलब तँ लोकक नजैर लगत की नइ? नजैरियो तँ अपन-अपन होइ छइ। एहनो नजैरक तँ लोक छैथे जे गुरु तुल्य छैथ, माने जिनकासँ स्कूलमे पढ़ने छी, ओ जँ आगूमे पड़ि जेता तँ हुनका प्रणाम पाती कऽ पेबैन की नहि। बाट चलैत बटोही चाहे ओ पुरुख

होथि आकि नारी, अपन-अपन लिंगानुकूल टोकनिहार- टोकनिहारि होइते छैथ, मुदा जखन पति-पत्नी दुनू संगे रस्ता धेने चलैत होथि तखन तँ समस्या उठि ठाढ़ होइते अछि। अखनो गाम घरमे पुरुख अपना काजे आ महिला अपना काजे फुट-फुट निकैलते छैथ। ओना, हाट-बाजारक काज जे गामसँ हटलो अछि आ सटलो अछि, तैठामक रूप अलग होइ छइ। शहर-बाजारमे दूर-दूरक लोक रहने अनेको रंगक चालि-ढालि, बात-विचार चलिते अछि, संग-संग ईहो तँ ऐछे परिवारसँ निरमित समाजक जे रूप-रंग होइ छै, से नइ छइ। मुदा समाजो निरमानक तँ यएह-टा रस्ता नइ अछि। हँ! ईहो अछि, ईहो ऐछे नहि अखनो गाम-समाजक यएह रूप-रंग अछि।

..अनेरे दलानक कोण लग मन वौआए लगल। मनकेँ समटैत सरलाहीक रस्ताकेँ हिया कऽ देखलौं तँ बुझि पड़ल जे तीन कोस अबै-जाइमे डेढ़ घन्टा लगत, अदहा घन्टामे काज निपटाएब दू घन्टा भेल। अखन चारिए बजैए छह बजे तक घुमि कऽ चलि आएब।

गामक सीमानपर पहुँचते अपन गामसँ जेबा कालक सीमान मोन पड़ि गेल जे गामसँ किए गेलौं? जखन पिताक देल पाँच बीघा जमीनमे सभ किछु छल। माने अन-पानि उपजैबला खेतसँ लऽ कऽ गाछी-कलम आ पाँच कट्ठाक पानिक एकटा डबरा सेहो तखन? ..सीमापर ठाढ़ भेल, ने आगू डेगे उठए आ ने मने मानए। मन ठमकल। ठमैकते उठल अही गामक ने हमहूँ बी.ए. पास पढ़ल-लिखल छी। हमरा सन-सन आरो बहुत गोरे छैथ, कियो डॉक्टर छैथ तँ कियो इंजीनियर, मुदा जइ गाममे जन्म भेल, की ओइ गाममे हमर खगता नइ छै आकि हमरे रहि कऽ जीबैक खगता नइ अछि? मुदा..!

आगू दिस डेगे ने उठए। मुदा लगले मनमे भेल जे जहिना बकरी चरौनिहार धिया-पुता बकरीकेँ चरैले खेतमे छोड़ि रस्तापर बैस गरदा-माटिक अँगना-घर बना गबैए जे 'खेलै छेलिऐ धुपै छेलिऐ रोपै छेलिऐ

धान, मने-मन विचारै छेलिऐ जेबै जगरनाथ..।' तहिना किए ने डेगे-डेग रस्तो काटब आ मने-मन विचारबो करब जे बी.ए.पास केलाक पछाइत गामसँ किए चलि गेलौं! एतबो ने अपने बुझै छी जे जखन बी.ए. तकक बोध परिवारमे आबि गेल तखन ओइ परिवारक ऐगला सन्तानक लेल स्नातकक रस्ता भेट गेल। ओना, अनेको प्रश्न बीचमे अछि, मुदा ओ अखन नहि। गामसँ बेकतीकेँ हटने बेकतीक गुण सेहो हटि जाइए जेकरा बेच उपार्जन करैए। मनमे उठल- जगरनथिया गीत नचिते रहए, आगू विदा भेलौं।

जहिना डेग सरलाही गाम दिस बढ़ल तहिना मन पाछू उनैट अपना गाम दिस बढ़ल। बी.ए.क जखन विद्यार्थी रही, अर्थशास्त्रक विद्यार्थी रही, अपन जे पैतृक सम्पैत अछि ओकर जखन अर्थशास्त्रीय तुलापर आँकी तँ बुझि पड़ए जे एकटा नीक परिवार बना ठाढ़ भऽ सकै छी। बिसवाससँ मन भरल रहए। ने नोकरी मनमे उठल आ ने परदेश सोझमे आएल। मुदा पछाइत?

..मन हहरए लगल। हहरैत सभ हरियरी झड़ि-झड़ि धरतीपर खसैत-खसैत खसि पड़ल। किए खसल? अखनो मन हारि मानैले तैयार कहाँ अछि जँ दस कट्ठा खेत अछि तँ पाँच गोरेक परिवारक भरण-पोषन किए ने हेराएल रहत। मुदा जँ अपनो ओइमे हेराएल रहब तखन ने। भरि दिन चौक-चौराहापर ताश भाँजब आ खेतमे हरियरी तकबै, से केना औत। ओहू वृत्तिमे घाटा थोड़े अछि, ताशेपर ने जुआ सेहो चलै छइ। अखनो मन कहि रहल अछि जे चाहे डॉक्टर होथि कि शिक्षक आकि आन-आन, सबहक खगता गाममे अछिए। मुदा धोखा भऽ गेल अछि जे सभ रेडीमेड तकै छिऐ। मुदा हमरा सेने एतबे नइ भेल, जखन हाँसू-खुरपी-कोदारि नेने खेत पहुँची तँ जहिना कनही गाइक बथान फुट कऽ बनबैए तहिना कनहा-कनही सभ तेते ने किचारलक जे लाजे गामसँ पड़ा गेलौं। कहू जे ई होइ जे छीतना सन लोक, जे मटिया तेल औंठा निशान

लगा कऽ उठबैए, से मुहेँपर कहलक- “घुरन भैया, अहाँ तँ पढ़ल-लिखल छी, अहूँ जखन घासे छिलबै तखन हमरा सन मुरुख आ अहाँ सन पढ़ल-लिखलमे की अन्तर भेल?”

छीतनाक बात सुनि मन छिड़िया कऽ जेना भ्रमित हुअ लगल। भ्रमित ई जे गाममे सभ छैथ, डॉक्टर-प्रोफेसर-शिक्षक इत्यादि, मुदा सभ जखन अपन पूर्वजक सम्पैतकेँ छोड़ि, गामकेँ छोड़ि बाहर चलि जाइ छैथ तखन जँ हम सोची जे गाममे नीक जकाँ परबरिस चलि सकैए, ई केते दूर तक सम्भव अछि?

छीतनाक बात सुनि बकार बन्न भऽ गेल रहए। की जवाब दैतिऐ, जे जवाब छै से ओ बुझि नहि पबैत आ किछु कहि मनकेँ बहला दैतिऐ से अपन मन कबुल नहि करए। आइ धरि तँ अहिना सभकेँ सभ बहलबैत-फुसलबैत आबि रहल अछि। तहिना करब नीक होएत। मुदा तेतबे नहि भेल, रंग-रंगक गन्हकी कीड़ी हवामे सेहो उड़ए लगल। कियो, ‘पढ़ै फारसी बेचै तेल’ कहि ताना मारए, तँ कियो भुसकौल विद्यार्थी कहि हँसुआ-खुरपीसँ आगूक विचारे ने बुझलक। कियो बगदल मन कहि बताह बुझए, तँ कियो किछु, कियो किछु...।

मुदा प्रश्न एकेटा अछि जे मातृभूमि आकि देशक धरती, जे सोना उगलैक गुण अपना पेटमे रखने अछि, तेकर दिशा-दशा की अछि, ई तँ विचारए पड़त। मुदा अपन हारल आ घरनीक मारल बजबो करब नीक नहियेँ अछि। एकेटा बुझू जे गामसँ हारि परदेश गेलौं।

सरलाही आ हमरा गामक बीच माधोपुर पड़ैए। अपन गामक सीमान टपि माधोपुर प्रवेश करिते रही कि की धिया-पुता आ की चेतन, जे रस्ता कातमे ठाढ़े रहैत वा कोनो काजे करैत रहैत, सबहक मुहसँ यएह निकलैत- “केतए जाएब?”

ओना मनमे ईहो शंका होइत रहए जे अनेरे किए सभ पुछैए! जरूर

किछ बात हेतइ। दस हजार रुपैआ संगमे अछि, जखने कहबै सरलाही जाइ छी, तँ पुछबे करत जे किए जाइ छी? झूठ केना बाजब! गाम-गामक छीछा तँ अखनो एहेन ऐछे जे असगर-दुसगरकेँ पाइ-कौड़ी लोक छीन लइए। ओना, रूपमे कनी बदलाव आएल अछि, बदलाव ई जे गाड़ी-सवारी बढ़ने कोनो बाल-बोधकेँ रस्तापर खेलाइएले वा ठाढ़े होइले कहत, आ जखने ओ तेज सवारी देखि डरे कानए लगत तँ अनेरे ओइ गाड़ीबला केँ रोकि जेबीक सभ पाइ जुरमाना तरे छीन लेत। खाएर जे हौउ...।

मनमे उठल, प्रश्न तँ उनटौलो जा सकैए, जइसँ अपन तरी-घटी छीपा प्रश्नकर्तेक तरी-घटी किए ने बुझि लेब।..कनियेँ आगू बढ़लौं कि एकटा अधबेशू महिला अपन अँगनाक मुहथैरपर ठाढ़ रहैथ, देखिते पुछली- “बाउ, केतए जाएब?”

रूकि कऽ ठाढ़ भऽ गेलौं। मने-मन हियबए लगलौं जे की उनटा कऽ पुछिऐन। गर अँटल, बजलौं-

“अहूँकेँ कोनो काज अछि?”

हमर बात सुनिते ओ महिला बजली-

“नइ, अपना तँ काज नइ अछि, अहींक काजे बजलौं।”

हुनकर बात सुनि जिज्ञासा बढ़ल, बजलौं-

“से की?”

बजली- “रस्ता धेने उत्तर-मुहेँ जा रहल छी, ऐ टोलक पछाइत सरलाही गामक सीमा छइ जे अखन बगदल अछि।”

बगदल की अछि! कोनो अरथे ने लगए। गामो बगदैए से पहिले दिन सुनलौं। ओना, बगदै-बगदैक अनेको कारण अछि। जइमे एहनो कारण अछि जे केतौ बेकती बगैद गाम बगदा दइए तँ केतौ गामे बेकतीकेँ बगदा दइ छइ। मुदा मनमे भेल अखन रस्ता चढ़ल छी, काजे जा रहल छी, घुमि कऽ आएबो अछि, अनेरे जे रस्ता-पेरामे अबैर कऽ लेब तखन

या तँ काजे बिथुत हएत वा घुमि कऽ अबैमे अबेर हएत।

बजलौं- “दादी, की बगदल अछि?”

जहिना शास्त्र-पुराणक कथामे व्यासजी निमग्न भऽ प्रवचन करै छैथ तहिना दादी बजली-

“आइ पनरह दिनसँ सरलाहीमे माताक आगमन भेल अछि, पहिने छोटकी भेल, पछाइत मैझली होइत अखन बड़की भरि गाममे पसरल छैथ, तँए कहलौं जे आगू नइ बढ़ू।”

दादीक बात सुनि थकमका गेलौं। थकमका ई गेलौं जे ई तँ चेचक बेमारी छी, जेकर इलाज एते उन्नैत कऽ गेल अछि जे जखने खसरासँ बेमारी शुरू होएत, तखनो रोकल जा सकैए।

ओना दादीक विचारक असर आनपर जे हौउ मुदा अपनापर ओते नइ पड़ल जे घुमि जइतौं। बंगलोरक अस्पतालमे देखल-सुनल इलाजो आ रोगो तँ ऐछे तँए केकरो-मुहेँ सुनलासँ अपनापर अबिसवास करी, सेहो नीक नइ बुझि पड़ल।

..बजलौं- “दादी, बंगलोरमे रहै छी, एकटा संगीक चिट्ठी पहुँचाएब अछि।”

ओना हमर बात सुनि दादी ठमैक गेली मुदा सोलहन्नी पाछू नइ हटि बजली- “बाउ, चारू-कातक देवघारा सभमे जे ओझहा सभ भाउ खेलाइ छैथ ओ सभ कहै छथिन जे सरलाही गामक लोक धरम-करम नइ करैए तँए गामकेँ भुजि कऽ खेबइ।”

ओना, दादीक बात सुनि हँसियो लगए मुदा अपनासँ उमेरदारक ओही बातपर ने खुलि कऽ हँसी जे हँसबै-जोकर होइ। मुदा दादी तँ गम्भीर मुद्रामे कहि रहली अछि, तखन हँसब नीक केना हएत...।

अपनाकेँ सम्हारैत बजलौं- “चिट्ठी पहुँचाएब जरूरी अछि, तँए गाम तक तँ पहुँचबे अछि। ओना, जँ कियो रस्तामे भेटता तँ हुनको चिट्ठी थमा

देबैन।”

कहि आगू बढ़लौं। सरलाही गामक सीमा टपि गेलौं मुदा ने गामक कियो आन गाम दिस जा रहल छला आ ने आन गामक गाम दिस। ईहो नइ बुझि पेलौं जे गामक सीमान केतए छइ। बढ़ैत गेलौं, बढ़ैत गेलौं। एक टोलक पछाइत दोसर टोलमे प्रवेश केलौं। संजोग नीक रहल, रस्तेपर रामचन्द्रक माए भेट गेली। हुनके पुछलयैन-

“रामचन्द्र ऐठाम जाएब।”

रामचन्द्रक माए बजली-

“केहेन काज अछि, हमहीं माए छिऐ।”

चिट्ठी आ रुपैआक चर्च करैत बजलौं-

“दरबज्जापर चलू, दस हजार रुपैयो अछि आ चिट्ठियो अछि।”

रामचन्द्रक माए बजली-

“एतै दऽ दिअ। गाममे माता पसरल छैथ, तँए चाहो-पानक आग्रहो नहियेँ करब।”

की बजितौं, रुपैयो आ चिट्ठियो दऽ देलिऐन आ दुनू हाथे प्रणाम करैत विदा भेलौं।



शब्द संख्या : 2405, तिथि : 6 सितम्बर 2016

बत्तीसोअना

शिवरातिक दिन। एकटा यात्री शीशीमे गाइक घी नेने कुशेश्वर स्थान जाइ छला। जइ गाइक घी छेलैन ओही गाइक कबुला केने छला जे 'जँ सुहरदेसँ गाए बिआएत तँ घी चढ़ाएब।' ओना गाए बीएला पछाइत पचीस ग्राम घी, शुरूहेमे बना शीशीमे रखि नेने छला, मुदा तेकरा तीन सालसँ ऊपर भऽ गेल। ताबे गाए दोसरो बीआन बिआएल।

ओना यात्री पढ़ल-लिखल सेहो छैथे। गामसँ कुशेश्वर धामक रस्तामे कमला आ कोसी दुनू धार पड़ै छैन। जइमे पुल नइ छै, नाहेपर लोक पार होइए। कोसी धार बेसी पेटगर अछि। ओना पेटगर कमलो अछि, मुदा कोसीसँ कम अछि। धारक पानिक वेग दुनूक एकरंगाहे अछि, माने वागमती जकाँ असथिर गतिए नहि चलैए ओइसँ बेसी तेज गतिए चलैए। ओना सभ धार गंगे दिसक रस्ता पकड़ने अछि, जे एक-दोसरसँ सटैत-सटैत पहुँचबो करिते अछि।

नाहपर दुइए गोरे छला, एकटा ओ पढ़ल-लिखल यात्री आ दोसर नाह खेबैत मलाह। उत्तरे-दच्छिने धार तँए पुबरिया भित्ता आ पछबरिया भित्ताक बीच नाह चलैत। पुरबरिया घाटपर ओ यात्री चढ़ला। ओना धार तँ धारे छी मुदा सन्मुख धारा पछबरिया भित्ता पकैड़ नेने अछि, तँए आधासँ बेसी पुबरिया भागक धारक पानिक वेग सन्मुखसँ कनी कम गतिए चलिते अछि। नाहपर बैसते यात्रीक मनमे खुशी भऽ गेलैन। हेबो केना ने करितैन। निच्चाँ पानि आ ऊपर पुर्बाक हल्फी तैपरसँ अधडरेड़ मास फागुनक सुहावन रंग चढ़ले छइ। ओना सरस्वती पूजाक हिसाबे

पचीस दिनक वसन्त सेहो भऽ गेल मुदा चैत-बैशाखक हिसाबे अखन वसन्तक जन्मो ने भेल छल। जे हौ.., धारक बीच नाह परक जे भिनसुरका मौसम अछि ओ तँ वसन्तोसँ वहार अछिए। जखन वसन्तक वसन्ती-हवासँ गाछो-बिरीछ कलशाए लगैत, फुलाए लगैत तखन तँ मनुक्ख-मनुखे छी किने। ऐगला मांगिपर पल्था मारि बैसल यात्री मलाहकेँ कहलखिन-

“भैया, तूँ फिजियोलोजी जनै छह?”

कानसँ तँ मलाह सुनलक मुदा उच्चारण मनमे उचरबे ने केलइ, जे कहितै फिजियोलोजीक विषय की छी? तँए वेचारा मलाह सुहरदे-मुहेँ बाजल-

“नइ।”

‘नइ’ सुनिते यात्रीक मन चढ़ल। चढ़बो केना ने करैत यएह ने छी जीत। जे जनैत अछि ओकर जीत भेल आ जे नइ जनैत अछि ओकर हारि भेल।

..चढ़ल मने यात्री बजला-

“तखन तँ तोहर पचीस प्रतिशत, माने चारिअना बुझहक कि चौथाइ, जिनगी पानिमे चलि गेलह!”

पचीस प्रतिशत तँ मलाह नइ बुझलक मुदा पानिमे चलि गेलइ, से तँ बुझबे केलक। मनमे एलै, जखन बारह बर्खक रही, बाप मरि गेल, तहियेसँ अही धारक पानिमे गुजरो करै छी आ दिवसो गमबै छी, तखन की भेल। मुदा प्रश्नक जवाब तँ देबेक अछि। बाजल-

“हँ से सएह।”

मलाहक जवाबमे यात्रीकेँ रस भेटलैन। रसाइत मने बजला-

“अच्छा, फिजियोलोजी नइ बुझल छह तँ कोनो बात नहि,

साइकोलोजी जनै छह?"

मलाह बाजल- "नइ।"

कोनो कि कोर्ट-कहचरी छिऐ जे बहसा-बहसी हएत, ऐठाम तँ एकटा पढ़ल-लिखल यात्री आ दोसर नाहक खेबैया- मलाह अछि...।

अपन निर्णए सुनबैत यात्री बजला-

"पचास प्रतिशत जिनगी भैया तोहर ओहिना चलि गेलह।"

मलाह बाजल किछु ने मुदा मुस्की मारलक।

यात्री फेर बजला-

"अच्छा भाय, जँ साइकोलोजी आकि फिजियोलोजी नइ जनै छह तँ कोनो बात नहि, बायोलोजी पढ़ल छह?"

मलाह मुहसँ किछु ने बाजल, खाली मुड़ी डोला देलक जे नइ। मुड़ी डोलबैक कारण भेलै जे कातसँ नाह सन्मुख धारामे पहुँचैपर भऽ गेल तँए नाहकेँ सिरा चढ़बैक रहइ।

यात्री बजला-

"पचहत्तैर प्रतिशत जिनगी तोहर बेकार भऽ गेलह!"

यात्रीक बात मलाह किए सुनत ओ तँ अपन आँखि-कान सिरा चढ़ैत नाहपर लगौने रहए। यात्रीकेँ चेतबैत मलाह बाजल-

"भाय, तैयार भऽ जाउ। हेलए अबैए?"

यात्री बजला-

"नइ।"

यात्रीक उत्तर सुनि मलाह आगू किछु नइ पुछि अखन धरि जे लग्गासँ खेबैत आएल छल ओकरा रखि मांगिक मथनीमे जे करूआरि बान्हि रखने छल, ओ दुनू हाथे दुनू करूआरिकेँ सिरा चढ़ैक सह दैत रहए। ओना नाह अखन बीचो-बीच, माने सन्मुखक तेज धारा आ

मरियाक मन्द धाराक सिरा चढ़ि रहल छल। हिया-हिया मलाह अपन आरा देखि रहल छल जे कोन ठामसँ कटौलापर नाह घाट पकड़त। मुदा घाटो पकड़ब की असान अछि। ओ तँ खाली नाहे सम्हारला-टासँ नइ होइ छइ। मौसमक रूखि सेहो देखए पड़ै छइ। ओना जँ हवा शान्त रहल, धारक धाराक गति मद्धिम रहल, तखन नाह पार करैमे जे अनुकूलता रहै छै ओ हवाक गति तेज रहने वा धारेक गति तेज रहने नाहकेँ पार करब तँ उकड़ू भाइए जाइ छइ।

..हलाँकि ओहो उकड़ू कि कोनो एके रंग होइए, अनेको रंगक उकड़ू अछि। जँ केतौ हवा तेजे रहल आ धाराक गति धीमी रहल तँ ओ एक तरहक भेल, तहिना जँ केतौ धाराक धार तेजे अछि आ हवा अनुकूल अछि तँ ओइमे अनुकूलता बेसी आबि जाइ छइ, आ नहि जँ सोलहन्नी दुनू अनुकूल रहल तँ आरो बेसी अनुकूलता आबि जाइ छइ। तहिना जँ विधाताक बाम जकाँ दुनू प्रतिकूल रहल तखन कट-कट-विकट स्थिति बनि जाइ छै, जैठाम पार हएब कठिन होइ छै मुदा असम्भव नहि, सम्भवो छइ।

जहिना धारक सन्मुख धारा उग्र तहिना हवो उग्र रूपमे लपटए लगल। मलाह बुझि गेल जे आब नाह डुमबे करत। यात्रीकेँ मलाह चेतबैत बाजल-

“भाय साहैब, नाह डुबि जाएत। हम कुदै छी।”

जहिना छनमे छनाक कोनो घटना कए दइए तहिना यात्रीक मनमे भेलैन।

..भयातुर होइत यात्री बजला-

“भाय हमरो जान बँचाबह। हमरा हेलए नइ अबैए।”

ओना, नाह अखन डोले-पत्ता कऽ रहल अछि, एको घोंट पानि नइ पीलक अछि। अपना जनैत मलाहक मन अखनो नइ थरथराएल छेलै

मुदा ईहो तँ बुझले छै जे अनाड़ी यात्री जेते धारक धाराक करनी आ हवाक करनीसँ नइ डुमैए तइसँ बेसी अपना करनीसँ डुमैए। माने अनाड़ी यात्री तेते नाहकेँ डोलाएत जे एकभग्गू काइए देत।

..मुदा एहनो तँ यात्री छैथे जे नाहक मर्म, हवाक मर्म आ धाराक मर्मकेँ जनै छैथ...।

मलाह बाजल-

“भाय साहैब, जिनगीक धार उकड़ू-सुकड़ू दुनू चलैए। हम तँ बारहेअना डुमब, मुदा अहाँ बत्तीसोअना डुमब किए तँ अहाँकेँ पढ़ैओमे बहुत खर्च भेल अछि।”



शब्द संख्या : 890, तिथि : 8 सितम्बर 2016

कचहरिया रोग

तीस सालक उपरान्त कचहरी गेल छेलौं। सेहो कोनो काजे नहि, घुमैले। कहब जे लोक घुमैले शहर-बाजार-देश-कोस जाइए आ अहाँ कचहरीए गेलौं। कचहरीक माने जिला कार्यालय, जैठाम जिला न्यायालयसँ लऽ कऽ जिला कार्यालय तक अछि। ओना, अपन कोनो काज नइ रहए मुदा भातीज हालेमे मोटर साइकिल किनलक ओकरे ड्राइवरियो लाइसेंस आ गाड़ियोक लाइसेंस बनेबाक छेलै, वएह पुरान कचहरिया बुझि कहलक-

"काका, कनी चलू कोर्टसँ टहैल अबै छी।"

भाय! ऐठाम भ्रम नइ हुअए। कोर्ट टहलबक माने होइ छै बुड़िबककेँ फुसियाएब। सत बात ई छेलै जे कौलेजक शिक्षा ग्रहण केलाक पछाइत साल भरि पहिने श्रीकान्त नोकरी शुरू केलक। हमरे बात मानि बिआहमे गाड़ी नइ मंगलक। कहने रहिऐ-

"बौआ, केकरो देलासँ लोक केते दिन जीत, जीबैले अप्पन आशा रखी।"

एक तँ कौलेजसँ आनर्स डिग्री पौने श्रीकान्त अछि तैपर पहाड़ी धारक घाटक हरियर कंचन पानि जकाँ मनो रहबे करइ, मानि लेलक बात। चुपे-चाप मानियोँ लेलक आ मनोमे रोपि लेलक जे 'जे अपना कमाइये नइ हएत ओ केकर दिनक किदैन चटने हएत।' अपन कमाइक (माने दरमाहाक एक अंश, माने काजक निर्धारित लक्ष्यक अनुकूल)

शुरूहे माससँ रखैत गेल जे साल लगलापर पुरि गेलइ। ओही कमाइक मोटर साइकिल किनने छल।

जहिना नव कमाइक फल, तहिना जिनगीक नव ड्राइवर श्रीकान्त, तेकरा केना कहितिऐ जे 'बौआ, तोरा संगे नइ जाएब।' ओना, मनमे अपन तीस बर्ख पूर्वक स्मृति सेहो नाचि रहल छल। तँए कचहरी टहलबो नीक बुझि पड़ल। स्मृति छल गामक आन्दोलनी गौरीकान्त बहरवैया केना भऽ गेल।

एके गाम नहि मिथिलांचलक अनेको गाममे आ खाली मिथिलांचलेक गाम नहि, राज्यो आ देशोमे 1947 ईस्वीक स्वतंत्रता आन्दोलनक पहिनहिसँ गाम-गामक धरतीक प्रश्न उठि गेल छल। माने जमीनक विवाद शुरू भेल। जे विवाद धरतियोपर उतरल। उतैरते सभ गाममे विवाद शुरू भेल, हमरो गाममे जमीनक शुरू भेल।

एक तँ नव स्वतंत्र देशक खुमार जन-जनमे नाचिए रहल छल। नाचि रहल छल ओ विचार जे जाबे अपन गामक उद्धार अपने नइ करब ताबे सामूहिक रूपमे देशक विकास नइ हएत। खेतपर जीनिहार जन-गण, कियो खेतबला, कियो बिनु खेतबला छैथे, जिनकर जीविकाक साधन मात्र खेतिये छैन। जमीनक हकक सम्बन्धमे अनेको कानून बनल, जइसँ जमीनक विवाद शुरू भेल। ओना, बकास्त जमीनक विवादो आ निपटानो स्वतंत्रेक समयमे माने 1947 ईस्वीसँ पूर्वे भऽ गेल छल, जइसँ केतेको गोरेकेँ जमीन हाथ लगलैन।

अनुकूल माहौल रहने तीस-पैंतीसटा नवयुवक संगठित भेलौं। संगठितक संग संकल्पित भेलौं जे बाहरक जे जमीनबला गाममे छैथ, हुनका अपनो गाममे जमीन छैन्हे। तँए अपन-अपन गामक उत्थान करू। ओना सोझगर विचार रहितो तीन साए बीघा जमीनक विवाद गाममे फँसि गेल। हँसेरा-हँसेरी हुअ लगल। मुदा जहिना नवयुवक संकल्पित

भऽ जगला, तहिना जगले रहि गेला। खेतक दखल-दिहानी जनबल करबैए, मुदा जमीनक तँ मूल सबूत कागत माने दस्तावेज खतियान मानल जाइए, तँए कोर्ट-कचहरीक झमेल ठाढ़ भऽ गेल। तीस बर्ख तक वियतनामे जकाँ गामोमे हँसेरा-हँसेरी होइते रहि गेल।

मुदा जे भेल से भेल, अन्तो-अन्त बहरवैयाक जमीन गौंआँक हाथमे आबिए गेल। ओना बेठेकान चलने गामोमे जँ एक दिस चकचकी देखै छी तँ दोसर दिस भकभकी सेहो अछिए। खाएर.., जे अछि से अछि।

साढ़े नअ बजे कचहरी पहुँचल रही। मेला जकाँ कचहरीमे लोक। ओना कचहरियो नमहर अछि न्यायालयसँ लऽ कऽ एस.पी. कार्यालय आ समाहर्ता कार्यालयक संग आनो-आन केतेको कार्यालय अछिए।

गौरीकान्त मुंशीगीरी करैए। गौरीकान्त बच्चेसँ संगी रहि चुकल अछि। ओना दुनू गोरे संगे पढ़ै छेलौं मुदा ओ मैट्रिकमे फेल भऽ गेल जे दोहरा कऽ ने परीक्षा देलक आ ने पास केलक आ ने आगू पढ़लक।

मजिस्ट्रेटक ऑफिस कोठरीमे अछि, जइमे केसक सुनवाइ होइए आ ओसारपर गौरीकान्तक बैसार अछि। एकटा छोटे-छीन बक्सा रखने अछि, जइसँ दुनू काज लइए। टेबुल जकाँ ओइपर लिखबो करैए आ कागत-पतर सेहो रखैए।

हमरा पहुँचैसँ पहिनहि गौरीकान्त पहुँच गेल छल। बारह-चौदह गोरे काज करबैले सेहो बैसल छला। मोथीक चरिहत्थी बिछानपर बैसल गौरीकान्त, हमरा देखिते बाजल-

“भाय साहैब, अहूँकेँ कचहरी बिसरल नइ जाइए!”

काज करौनिहार मोकिर सभ हमरे दिस ताकए लगला। ओसारक बगलेमे श्रीकान्त गाड़ी लगौलक। ओना मने-मन गौरीकान्तपर तामस उठल रहैए। तामस ई उठल रहैए जे जखन गाममे सभ मिलि जमीनक

आन्दोलन केलौं, गौंआँक हाथमे बहरवैयाक जमीन आएल, तखन तँ गामक आमदनीक एकटा स्रोत भेटल किने। जहिना तीसो नवयुवक गामक उत्थानक लेल प्रतिज्ञा केलौं तहिना ने ओकरा निमाहबो अछि। जेना- खेते अछि, ओकरा ताम-कोर नइ करबै, ओकरा उपजेबै नइ तखन ओकर महत्ते की भेल। जहिना उपजाउ भूमि धनक बखारी छी तहिना बिनु उपजेने तँ माटिए छी किने? मुदा तामसकेँ मनेमे पचबैत बजलौं-

“अँए हौ गौरी, सरकारक कचहरी छी किने, सबहक सझिया छी, तखन बिसरब नीक हएत?”

कहैत ओसारपर चढ़लौं। जीवनी पनखौक जकाँ पनबट्टीमे पान गौरीकान्त रखने रहए। ओसारपर पहुँचते अपना बगलेमे एक आदमीकेँ कनी घुसका जगह बनबैत बाँहि पकैड़ बैसौलक। बैसते पनबट्टी आगूमे दऽ देलक। ओकरो बुझले छइ। पान मुँहमे लइते बजलौं-

“गौरी, एकटा काजे आएल छह?”

ओना गौरीकान्त श्रीकान्तकेँ सेहो चिन्हते अछि। हमरापर सँ नजैर हटा गौरीकान्त श्रीकान्तकेँ पुछलक-

“बौआ, केहेन काज अछि?”

गाड़ी देखबैत श्रीकान्त बाजल-

“एकरे लाइसैंसे कराएब अछि आ अपनो ड्राइवरी लाइसेंस बनाएब अछि।”

गौरीकान्त-

“एक दिनमे काज नइ हएत। आठ-दस दिनक पछाइत दुनू काज हएत। ऐगला शनिकेँ जे गाम आएब ते तोहर दुनू कागत नेने एबह।”

सुढ़ियाइत काज देखि गौरीकान्तकेँ पुछलिऐ-

“अखन गाड़ी-सवारीक बड़ कड़ाइ भऽ गेल छै तइ बीचमे ने तँ

कोनो गड़बड़ हएत?”

गौरीकान्त बाजल- “पहिल जे काज अछि आवेदन देब, ओ तँ आइए कऽ लेब। काजत एडमिट आइए भऽ जाएत। जखने काजत एडमिट भऽ गेल तखनेसँ अहाँकेँ अधिकार भेट गेल। तँए कोनो तरहक बाधा बीचमे उपस्थित नइ हएत।”

श्रीकान्त- “केना की करए पड़तै?”

गौरीकान्त बाजल-

“किछु ने करए पड़तै। निचेनसँ बैसह, टिफीनक समयमे तोहर काज हएत। अखन कनी कोर्ट सभमे हाजरी लगबैक अछि तँए पहिने ओ सम्हारि लइ छी।”

कहि गौरीकान्त मोकिर सबहक संग उठि कऽ विदा होइत बाजल-

“बौआ श्रीकान्त, तूँ अनाड़ी छह, भाय साहैबकेँ एतै रहए दियौन, अराम करता आ तूँ हमरा संगे चलह। ”

असगरे रहि गेलौं। ओछाइन देखि मन हुअए जे ओंघरा जाइ, मुदा लोकक तेते आबा-जाही रहै जे धाँगिए दइत तँए देवालमे ओङैठ गेलौं। कोर्ट सभ शुरू भेल। कोनोमे जमानत तँ कोनोमे गवाही गुजरए लगल।

बगलेक कार्टमे (माने प्रथम श्रेणीक मजिस्ट्रेट ऑफिसमे) गुन-गुनी शुरू भेल। गुन-गुनी बढ़िते गेल। धीरे-धीरे हल्ला हुअ लगल-

“जे आदमी ट्रेनपर सँ कुदि पुलिसक हाथसँ पड़ा गेल छल, ओ तीन मासक पछाइत फेर पकड़ा गेल, ओकरे पेशी छिऐ।”

कोनो अरथे ने लगल। ट्रेनसँ कुदि कऽ पड़ा गेल। देखिते छी जे पौकेटमारो पाँकैट मारि ट्रेनसँ कुदि जाइए। मने-मन गुनधुन करिते रही कि गौरी कान्त सेहो पहुँचल। पुछलिऐ-

“गौरी, एना चहल-पहल किए भऽ रहल छइ?”

तैबीच ईहो देखिऐ जे आरो लोक सभ आबि रहल अछि। जइ ओसारपर बैसल रही, ओही कोर्टमे पेशी रहइ।

लोकक आवाही भीड़ देखि गौरीकान्त बाजल- "भाय साहैब, ऐठाम बैसब कठिन भऽ गेल। देखै छिऐ सभ एम्हरे अबैए।"

हमहूँ उठि गेलौं, गौरीकान्तो ओछाइन समेट देवाल लगा ठाढ़ कऽ देलक आ बक्साकेँ देवालसँ सटा कऽ रखि अपनो ठाढ़ भऽ गेल।

पुछलिऐ-

"केहेन ओ आदमी अछि जे ओकरा देखैक एते जिज्ञासा लोककेँ छइ?"

गौरीकान्तकेँ जेना रटले पाठ रहै तहिना सुनबैत बाजल-

"भाय साहैब, बम्बैया हीरो छी।"

एक तँ ओहिना मनमे ओझरी लगल छल जे ट्रेनसँ केना कुदलै, तैपर सँ बम्बैया हीरो कहि गौरीकान्त आरो ओझरा देलक।

पुछलिऐ-

"की बम्बैया हीरो, गौरी?"

गौरीकान्त बाजल- "एक्सप्रेस ट्रेनक छतपर बैसा जयनगरसँ दूटा सिपाही पकैड़ कऽ नेने अबैत रहै, जखन खजौली सिके आएल कि छतेपर सँ कुदि कऽ पड़ा गेल।"

गौरीक बात सुनि मनमे ठहकल, एक तँ रेलबे बगलमे ओहिना रोड़ी-पाथर छिड़ियाएल रहैए तैपर चलैत ट्रेनमे एते ऊपरसँ कुदि कऽ पड़ा गेल, ई तँ बलिहारी भेबे केलइ।

ओना, ऑफिसोक सभ स्टाफकेँ जिज्ञासा रहैन जे पहिल दिन एहेन पेशी हएत। अपनो जिज्ञासा भेल जे ओकर कनी चेहराक लम्बाइ-चौड़ाइ देखिऐ। मुदा मेला जकाँ लोक। एक दिस सिपाही सभ रस्ता बनबैत

दोसर दिस लोक भरि जाइत।

चारिटा सिपाही आगू-पाछू भेल बीचमे ओइ ओदमीकेँ नेने कोर्टक गेटपर पहुँचल। एक तँ लोक अढ़ केने, तैपर चारू सिपाहीक बीच तेना झँपाएल रहै जे देखबे ने केरिऐ। मुदा गर लगल, ओसारक खिड़की देने कठघरामे देखलिऐ। चेहरा देखि क्षुब्ध भऽ गेलौं जे एते साहस नान्हिटा छौड़ामे केना आबि गेल। मजिष्टेट साहैब सेहो एक नजैर ओकरा चेहरापर देथिन तँ दोसर नजैर अपन आगूमे राखल कागतपर। ई ताँइए ने कऽ पाबि रहल छला जे जे अपन जानक बाजी अपराधी जिनगीमे लगा रहल अछि ओ जँ अपन जिनगीक कर्म-धर्ममे लगबैत तँ ओ केहेन कर्मनिष्ट बनि सकै छल। मुदा..!

अपन विचारकेँ मने-मन घोंटैत मजिस्ट्रेट साहैब आँखिक इशारासँ बाहर जेबाक आदेश देलखिन।

चारू सिपाही गेटपर आबि हथकड़ीक संग डाँड़मे रस्सा लगा जेल दिस विदा भेल। टिपीन भेल। आग्रह करैत गौरीकान्त बाजल-

“भाय साहैब, कोर्ट-कचहरी छिऐ ऐठाम कि चाहो-पान करैक छुट्टी होइए। अपने पनबट्टी रखने छी तँए पानक तुक मेटबै छी। चलू कनी घुमियोँ-फिर लेब आ चाहो-पान कऽ लेब।”

सएह केलौं। चाह-पान करैत परिवहन कार्यालय पहुँचलौं। हुण्डे सभ गप भऽ गेल। आठ दिनमे दुनू काज भऽ जाएत।

परिवहन कार्यालयसँ निकैल श्रीकान्तकेँ कहलिऐ-

“बौआ, पाइ-कौड़ीक लेन-देन छी, अहीले दुनियाँमे एते दुसमनी छै, तँए तीनू गोरेक बीच सभ किछु झाड़ि-ओसा कऽ फरिछा लएह। सभ अपने छी तँए पछाइत कोनो बिहंगरा ने हुअ।”

बिच्चेमे गौरीकान्त लोकि लेलक। बाजल- “ऐ सबहक शंका मनमे अनेरे करै छी।”

तीनू गोरे आबि गौरीकान्तक बैसकीपर बैसलौं। तीनियेँ गोरे रही। कोर्टोक काज जेना ठंढा गेल रहए। एक तँ पहिनहिसँ ठंढाएल अछि जे एगारहटा कोर्टमे आठटा खालिए अछि। गौरीकान्त बाजल- "भाय साहैब, आइ रहि जाउ। अपन घरो-दुआर देखि लेब आ भरि मन गपो-सप्प करब।"

ओना गौरीकान्त तीस बर्ख धरि संगे-संग गामक लड़ाइमे रहल। संगेटा नइ रहल कोर्ट-कचहरीक काज करैत-करैत एते सीखियो लेलक जे मुंशीगीरीसँ अपन गुजर नीक जकाँ कैयो रहल अछि। मुदा लगले मन तुरैछ गेल, तुरैछ ई गेल जे जहिना स्वतंत्र देश भेने देशक बेवस्था देशवासीक हाथ आएल तहिना ने गामोक बेवस्था गौंआँक हाथ आएल। ओ बेवस्था केना समाजक बीच संचालित हुअए, ई तँ समाजे ने करता। नव स्वतंत्र देश जे हजारो बर्खक विदेशी शासकसँ मुक्त भेल, ओ केना आगू-मुहेँ चलत, ई तँ समाजेक लोक ने जीवन-मरणक बीच करता। तहूमे ओहन लोक जिनकर मन समाजक संग चलए चाहैए। सोभाविको अछि जे समाजक उन्नैत भेने, सबहक उन्नैत होइते अछि। मुदा आइ तँ अपने जिनगीक ओइ पड़ावपर पहुँच गेल छी जेतए केते गोरे मरियो गेला आ केते गामो छोड़ि कऽ चलि गेला।

ओना तीन बजैत-बजैत काज भऽ गेल छल मुदा दुपहरियेक रौद जकाँ रौद देखि किछु काल रूकिए जाएब नीक बुझलौं। नीको केना ने बुझितौं, भेल तँ एक घन्टाक रस्ता गामक अछि तइले अनेरे तीन बजेक रौदमे पाकब नीक नहि।



शब्द संख्या : 1650, तिथि : 12 सितम्बर 2016

दिन घटि गेल

जगरनाथपुरी-जयनगर एक्सप्रेससँ चारि बजेमे सकरी उतरलौं। चालीस-पचास गोरेक कफला छल। ओना हमर गाम छोटे सन अछि जे रामपुर पंचायतमे पड़ैए। डेढ़-दू साए परिवारक गाम अछि जइमे सात-आठ जाति वास करै छी। सातो-आठो जातिक लोक जगरनाथ गेल छेलौं। सकरीमे गाड़ीसँ उतैरते मनमे उठल जे अखन धरि तँ यएह चलैन रहल अछि जे जगरनाथसँ घुमि एला पछाइत समाजमे भोजो आ सत्यनारायण भगवानक पूजो करए पड़ै छइ। जाधैर से नइ केने रहल ताधैर अछूत मानल जाइए। पूजो आ भोजो केलाक पछाइत पूर्बवत रूपमे अबैए।

चालिसो-पचासो गोरे सकरीक बड़ी लाइनक एक नम्बर प्लेटफार्मपर उतैर गाम दिसक गाड़ीक भाँज लगबए लगलौं। सकरी-निरमलीक बीच छोटी लाइनक गाड़ी अछि। स्टेशनक पूछ-ताछ ऑफिससँ भाँज लगल जे तीन नम्बर प्लेटफार्ममे निरमलीक गाड़ी लागल अछि।

एक नम्बर प्लेटफार्मसँ पुल टपि तीन नम्बर प्लेटफार्ममे सभ पहुँचलौं। गाड़ी खुजैमे आधा घन्टा देरी रहइ। सौंसे गाड़ी खालीए छल। प्लेटफार्मपर पहुँच पाछूसँ आगू धरि गाड़ीकेँ देखए लगलौं। मात्र तीन गोरे गाड़ीमे बैसल छला। तीनू गोरे तीन कोठरीमे छला। ऐगला कोठरी लग गेलौं कि नजैर रामखेलौन भायपर पड़ल। ओहो असगरे बैसल बाहरे दिस

तकैत रहैथ। हुनको नजैर पड़लैन।

नजैर पड़िते रामखेलौन भाय बजला-

“आबह, आबह, अही कोठरीमे आबह। सौंसे खालीए छइ। भने दुनू भाँइ हब-गब करैत रस्ता काटि लेब।”

अपन झोरा खिड़की देने बढ़बैत कहलयैन-

“ताबे झोरा सीटपर रखि दियौ। एकबेर टहैल कऽ देखि लइ छी जे कियो निच्चाँमे ने तँ रहला।”

रामखेलौन भाय झोरा सीटपर रखि देलैन आ अपने पाछू-मुहेँ टहैल-टहैल देखए लगलौं। खाली गाड़ी, सभ कियो चढ़ि गेला छला।

सौंसे गाड़ी टहैल कऽ देखि लेला पछाइत मनमे सवुर भेल जे जहिना सभ हरे-हरे कऽ जगरनाथ विदा भेलौं तहिना सभ आपस सेहो आबि गेलौं। मुदा एते तँ भाइए गेल जे जगरनाथ जाइसँ पहिने आ एला पछाइतमे नजरियो आ विचारोमे किछु ने किछु उन्नैत तँ भेबे केलैन अछि। अपन गाड़ी, माने अपन गाम पहुँचै आ गामसँ बाहर जाइक गाड़ीमे बैसते मनमे विचार तँ बसिये गेलैन जे हँसी-खुशीसँ जहिना यात्रापर निकलल छेलौं तहिना हँसी-खुशीसँ गाम पहुँचियो गेलौं। तँए किनको मनमे ई नइ होइत रहैन जे पनरह दिनक थकानसँ देहमे कोनो दर्द-पीड़ा अछि। जेना सभ किछु मेटा गेल होइन।

पहिल सीटी गाड़ी दऽ देलक। ओना, प्लेटफार्म खलियाएले रहै मुदा पान-पराग, शिखर, लबनचुस, चीनियाँ बदामबला सभ एक-दोसर डिब्बामे चढ़ए-उतरए लगल। हमहूँ आगू-मुहेँ ससैर ऐगला कोठली लग पहुँचलौं। रामखेलौन भाय कहलैन-

“आब ऊपरे चलि आबह।”

अपना मनमे होइत रहए जे कियो निच्चाँमे ने तँ छुटल छैथ। मुदा से नहि, सभ चढ़ि चुकल छला।

दोसर सीटी दैते डिब्बामे चढ़ि रामखेलौन भाय लग जा बैसलौं। ओना, किछु गोरे ओहूमे चढ़ि गेल छला, मुदा ओ सभ दोसर भागक ब्रेंचपर छला। बैसते रामखेलौन भायकेँ कहलयैन-

"भाय, एकबेर पान खा लइतौं।"

रामखेलौन भाय बजला-

"आब, पान-तानक झमेल छोड़ह। तमाकुल संगेमे अछि।"

कहि रामखेलौन भाय जेबीसँ चुनौटी निकालि हाथमे थमा देलैन। हाथमे तमाकुलक चुनौटी अबिते मन जेना फुला गेल। बजलौं-

"भाय, सकरीकट छी आकि..?"

रामखेलौन भाय बजला-

"नइ, समस्तीपुरबला बड़की छी।"

तमाकुल चुनबए लगलौं। दुनू भाँइ तमाकुल खा पहिल थूक फेक गप-सप्प शुरू केलौं।

कहलयैन-

"भाय, गाम-घरक हाल-चाल की अछि?"

ओना 'हाल-चाल' सुनि रामखेलौन भाय कनी ठमकला। मुदा जेना तैराशिक गणित होइए, माने एकटा गुणा, एकटा भाग केने उत्तर आबि जाइए तहिना हिसाब बैसबैत रामखेलौन भाय बजला-

"बड़बढ़ियाँ।"

ओना, रामखेलौन भाय समाजक एकटा प्रवुद्ध बेकती छैथ, तँए हुनक सोचै-विचारैक अपन नजैर छैन। गामक बीच अनेको समाज अछि। किसानक अपन समाज अछि जे माटि-पानिसँ लऽ कऽ अन-पानि उपजबै तकक अछि। तहिना ठको-फुसियाहक अछि। तहिना पढ़ल-लिखलक सेहो अछि। अनेको तरहक समाज, समाजक बीच अछि।

सबहक अपन-अपन हानि-लाभक जिनगी छइ। ..जैठाम अनेको रंगक जिनगी रहत तैठाम एक रंगक समाचारो केना हएत।

ओना रामखेलौन भाय 'बड़बढ़ियाँ' बजला, मुदा अपने हुनकर 'बड़बढ़ियाँ' नइ बुझि पेलौं। दोहरबैत बजलौं-

"हमरो गाम दिस गेल छेलौं?"

रामखेलौन भाय बजला-

"परसुए 'मोहनपुर' गेल छेलौं आ काल्हि फेर अबै छी।"

परसुका नाओं सुनि मनमे भेल जे अपनो गामक हाल-चालक भाँज लगि जाएत। मन असथिर भेल। गाड़ीमे बैसले छी, घन्टा भरि दुनू भाँइ संगे रहब। कहलयैन-

"हँ, हँ, सबेर-सकाल आएब। बहुत दिनक गपो-सप्प पछुआएल अछि।"

ओना हाल-चाल पुछैक कारण अभ्यन्तरमे ई छल जे चालीस-पचास परिवारक लोक एक संगे जगरनाथ गेल छेलौं। गाममे अखन तकक जे बेवहार अछि जे बिना जगरनथिया भोज आ सत्यनारायण भगवानक पूजा केने, अपनो परिवारक लोक अछूत बुझि खेबा-पीबासँ परहेज करैए। मुदा जैठाम गामक पाँच-दस परसेन्ट–माने दू-चारिअना–लोक जाइ छला तैठाम ने एहेन सबाल उठै छल। मुदा से तँ नइ भेल अछि। सभ टोलक सभ जातिक लोक छैथ, जएह गामक समाज भेला सएह सभ ने छैथ, तखन छूत-अछुतक प्रश्न केतए अछि..? मने-मन विचारिते रही कि रामखेलौन भाय बिच्चेमे पुछलैन-

"केहेन यात्रा रहलह, रामसुनर?"

जहिना रामखेलौन भाय पुछला तहिना लगले सूरे हमहूँ उत्तर देलिऐन- "बड़बढ़ियाँ।"

कहि तँ देलिऐन मुदा लगले मनमे उठल जे ई की जवाब देलिऐन? ई तँ किछु ने भेल! मुदा जेना हमर बात रामखेलौन भाय बुझि गेला तहिना बातकेँ खोधैत बजला-

“तीन राज्य–बिहार, बंगाल आ उड़ीसा भ्रमण केलह अछि, आ सोझे कहै छह ‘बड़बढ़ियाँ’?”

अपन विचारकेँ दबैत बजलौं-

“भाय, काल्हि तँ एबे करब। अखन थकलो छी आ बहुत बात अगुआइयो-पछुआइयो गेल अछि, जे निचेन भेलापर सेरिया जाएत। तखन सविस्तर सभ समाचार कहब।”

रामखेलौन भाय मानि गेला। विचार बदलैत बजला-

“पहिने जकाँ आब लोक जगरनाथ कहाँ जाइए।”

रामखेलौन भाइक जिज्ञासामे आरो सह दैत बजलौं-

“से की भाय?”

“पहिने देखै छेलिऐ जे गाम-गामक लोक जगरनाथ जाइ छला। जे सुभ्यस्तगर छला ओ गाड़ीसँ जाइ छला आ जे गरीब-गुरबा छला ओ जत्था बना, जगरनथिया बेंत नेने, गीत गबैत पएरे जाइ छला। जिनका अबै-जाइमे छह मास लगि जाइ छेलैन।”

ओना अपनो देखनहि छी मुदा रामखेलौन भाइक मनमे की बात छैन, से तँ वएह बुझै छैथ। ओ बिना खोद-वेद केने केना बुझब..।

रामखेलौन भाय, पिसियौत भाय छैथ। छह मासक जेठ सेहो छैथ। ओना दुनू भाँइक गामक दूरी तीनियेँ कोस अछि। खाली मिड्ल स्कूल तक दुनू भैयारीक पढ़ाइ एक स्कूलमे नइ भेल, मुदा हाइ-स्कूलसँ कौलेजक बी.ए.ऑनर्स तक, दुनू भाँइ संगे पढ़लौं। मिड्ल स्कूल तक फुट-फुट रहैक कारण छल, जे हुनको गामक बगलेमे–एक किलोमीटरपर–मिड्ल

स्कूल छैन, जइमे बच्चासँ लऽ कऽ मिड्ल तक पढ़ाइ होइ छै, आ अपनो सएह अछि। मुदा हाइ-स्कूल दुनू गामक बीचमे अछि, तँए दुनू भाँइ अठमेसँ संग भेलौं। ओना, पढ़ैयो-लिखैमे आ बजैयो-भुकैमे रामखेलौन भाय, सभ दिन बीस रहला। मुदा आन विद्यार्थी जकाँ रामखेलौन भाय, परीक्षा पास करै दुआरे–नीक रिजल्टक खातिर–कोनो विषय केकरोसँ चोरा-छिपा कऽ नइ रखै छला। एतेक छोट भाइक होइक नाते दुलार-पियार छेलैन्हे। कोनो-ने-कोनो विषयक चर्च करैत पुछिते छला आ अधखिज्जू समझकेँ पुरैबते छला। मिसियो भरि कहियो रामखेलौन भाइक मनमे नइ उठलैन जे रामसुनरक रिजल्ट हमरासँ नीक नइ हौउ। मुदा हम तँ अपने पढ़ै-लिखैमे कनी धिमर रही तँए हुनकर बराबरी कएल नइ हुअए। ओना जइ डिवीजनसँ रामखेलौन भाइ पास करै छला तहिना हमहूँ छेलौं। मुदा पचीस-पचास नम्बर कम तँ अबिते छल। कहलयैन-

“भाय, आब तँ ने ओ देवी रहली आ ने ओ कराह। आब तँ बुझि पड़ैए जे हमरे गामक लोकमे उखमज उठल आ हरे-हरे कऽ चालीस-पचास गोरे संगे जगरनाथ गेलौं।”

विचारकेँ मानैत रामखेलौन भाय बजला-

“हँ से तँ भाइए गेल अछि।”

विचारक सह पबैत बजलौं-

“भाय, बुझि पड़ैए जेना जगरनाथ लोक बिसैर गेल।”

‘बिसरब’ सुनि रामखेलौन भाइक मनमे जेना कोनो नव विचारक पन्ना उनटलैन तहिना बजला-

“समाजक परिवेश बदैल गेल। देशक चारि महास्थानमे जगरनाथोक स्थान अछि। तैसंग गाड़ी-सवारीक सुविधा सेहो बेसी भेल अछि, लोकक आर्थिक स्थिति सेहो नीक भेल अछि, तथापि लोकक आबा-जाही कमि रहल अछि।”

रामखेलौन भाय आगू की बाजए चाहै छला से तँ बजबे ने केलाह। तैबीच आन कोनो बात बाजब उचित नहि बुझि पुछलयैन-

“से किए एना भेल, भाय?”

प्रश्नक गम्भीरताकेँ रामखेलौन भाय अँकलैन। तँए गम्भीर होइत मने-मन विचार करए लगला। हम मुँह-पर-मुँह आ आँखि-पर-आँखि देने रहलौं जे रामखेलौन भाय आगू की बजै छैथ।

अपन आँखि उठा रामखेलौन भाय आँखिपर देलैन। हमरा आँखिमे ओ की देखलैन से तँ ओ जानैथ, मुदा हमरा बुझि पड़ल जे सौनक उमड़ैत-घुमड़ैत मेघ जकाँ बरिसैले आँखि टप-टप करै छैन। पहाड़ी नदीक पानि जहिना पहाड़पर सँ–माने ऊपरसँ–धड़धड़ाइत निच्चाँ उतरैए, मुदा समतल मैदानमे अबिते असथिर हुअ लगैए तहिना रामखेलौन भाय असथिर होइत बजला-

“बौआ, ओना तोहूँ कोनो बाल-बोध नहियेँ छह जे किछु कहि मनकेँ मना लेबह, तँए अपनो गौर करहक।”

रामखेलौन भाय की कहए चाहै छैथ आ की कहि देलैन, से बुझबे ने केलौं। मुदा जहिना माता-पिताक सिनेही सन्तान, भाए-भैयारीक सिनेही भाए एक दोसरसँ कोनो बात छिपा कऽ नहि राखए चाहै छैथ तहिना ने कहियो रामखेलौन भाय अपन विचार रखलैन आ ने हमहीं कोनो बात छिपा कऽ रखै छी। ओना, परिवारमे आचारक विचारसँ किछु छिपा कऽ राखल जाइए मुदा ओ चाहे तँ परिस्थितिवश रहल वा तेतेक साधारण रहल जेकर कोनो असैर परिवारपर नहि पड़ैत अछि। बजलौं-

“भाय, ओना अपनो कनी-मनी विचार करै छी, मुदा कोनो सत्य वस्तुए आकि सत्य बातेकेँ कनी-मनी खोदलासँ आकि कनी-कनी बुझला-विचारलासँ नहियेँ भाँजपर चढ़ैए तइले पोना पकैड़ जड़ि तक खोदए पड़ै छइ। बजलौं-

“भैया, जेना बुझि पड़ैए जे समैये बदैल रहल अछि।”

‘समय बदैल रहल अछि’ सुनि रामखेलौन भाय मने-मन विहुँसला। मुदा खुलि कऽ हँसला नहि। खुलि कऽ हँसबो उचित नहि बुझलैन। बाल-बोधक विचारपर हँसब जहिना केतौ नीक अछि, तहिना केतौ अधलो अछि। यएह सोचि रामखेलौन भाय हँसला नहि, मुदा विहुँसैत बजला-

“बौआ, आन बातकेँ अखन मनसँ हटा लएह। बैजनाथ-जगरनाथ दुइए धामक विचार करह।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“भैया, बरसपैत बाबा बेसी काल बजै छला जे भादवक पूर्णिमा दिन बैजनाथ बाबा बिदेश्वर धाम अबै छला, शिवराति दिन कुशेश्वर धाम अबै छला आ परात भने दच्छिन-मुहेँक रस्ता पकैड़ गंगा टपैत झारखण्ड पहुँच जाइ छला।”

हमर बात सुनि रामखेलौन भाय ठहाका तँ नहि मारलैन मुदा मनक खुशी मुहसँ जरूर निकललैन। बजला-

“बौआ, जहिना बैजनाथ बाबा झारखण्डक पहाड़पर वास करै छैथ, तहिना जगरनाथ बाबा सेहो समुद्रमे बसै छैथ।”

रामखेलौन भाइक बात नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं, मुदा पहाड़ आ समुद्रमे दुनूक वास छैन, ई तँ सुनबे केलौं। बजलौं-

“से की भाय?”

मुस्कियाइत रामखेलौन भाय पुछलैन-

“जखन जगरनाथ गेल छेलह, तखन कोर्णाकक सूर्य-मन्दिर आ कबीर दासक खन्तीक दर्शन केलह की नहि?”

ओना, कोर्णाकक सूर्य मन्दिर आ समुद्रक किनछैरमे गाड़ल ‘कबीर दासक खन्ती’ सुनल जरूर छल मुदा तेहेन कफलाक संगमे छेलौं जे बिसैर

गेलौं, तँए दर्शन नहि भेल।

कहलयैन-

“नइ!”

विचार बदलैत रामखेलौन भाय बजला-

“बौआ, लोकक विचारमे बहुत बदलाव आबि गेल अछि। विचारमे बदलाव भेने बहुत किछुमे बदलाव आबि जाइए।”

बजलौं-

“से की भाय?”

गम्भीर होइत रामखेलौन भाय बजला-

“पहिलुका विचारमे ई छल जे कोनो धाम लोक एक बेर जाइ छला, गोटे-गोटे ठाम दोहराइयो कऽ जाइ छला आ तेहराइयो कऽ जाइ छला–जेकरा तीरपेखैन कहै छला। मुदा तीन बेरक पछाइत नइ जाइ छला।”

गपक सहमे बजा गेल-

“से किए ने जाइ छला?”

“जहिना अपन देश तीर्थ स्थान, तीर्थ घाटसँ भरल अछि–माने नदी-सरोवरसँ–तहिना अपन राज्यक तँ नामे छी ‘बिहार’। बिहार माने भ्रमण करैबला स्थान। अनेको देवस्थान, अनेको धर्मस्थान, अनेको सरोवरक घाट आ अनेको नदीक तीरसँ भरल अछि। तैठाम एकहको बेर पहुँचब कठिन अछि।”

पुछलयैन-

“की कठिन अछि?”

रामखेलौन भाय बजला-

“लोकक जिनगीए केतेटा होइए। तहूमे तेते रास काज आगूमे

पड़ल रहैए जे ओकरे सम्हारब कठिन छइ। तैठाम लोक घुमिये-फीरिये केते सकैए।”

मुहसँ खसि पड़ल-

“देखै छी, केतेको गोरे एहेन संकल्पे केने छैथ जे साले-साल कामौरक भार उठा बैजनाथ जाइ छैथ।”

रामखेलौन भाय बजला-

“हँ से तँ जाइते छैथ।”

रामखेलौन भायकेँ सूहकारिते बजलौं-

“तखन तँ यएह ने भेल जे बैजनाथ बाबाक दिन बढ़ि गेलैन आ जगरनाथक दिन घटि गेलैन।”

तैबीच गाड़ी लोहना स्टेशनक पछबरिया सिंगल लग आबि गेल। रामखेलौन भायकेँ एतै उतरब छैन। धड़फड़ा कऽ उठए लगला। ..रामखेलौन भायकेँ धड़फड़ाइत देखि अपनो मन ‘अपन गाम’ पहुँच गेल। तैबीच रामखेलौन भाय बजला-

“बौआ, काल्हि सबेरे-सकाल आबि जाएब।”

कहलयैन-

“भाय, एकटा समाचार तँ बुझबे ने केलौं!”

“की?”

“सुभधी दादीक की समाचार छैन?”

सुभधी दादी रामखेलौन भाइक पिताक दीदी छथिन। हुनके ऐठाम बेसी अबरजात छैन। ओना, रामखेलौनो भाइक परिवारक हिसाबसँ आ गामोक सामाजिक हिसाबसँ सुभधी दादी दादीए हेती। नब्बे बर्ख पार कऽ चुकल छैथ। मुदा अखनो बोलीमे जे टाँस छैन ओ ओहिना छैन जहिना समरथाइमे छेलैन। गामसँ निकलना पनरह दिन भऽ चुकल छल

तँए हीक हुनकेपर छल...।

रामखेलौन भाय बजला-

"हुनके देखै दुआरे ने कौल्हुका प्रोग्राम बनौने छी। दस दिनसँ ओछाइन पकैड़ नेने छैथ।"

गाड़ी स्टेशनमे लगि गेल। रामखेलौन भाय गाड़ीसँ उतैर गेला।

दस दिनसँ सुभधी दादी ओछाइन धेने छैथ, तहूमे रामखेलौन भाय परसुए तकक समाचार कहलैन। काल्हि की आ आइ की भेल हेतैन, की नहि। मुदा अपनो औगतेने तँ नहियेँ हएत। मन गुनधुन करिते छल कि अपन स्टेशन पहुँच गेलौं।

गाड़ीसँ उतैरते मनमे भेल जे पहिने अपना ऐठाम नहि जा दादीए-सँ भेँट करबैन। ओना, गौंआँ सभ जे छला ओ सभ अपन-अपन काज, दोकान-दौरीक काजमे लगि गेला। अपनो देह हल्लुक भाइए गेल छल। हल्लुक ई जे आब तँ सभ गामक सीमामे पहुँच गेल छैथ। जाबे गामक सीमानसँ बाहर छला ताबैए तक ने एक-दोसरपर एक-दोसरक किछु भार छल। ओना, लोकक भार लोक थोड़े उठा सकैए, बेसी-सँ-बेसी संग-साथ दऽ सहयोग करि सकैए।

गाड़ीसँ उतैर गाम दिस विदा भेलौं। रस्तामे मन खट-खुट करए जे जाबे गाम नइ पएर देने छेलौं तैबीच जँ दादीक परान छुटि गेल रहितैन तँ कोनो दोख नइ लगैत। किए तँ गाममे नइ छेलौं। मुदा गामक सीमानमे पएर देला पछाइत तँ पहिने हुनकर दर्शन कए लेब उचित। ओना, जगरनाथ जाइसँ पहिने जखन दादीसँ भेँट केलिऐन तखन तँ ओ एको बेर ई नइ कहलैन जे कोनो तरहक गड़बड़ी देहे कि मनेमे अछि। मुदा देहक कोन ठेकान अछि जे कखन केकरा की हएत। ओना, गामसँ कनी पाछूए रही कि रूपलाल भाय भेटला। भेटते अगुआ कऽ वएह बजला-

“यात्रा नीक रहलह किने, रामसुनर?”

कहलयैन-

“बढ़ियाँ रहल। सुभधी दादीक की समाचार छैन?”

रूपलाल भाय बजला-

“नीक छैन। तखन तँ नबे-एकानबे बर्खक उमेर भाइए गेल छैन, पाकल आम जकाँ कखन छैथ, आ कखन नइ छैथ, तेकर कोनो ठेकान थोड़े अछि।”

रूपलाल भाइक बात सुनि मनमे एते तँ बिसवास भाइए गेल जे दादी जीवित छैथ। से नइ तँ पहिने अपना ऐठाम पहुँच झोरा-झन्टी रखि भरि मन नहाएब, पछाइत बुझल जेतइ। ..घरपर अबिते हाथो-पएर ने धोने रही कि कुशले-समाचार होइत-होइत आँखि लगि गेल। थकान रहबे करए। ..परात भने, नित्य-कर्मसँ निवृत्ति भेला पछाइत चाह-पान खा दादीसँ भेँट करए विदा भेलौं।

..पुबरिया घरक ओसारपर दादी बैसल छेली। पहुँचते पएर छुबि गोड़ लागि पुछलयैन-

“दादी, मन नीक अछि किने?”

ओना अपन प्रश्न दादीक स्वास्थ्यसँ जोड़ल छल मुदा दादीकेँ की अर्थ लगलैन की नहि, बजली-

“बौआ, दिन घटि गेल।”

‘दिन घटि गेल!’ किछु अरथे ने लगल। चौबीस घन्टाक दिन-राति सभ दिनसँ होइत आएल अछि आ आगुओ सभ दिन होइत रहत। तखन दादी की कहली? एक तँ ओहुना गाममे सभसँ बेसी उमेरक छैथ। जैठाम सत्तैर-अस्सी बर्ख पहुँचैत-पहुँचैत लोक मरि जाइए। तैठाम दादी नब्बे पार कऽ चुकल छैथ, तैयो कहै छैथ जे ‘दिन घटि गेल!’ ..मने-मन गुनधुन करी

मुदा कोनो भाँजपर विचार चढ़बे ने करए। अपन मन अपने धिकारलक। धिकारलक ई जे जखन दादी सोझेमे छैथ तखन हुनकेसँ किए ने पुछि ली। कोनो कि अपनसँ कम उमेरक छैथ जे लाजो-संकोच हएत। बजलौं-

"दादी, अलंकारमे बाजि अनेरे वौआबै छी।"

दादी बुझि गेली। बजली-

"बौआ, दिन घटब भेल समैयक दुरुपयोग करब। माने श्रमहीन समय गमाएब, से तँ उमेर पाबि भाइए गेलौं किने?"

ओना, अपना जनैत दादी अपन विचार कहि देलैन मुदा मनमे होइते रहए जे दिन घटब भेल गरीब हएब।



शब्द संख्या : 2425, तिथि : 5 अक्टूबर 2016

मुड़ियाएल घर

जागेश्वर काका दुनू परानी दरबज्जाक ओसारक चौकीपर बैस बेरुका चाह पीबै छला। फागुनक समय, परसू शिवराति छी। जाड़क सरपोख नहाएल समय वसन्ती रौद पेब सोलहन्नी तँ नहि मुदा आधासँ बेसी जाड़क जकड़न तियागि चुकल छल। एक तँ अढ़ाइ-तीन बजेक बेरुका समय, तैपर मन्द-मन्द पुर्बाक लहकी सेहो लहलहाइत। ओना चाहक रंग-रूप आ सुआदो आन दिनसँ नीक अछि। नीकक कारण अछि एक तँ बकेन महींसिक दूध तैपर जागेश्वर कक्काक भातीज जे दार्जिलिंगमे रहि चाहे कम्पनीमे नोकरी करै छैन, ओ आधा किलोक चाहक पॉकेट देने रहैन, वएह टटका चाहपत्ती।

ओना, बनौनिहारि पुतोहुक लूरिमे कोनो बढ़ोत्तरी नइ भेल छेलैन। मुदा काजोक तँ शुभ संजोग होइते अछि। भरिसक सएह सुधनीकेँ भेलैन, जइसँ चाहक सेखियो आ रंगो-सुआद नीक बनलैन।

जिराएल मन जागेश्वर कक्काक, तँए पहिने चारि-पाँच घोंट चाह एक-लखाइत पीलैन। चारि-पाँच घोंट चाह पीला पछाइत जागेश्वर कक्काक मन फुरफुरेलैन। फुरफुराइते बजला-

"चाह तँ निम्मन बनल अछि मुदा एहेन सभ दिन हुअए तखन ने।"

जागेश्वर कक्काक बात सुनि रमणीकाकीक मन रमकलैन नहि, असथिरे भेलैन। असथिर होइते पुतोहुक लूरिपर मन पहुँच नचलैन। नचिते उठलैन- जँ परिवारक भनसिया नीक भोजन, नीक भोजनक अर्थ

नीक वस्तुए-टा नहि सुआदो, बनबैथ तँ भोजन केनिहारक मनो आ पेटो परिपूर्ण हेबे करत। जखने मनो आ पेटो परिपूर्ण हएत तखने ने बातो आ विचारोमे परिपूर्णता एबे करत, जइसँ खाइ-पीबैक झगड़ा परिवारसँ मेटेबे करत।

मुँहक चाहकेँ कण्ठसँ निच्चाँ उताइर रमणीकाकी बजली-

"गामक बहुत गोरे काल्हि जतरापर जेता।"

ओना जागेश्वर काकाकेँ सेहो केते गोरे तीन-चारि दिनसँ कहलकैन अछि जे शिवराति दिन वाणीश्वरी भगवतीक दर्शन करए चलू। तीन-चारि घन्टाक रस्ता टेम्पूसँ अछि। शिवरातिसँ एक दिन पहिने दुपहरक पछाइत विदा हएब आ चारि-पाँच बजे तक पहुँच जाएब। ओत्तै रातिमे विश्रामो करब आ साँझमे शिव उपासक फलहारो करब। मुदा जागेश्वर काका सबहक बात सुनैत गेला, किनको किछु कहलखिन नहि।

नइ कहैक कारण रहैन जे मने-मन उदयपुरक सभकेँ चिन्हते रहैथ, माने गौंआँ सभकेँ। जे केकरो जड़ि-छीपक ठेकान नइ अछि। बाजत किछ आ करत किछ। करनी-धरणी एहने रखने अछि आ दर्शन करत वाणीश्वरी भगवतीक।

मुदा विचारसँ उतैर जागेश्वर कक्काक मनमे एलैन जे जखन गामक लोक सभ जाइए रहला अछि आ अपनो केते दिनसँ विचारैत आबि रहल छी जे वाणीश्वरी भगवतीक दर्शन दुनू परानी मिलि करब, मुदा ने कहियो गर लागल आ ने जा भेल।

..ओना रमणीकाकी वाणीश्वरी भगवतीक स्थानक चर्च नइ केने छेलखिन, मुदा जतरासँ वएह मतलब रहैन। तैपर, जवाबमे जागेश्वर काका कहलखिन-

"जखन गामक भेड़िया-धसान लोक दर्शन करए जेबे करता तँ अपनो दुनू परानी अही लाटमे चलि कऽ दर्शन कऽ लिअ।"

पतिक विचारसँ सहमत होइत रमणीकाकी मुड़ी डोलबैत बजली-

"भेल तँ शिवरातिसँ एक दिन पहिने जाएब आ शिवरातिक परात भने चलिए आएब। मोटा-मोटी दू दिन भेल।"

पत्नीक विचारमे सहमत जतबैत जागेश्वर काका बजला- "हँ से तँ सएह भेल। काल्हि बारह बजेक पछाइत निकलब आ तेसर दिन बारह बजेसँ पहिने घुमि कऽ आबिए जाएब।"

पतिक विचारमे अपन विचार सटबैत रमणीकाकी बजली-

"जखन दुनू परानी घरसँ निकैल बाहर जाएब तखन बेटो-पुतोहुकेँ जना देब नीक हएत। ओना अपनो दुनू परानी बहुत दिनसँ, बहुत दिनसँ कि सभ दिने वाणीश्वरी भगवतीक आराधना-उपासना करिते आबि रहल छी तँए भगवतीए धाममे उपासक फलहारो करब तँ जिनगीक परीछे देब हएत किने।"

पत्नीक विचार सुनि जागेश्वर कक्काक मन फुला गेलैन। फुलाइते बजला-

"जखन उदयपुरक लोक जाइक मन बना लेलैन तखन संग-साथमे अपनो दुनू परानीक जाएब उचिते हएत। मुदा ओ सभ अपन-अपन सवारीक बेवस्था करता, अपना दुनू गोरे अलग बेवस्था करब।"

ओना जागेश्वर काका पत्नीक अभ्यन्तरक बात अपनो बुझै छला। अपना बुझैक कारण बेवहारिक छेलैन। बेवहारिक ई जे कहैले तँ सभ (गौंआँ) वाणीश्वरी भगवतीक दर्शन करए जेता मुदा घरसँ बाहर धरिक जे बोली-वाणीक रूप बना नेने छैथ, से की अपने वाणीश्वरी भगवतीक दर्शन करता, ओ तँ अप्पन दर्शन भगवतीकेँ देथिन। मुदा जे हौउ, एके गाममे सभ रहै छी, मुदा...।

अपन विचारकेँ तहियबैत अबोध जकाँ जागेश्वर काका बजला-

"जेना-जे विचार हएत से करब।"

शुरूमे उदयपुर छोटे गाम छल। मुदा मिथिलांचलक घर-घराड़ीकेँ कमला-कोसीक बाढ़ि कम उपटान उपटौलक सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। केतेको निम्मन गामक मनुक्खक घराड़ी चौर भऽ माछ-कौछुक घराड़ी बनि गेल अछि जेकरो तँ नकारल नहियेँ जा सकैए। मुदा तँए ईहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए जे बत्तीसोअना गाम अहिना भऽ गेल अछि। खाएर जेतए जे भेल से भेल, मुदा उदयपुरक उदयमे सभ दिन बाढ़ि अछिए। ने यमुना तीरक उपद्रव आ ने कोसी-कमला घाटक घटवारिसँ भेँट, जइसँ गाममे कहियो कोनो विघटन किए हएत। तँए दिन-दिन बढ़िते गेल। आने-आन गामसँ उजरल-उपटल लोको आ उदयपुरक महत् बुझनिहारो तँ आबि-आबि उदयपुरमे बसले छैथ। तैसंग नव-नव एबो करिते छैथ। गाममे वास-भूमिक कमियोँ छइहे नहि जे घराड़ीक अभावक दुआरे कियो बसि नइ सकै छैथ, आकि अपनामे रग्गड़े-झग्गड़ करता। तँए कि गाममे निचरस खेत नइ अछि, कोनो धार-धूर नइ अछि, ओ गामे ने वास-भूमि भेल। तँए केतबो परिवार आन गामसँ आबि बसता तैयो उदयपुरमे वासक कमी नहियेँ हएत।

..अनुकूल मौसम बनने जहिना बरखा होइए, अनुकूल मौसम बनने जहिना वसन्त अबैए, अनुकूल मौसम बनने जहिना ठनका खसैए तहिना वास-भूमिक अनुकूलते ने घरवासकेँ गामवास सेहो बनबैए। जखने घरवास गामवास बनए लगैए तखनेसँ ने विचारवासी विवेकवासी बनि वास करए लगैए। से तँ गाममे अछिए।

जहिना श्रीपंचमीमे वीणा पुस्तक-धारिणी सरस्वतीक आ हाथ सजलक संग लक्ष्मीक पूजा एके दिन एके समय– प्रभात वेलाक शुभ मुहूर्त्तमे लोक करै छैथ तहिना ने जिनगियोक प्रभात वेला अछि।

वाणीश्वरी भगवती धामक धरमशालामे दुनू परानी जागेश्वर काका एकटा कोठली सबा रुपैआ दैछना दऽ कऽ लेलैन। तीन मंजिला मकानक नमहर धरमशाला ऐछे, जइमे छोट-पैघ अनेको कोठली भीतर अछि।

उदयपुरक तँ मात्र पनरहे-बीसटा यात्री छैथ जे आनो-आनो गामक अनेको यात्री रहितो धरमशालाक किछु कोठली खालीए अछि।

ओना, धरमशालाक भाड़ा होटल आकि भाड़ाबला आन मकान जकाँ बेसी नहियेँ अछि। तेकर कारण अछि ई धरमशाला वाणीश्वरी भगवतीक स्थानक छिऐन। जे स्थानक चन्दा-चढ़ौआसँ बनल अछि। भाड़ा नामक किछु ने छै मुदा ओकर रख-रखावक जे बेवस्थामे खर्च होइ छै, बस ओही रूपक भाड़ा बनल अछि।

सूर्यास्त भऽ गेल। स्थानक अप्पन बिजली बेवस्था, माने जेनरेटरक बेवस्था तँए स्थान भरिमे माने वाणीश्वरी भगवती-मन्दिरक संग आरो केते छोट-पैघ मन्दिरो तँ अछिए। तैसंग पण्डा-पुजेगरीक रहैक वासक संग नमहर धरमशलो अछि आ बीचक जे आँगन अछि, जइमे रंग-रंगक दोकान-दौरी अछि, तैबीच भरि राति एके रंगक इजोतक बेवस्था तँ चाहबे करी, जे अछिए। पावर-हाउसक बिजली जकाँ नहि, जे करवन रहत आ करवन नइ रहत।

..होइतो तँ ऐछे जे दिनमे जखन बिजली इजोतक जरूरत नइ रहै छै तखन बिजलियो रहैए आ रातिमे जखन अन्हार होइ छै तखन रहबे ने करैए। तइसँ सैयो कच्छे वाणीश्वरी भगवतीक स्थानक तँ अछिए। दिनमे जखन इजोतक खगता नइ रहै छै तखन जेनरेटर बन्न रहल आ जखन जेते काल खगता भेल, तेते काल चलल। यएह ने जिनगीक ओ उपलब्धिक पड़ाव छिऐ जेतए लोककेँ अपन जिनगीक काज अपना हाथमे आबि जाइए, जइसँ अपन मनोनुकूल कार्यक्रमक बीच जिनगीक चक्की चलैत रहैए।

सूर्यास्त होइते भगवतीक सिंह दुआरिक घड़ी-घण्ट बाजल। घड़ी-घण्ट बजिते सभ उपासी–शिवक उपास केनिहार आकि केनिहारि–क मनमे उपासनाक फलहारक आशा जगलैन। जहिना तुलसी बाबा कहने

छैथ जे, जेहने जेकर मनक भाव रहत तेहने रामक दर्शनसँ भेँट हएत। 'रामो रामो' कहनिहारक कमी अछि, केतौ ठक-ठाकुर-चोर मिला जपैए तँ केतौ रस्ता-पेरामे रामक जप लुटाइए! लूटि लिअ जेकरा जे लूटैक अछि। भगवती स्थानक घण्टीक आवाज सुनि रमणीकाकीक मन चपचपाइत थलथला कऽ जलजला गेलैन। जलजलाइते पति दिस तकैत रमणीकाकी बजली-

"गामेसँ फलहारक सभ फल अनने छी। पहिने दुनू परानी नहा कऽ नव वस्त्र पहिर लिअ, पछाइत डाली साजि भगवतीक मन्दिरमे फल चढ़ा दुनू गोरे शिवरातिक उपासनाक फलहार कऽ लेब।"

होइते अहिना छै जे भूखल आगू किछु खेबाक वौस आ पियासल आगू पानि आबि गेलापर जहिना मनमे सब्रक बीजक अंकुर जगैए तहिना जागेश्वर काकाकेँ सेहो भेलैन। कोठलीक खिड़की खोलि जागेश्वर काका गौंआँ यात्रीक कोठली दिस तकला तँ देखलैन जे किनको अपन घरक फलहारक फल नइ छैन, तँए सभ झोरा लऽ लऽ दोकान दिस जा रहल छैथ...।

अवसरक लाभ उठबैक परियास करैत, समयक उपयोग करैत जागेश्वर काका बजला-

"नहेला पछाइत ने भगवतीक डाली सजब। अखन सभ यात्री फलहारक फल कीनैले दोकान-दौरी टहैल रहल छैथ, स्नानक घाट खाली अछि...।"

दुनू परानी जागेश्वर काका नहेला पछाइत नव वस्त्र धारण केलैन। पुरना वस्त्र घाटपर खीच-फखारि कऽ पानि गाड़ि कोठरीमे पसाइर लेलैन।

थर्मशमे गाइक दूध, पाकल केरा, दारीम, आ खीरा मोटरीसँ निकालि रमणीकाकी काकाकेँ कहलखिन- "सभ अपने चास-वासक

छी।”

एक तँ यात्राक पछाइत स्नानक सुख, तैपर सँ वाणीश्वरी भगवतीक सरोवरक घाट टपल जागेश्वर काका रहबे करैथ, मन गुदगुदा गेलैन। गुदगुदाइते बजला-

“भगवतियोकेँ अपन-चास-वासक फल देखि मने-मन खुशी हेबे करतैन।”

ओना जागेश्वर काका संगी-साथी जकाँ वाणीश्वरी भगवतीकेँ बुझि बजला मुदा से रमणीकाकीकेँ नीक नइ लगलैन। ओना, अनसोहाँतो नहियेँ लगलैन, मुदा एक धान एक चाउर होइतो किछु एहनो तँ ऐछे जे सुगन्धित अछि, एकर माने ईहो नइ जे सभ सुगन्धिते अछि। मुदा ईहो केना कहल जाएत जे चाउरक जे अपन सुगन्ध अछि ओ कोनो चाउरमे नइ अछि। ओ तँ उपरारिमे उपजल सतरिया धानक चाउर हुअए कि तुलसी फुलक आकि चौरीमे उपजल बेलौर-दसरिया आकि पाखैरे-पिच्चैर किए ने हुअए मुदा चाउरक जे अपन गुण-धर्म-सुगन्ध छै ओ तँ छइहे।

ओना मने-मन जहिना जागेश्वर काका चाउर-गुड़ चिबबै छला तहिना रमणियोँ काकी चिबैबते छेली, मुदा बजली नहि, अपन फलहारक ओरियानमे अपनाकेँ लगौने सभ फलकेँ ओरिया-ओरिया सैंत-सैंत डाली सजबैत रहली।

..डाली सजिते जागेश्वर काका टोन मारलैन-

“जे सभ फल वाणीश्वरी माएकेँ चढ़ेबैन से तँ मंत्र जकाँ कहि देबैन किने?”

ओना जागेश्वर कक्काक मनमे होइत रहैन जे भरिसक पत्नीकेँ ईहो बात नीक नइ लगतैन, मुदा से विपरीत भेल, रमणीकाकीकेँ नीक लगलैन। दुनू खीरापर हाथ रखि बजली-

“ई भेल लत्तीक फल। जेकरा डाँड़मे, अपन फल जकाँ तागतो ने

छै जे अपने भरे ठाढ़ो हएत मुदा फल तँ एहेन ऐछे जे गाछक सैयो फलसँ नम्हरो आ सुअदगरो अछिए।"

बिच्चेमे टोन दैत जागेश्वर काका बजला-

"मुदा खीरा मीठ कहाँ होइए?"

रमणीकाकीकेँ सुतरलैन। बजली-

"मीठ केकरा कहै छै से अखैन नइ कहब। जाबे आन यात्री नहेता-सोनेता तइसँ पहिने अगुआ कऽ भगवतीक दर्शन करब बेसी नीक हएत।"

हत्थो भरि गौरिया केराकेँ दहिना हाथसँ उठा रमणीकाकी निंगहारि-निंगहारि देखए लगली जे पाल परक कलकतिया-आम जकाँ ठाम-ठीम खोंइचा दगि गेल अछि।

..बिच्चेमे जागेश्वर काका टोनियबैत बजला-

"केरा सड़ल जकाँ बुझि पड़ैए!"

झपटैत रमणीकाकी बजली-

"सड़ल नइ अछि, परसाएल अछि। असल तँ यएह भेल जे परसाद बनि परसाइबला सेहो छी। तोहूमे आम-लतामक गाछ जकाँ कि कोनो हड्डी-पसलीबला गाछक फल छी। जल-जल, थल-थल, पल-पल गाछक पेटसँ निकलल फल छी।"

ओना रमणीकाकीक बात सुनि जागेश्वर काका भकचका गेला। भक-चकीमे पड़ल मनकेँ जाबे सोझरबैथ-सोझरबैथ तइ बिच्चेमे दारीमकेँ देखबैत रमणीकाकी बजली-

"केते सुन्दर पृथ्वी अकारक गोल फल झाड़-झाड़ीमे नुकाएल रहैए।"

रमणीकाकीक मुहसँ निकैलते जागेश्वर काका बजला-

“कोनो कि झाड़ीक-झाड़मे फलेटा नुकाएल रहैए, फलक तरोमे फलहार नुकौने रहैए। तेहेन भारी चोर अछि जे खीरा आकि लताम जकाँ गुद्दा-बीआ आकि रस-खोंइचा एकबट्ट केने रहैए, सजनी जकाँ कोठरी बना-बना अपनाकेँ सजने रहैए।”

ओना रमणीकाकीक मनमे उपकैत रहैन जे कहिऐन- मुँहक दाँत जहिना रजो छी आ चोरो छी, तहिना ने दारिमो अछि, मुदा बकबासमे समयकेँ हाथसँ छोड़ब नीक नहि, तँए रमणीकाकी चुपे रहि थर्मश निकालि दूधक रंग देखए लगली। बकेन गाइक दूध...।

डाली साजि रमणीकाकी जागेश्वर काकाकेँ कहलखिन-

“चलू, भगवती-माइक दर्शन काइए ली। फलहारोक बेर उनैह जाएत।”

रमणीकाकीक बात सुनि जागेश्वर काका बजला-

“हम तँ नहेला पछाइतेसँ दर्शन करैले तैयार छी मुदा बीचमे अहीं ने लटघाँइ लगौने छी।”

पतिक बात रमणीकाकी सोल्होअना नइ सुनि पेली। आँखि उठा तकली तँ सोझे पतिक मुँह पटपटाइत देखली, जेना मने-मन कियो मंत्र-जप करै छैथ, तहिना। वाणीश्वरी भगवती जेना आगू आबि ठाढ़ भऽ अपन रूप दर्शन करबए लगल होनि तहिना रमणीकाकी अनसून भऽ गेली। अनसून होइते मन नाचए लगलैन। नचिते आँखिक सोझमे भगवतीक तीन रूप चमकए लगलैन। मनुक्खमे देव जोग वएह ने भेल जे विचारकेँ विवेकक कसौटीक मुखाड़ी बान्हि बाइन बना भूमिक रणभूमिमे जीवन यात्रा करैत चलए।

वाणीश्वरी भगवतीक दर्शन आ फलहार केलाक पछाइत दुनू परानी जागेश्वर काका धरमशालाक ओइ कोठरीमे आबि बैसला, जे सवा रुपैआ दैछना दऽ दू दिन रहैले नेने छला। भरल मन दुनू परानीक रहबे करैन।

रौतुका खेबोक खगता नहियेँ बुझि पड़ैन।

जागेश्वर काका पत्नीकेँ कहलखिन- “एक बेर गौंओं-घरूओकेँ देखि अबए चलू।”

एक तँ ओहुना रमणीकाकी पति भक्त, तैपर वाणीश्वरी भगवतीक स्थान, बिनु ‘हँ’ ‘हूँ’ बजने उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेली। दुनू परानी जखन कोठरीसँ निकैल आनो-आनो यात्री आ अपन गौंआँ-यात्रीकेँ देखलैन तँ मने-मन हँसी लागए लगलैन। मुदा ने कियो हँसबे केला आ ने किछु बजबे केलाह। चुपचाप देखि-सुनि कऽ अपन कोठरी आपस आबि गेला।

जहिना अनुकूल मौसम पौने प्रकृतिमे सेहो अनुकूलता आबि जाइ छै, तहिना दुनू परानी जागेश्वर काकाक बीच सेहो ऐलैन।

..पत्नी दिस देखैत जागेश्वर काका बजला-

“अनेरे दुनियाँक नीक-अधला देखै पाछू अपन जिनगी आ कर्तव्य छोड़ि मुँह तकैत रही, हमरा बुझने से नीक नहि।”

जहिना केकरो-केकरो ठोरेपर बरी पकैए, माने कोनो बातक विचार लगले कऽ देब, तहिना रमणीकाकीकेँ सेहो भेलैन। बजली-

“एकरा के काटत।”

पत्नीक समरथनमे जागेश्वर कक्काक मन हरिया गेलैन। हरिया ई गेलैन जे विधातो नारी-पुरुखक भेद रचि दुनूकेँ दू दिशामे मोड़ि देलैन। तैठाम जँ पति-पत्नी ओइ भेदकेँ सहीट बनबैत जिनगीक संगी बनि जीवन-यात्रा करै छैथ तँ ओ निसचिते ने नीक भेल। जागेश्वर काका बजला-

“बेकती रूपमे नर आ नारी भेल, दुनूक सम्बन्धे ने घर-परिवारक निर्माण करत। जे सभ नरक जिनगीक दायित्त्व बनिते अछि।”

बिच्चेमे रमणीकाकी बजली- “पुरुख-नारीक सम्बन्ध ओइ परिवार-

ले अनिवार्य भेल जे अतीत-सँ-भविस धरिक परिवार भेल, मुदा परिवार तँ असगरोक होइ छै आ निसचिन्तसँ लोक जीवन-यात्रा करैए।"

पत्नीक विचार सुनि जागेश्वर काका बजला-

"हँ, से तँ भेल मुदा ओ चलन्त परिवार भेल। चलन्त परिवार ई जे जेत्तै रहब तेत्तै परिवार भेल, कोनो गाम-समाज आकि देश-कोस नइ भेल। मुदा जे भेल से भेल, अपना तँ से नहि अछि। तँए जे अछि तहीले ने विचारबो करब आ करबो करब।"

जागेश्वर कक्काक विचार रमणीकाकीकेँ जँचलैन। जँचिते बजली-

"अखन जइ धाममे छी ओ तँ तखने धर्मस्थल हएत जखन ओइ मर्मकेँ मर्मस्थलमे बसा कर्मस्थलमे समरपित करब।"

रमणीकाकीक विचार नीक जकाँ जागेश्वर काका नइ बुझला। एकर माने ई नहि जे जागेश्वर काकाकेँ बुझैक अवगैत नइ छेलैन। विचार व्यक्त कएल जाइए पात्रक माध्यमसँ। जँ एक रंग पात्र रहल तँ एक-धारामे चलैए आ जँ पात्रमे भेद रहल, अन्तर रहल तँ केतौ-केतौ बाधा-रूकाबट होइते अछि। सएह जागेश्वर काकाकेँ भेलैन।

मुदा कनियेँ-कालक पछाइत जेना मनक ओझरी सोझरा गेलैन तहिना मन विहुँसलैन।

विहुँसैत जागेश्वर काका बजला-

"जहिना नर-नारीक बीच परिवार बनल अछि तहिना ने एक नर दोसर नरक धारा भेल।"

ओना रमणीकाकी अखन तक नरक माने 'पुरुख' बुझै छेली आ नारीक माने 'महिला'। मुदा जागेश्वर काका नरक अद्वैत रूपमे चर्च केने छला, द्वैत रूपमे नहि। माने ओकर खण्डित रूपमे नहि। तँए रमणीकाकीकेँ कनी बुझैमे भेद भेबे केलैन।

निर्मल-निरजल रमणीकाकीक हृदय, बजली-

“नीक नहाँति नइ बुझि पेलौं।”

हँसैत जागेश्वर काका कहलखिन-

“द्वैत-अद्वैतक बीच परिवार चलैए। करवन ‘द्वैत’ ‘अद्वैत’ हएत आ ‘अद्वैत’ ‘द्वैत’, यएह ने..?”

पतिक विचार सुनि रमणीकाकी रमैत जिनगीमे रमि गेली।



शब्द संख्या : 2352, तिथि : 11 अक्टूबर 2016

गामक सुरता

दस बर्ख-ऊपरेसँ मात्रिक नइ गेल छेलौं, तँए मन उबिया लगल जे मात्रिक जाइ। नेपालक लहान मात्रिक छी। सात-आठ घन्टाक रस्ता अछि। दू दिनक विचारसँ मात्रिक एलौं, जेकरा आइ पाँचम दिन छी। ओना तेसरे दिनसँ गामक सुरता खिंचए लगल। जेना-जेना समय बढ़ैत गेल तेना-तेना गामक सुरतो बढ़ैत गेल।

ओछाइनेपर रही, नीन टुटि गेल रहए। मनमे उठल, आइ गाम जेबे करब। किसानी जिनगी छी, किसानी जिनगी तँ ओहन जिनगी होइए जे ने कहियो काजक बोझ तर दबाएब आ ने कहियो बिनु काजक छुट्टा घुमैत रहब। सदावहार जिनगी। नोकरियाक जिनगी जकाँ तँ किसानी जिनगी नहियेँ अछि।

जहियासँ चेष्टगर भेलौं तहिएसँ सालमे एक बेर, बिनु काजोक मात्रिक जाइते छेलौं जे काज-उदेम भेलापर दुइयो-तीनियोँ बेर जाइ छेलौं। मुदा ऐ बेर जे दस बर्ख-ऊपरेसँ नइ गेल छेलौं, तेकर कारण भेल जे जहिया कहियो अनदिना जाइक मन होइ छल तहियो आ काजो-उदेममे कोनो-ने-कोनो आन्दोलन नेपालमे होइते रहल जइसँ आवागमन अवरूद्ध भेने नइ जा पबै छेलौं।

सामाजिक एक बेवहार, एक भाषा–माने बोली-वाणी एक–रहितो दुनू दू देश तँ छीहे। ओना कथा-कुटुमैती आइये नहि, सभ दिनसँ दुनूक बीच होइते आबि रहल अछि। तहूमे सीमा-कातक गाम सभमे, सीमे-

कातक गामेमे नहि, बिहार, बंगाल आ उत्तर प्रदेशक सीमा-कातक जिलाक अतिरिक्त आनो-आन जिला सभमे कथा-कुटुमैती होइते आबि रहल अछि। अरड़िया-पूर्णियासँ लऽ कऽ चम्पारण जिला तकमे हजारो कुटुमैती नेपालक अछिए।

ओना, अखुनका मधुबनी जिला आ पुरना दरभंगा जिलाक उतरवरिया हिस्साक कुटुमैती बेसी अछि। तहूमे मधुबनी जिलाक केतेको परिवार–गरीबीक चलैत–अपन गाम-घर छोड़ि, अपन खेत-पथार बेच नेपालेमे खेत-पथार कीनि बसि गेल अछि। खास कऽ धनुखा जिलामे।

देशक सघन आबादीबला जिलामे मधुबनी जिला अछिए। ओना, शहर-बाजारबला आनो जिला सघन अछि मुदा से नहि, ग्रामीण क्षेत्रमे मधुबनी जिला सघन अछि। सघन आबादी रहने वास-सँ-चास धरिक जमीनक अभाव अछिए। तहूमे किसानी जिनगीक लेल तँ आरो बेसी खेत-पथारक खगता होइते अछि। से दुनू दृष्टिए..।

पहिल- किसानी जिनगी कृषि अधारित अछि जइसँ खेतक खगता होइए आ दोसर, किसानी जिनगीमे बासोक बेसी खगता होइते अछि। हेबो केना ने करत, जैठाम नोकरिहारा एकटा कोठरीमे एक परिवार रहि सकैए तैठाम किसानी जिनगीमे लोकक संग माल-जाल, अन-पानि, जारैन-काठी रखैले सेहो घरक खगता होइते अछि। तेकर अभाव भेने लोक गाम छोड़ि–गाम कि देशे छोड़ि–नेपालमे बसबे कएल अछि। नेपालमे जनसंख्याक ओ सघनतो ने अछि जे मधुबनी जिलाक अछि।

..खेतक अनुपातमे जहिना मधुबनी जिलामे जनसंख्या बेसी अछि तहिना जनसंख्याक अनुपातमे नेपालमे खेत बेसी अछि। जे अनुकूलता रहने जीवन-यापन असान अछि। ओना, जीवन-यापन सेहो क्रमबद्ध अछि, जे जेना-जेना बढ़ैत जाएत, तेना-तेना जिनगियो बढ़ैत जाएत। मुदा से नहि, ऐठाम मात्र भरि पेट अन्न, पाँच हाथ देहपर वस्त्र आ रहैक

जोगार भरिक अछि।

जहिना गामक सुरता गाम दिस खिंचैत रहए तहिना मात्रिकक मात्रिक दिस। ओछाइनपर पड़ल किछु निर्णये ने कऽ पबैत रही जे की करी...।

गामक सुरताक कारण छल, अपन दैनन्दिनक जिनगी। जे मात्रिक गेने बहुत किछु छुटि गेल। आ मात्रिकक सुरताक कारण छल नेपालक बदलैत सामाजिक बेवस्था।

किरिण फुटि गेल छल, मुदा ओछाइन छोड़ैक मने ने होइत रहए। होइतो अहिना छै जे जँ दैहिक अरामक अवस्थामे पड़ल रहब आ जँ कोनो विचार मनमे उठि गेल आ ओइ विचारक गुत्थीमे ओझरा गेलौं तखन अस्सी मनक मोटा मनकेँ दबबे करैए, जइसँ ओछाइनसँ उठैक कोन बात जे एक करसँ दोसर कर घुमबो भरिया जाइए, तहिना भेल रहए। मन दबाएल रहए, मुदा मनक बेथा ने अपने मेटाइबला आ ने दोसर सुननिहारे, जे मेटाइयो सकैए आ कमियोँ सकैए। संजोग नीक रहल। अबेर तक ओछाइपर पड़ल देखि ममियौत भौजी चुल्हिपर चाह-चढ़ा आबि बजली-

“सौंसे गामक लोकक कोन बात जे कौओ-मेना आ कुकुरो-बिलाइ उठि-उठि अपन काजमे लगि गेल आ अहाँ सुतले छी!”

कहि भौजी ससैर कऽ चाह बनबए चलि गेली। ओना, लोकोक चर्चा, कौओ-मेनाक चर्चा आ कुकुरो-बिलाइक चर्चा भौजी केने छेली। मनमे तामसो उठए आ भिनसुरका पहर देखि मनकेँ दबबो करी जे भोरे-भोर जँ किछु गरमा कऽ बाजब तँ भिनसुरके रौदसँ पारखी दिन परेख लइ छैथ, जँ तहिना भऽ जाए! तँए तामसकेँ दबबो करैत रही। मुदा लगले मनमे भेल जे जँ कहीं अपने ओछाइने धेने रहब आ तैबीच जँ भौजी चाह नेने आबि जेती तखन तँ अपने करनीसँ ने चाहकेँ पानि बना पीब। ओना,

चाहो तँ चाह छी, जहिना पानिकेँ ओंटि चाह बनैए तहिना तँ बिनु ओंटनौं चाह पानियेँ बनैए। तँए मनकेँ मनबैत ओछाइनसँ उठि दतमैन करए विदा भेलौं। भाय जखन चाह पीब, तइले जँ मुहोँ नइ धोने रहब तखन पीब केना। तँए खगता बुझि उठलौं आ हाँइ-हाँइ कऽ ई सोचि मुँह धोलौं जे जाबे भौजी चाह बनेती तइसँ पहिनहि जल-थमहन केने चुल्हिए लग पहुँच अगुआ कऽ कहबैन जे जँ अहाँ सन-सन चाह बनौनिहारि भेली तँ पीनिहारकेँ मखानक पातसँ मुँह धुअ पड़तैन। ..मुदा से भेल नहि जाबे अपने ओछाइन लग आबी-आबी ताबे भौजियो चाह नेने पहुँच गेली। ठाढ़े-ठाढ़ हाथमे चाह पकड़ा देलैन। हाथमे चाह पकड़बैत भौजी भनसा धर दिस जहाँ मुड़ली कि पाछुसँ कहलयैन- "भौजी, अपनो चाह एतै नेने आउ, पीबो करब आ किछु गपो करब।"

ओना, पाछू उनैट भौजी हमर नजैर पढ़ि लेली जे मनक मंशा की अछि। होइतो अहिना छै ने जे मंशाधारीए लोक ने मुनसा बनैए आ बिनु मंशाबला, बिनु मोसिबला दवात जकाँ सुखाएल पड़ल रहैए।

जहिना कहलयैन तहिना भौजी रस्ते-रस्ते–माने चुल्हिये लगसँ–चाह पीबैत लगमे एली। पान-सात घोंट चाह पीब नेने छेली तँए मन सर्रास भऽ गेल छेलैन।

ओना भौजी मैट्रिक पास लौकही हाइ-स्कूलसँ केने छैथ आ गामेक बगलक स्कूलमे शिक्षिको छैथ, तँए परिवारो आ समाजो एते तँ अधिकार दैये देने छैन जे देहपर कपड़ा रखती, माथपर राखब अनिवार्य नहि। तहिना बजै-भुकैक क्रममे सेहो किछु विशेष छूट भेटिए गेल छैन। तहुमे बीस-बाइस बर्खसँ दोसर सन्तान नइ भेलैन–माने धिया-पुताक छुति नहियेँ लगल छैन। ओना, पैंतीस-चालीस बर्खक उम्र छैन। तँए जहिना दिनक प्रभात बेला तहिना विचारक प्रभात बेलाक मौसम बनले रहए। अदहा चाहो सठि गेल छल। बजलौं- "चाहेटा पिआएब आकि मुहोँ-ठोर रंगब।"

पीबते भौजी आँगन दिस बढ़ैत बजली-

“एतै पानक डलिया नेने अबै छी, पानो लगाएब आ गपो-सप्प करब। ओना, आइ रबि छी, स्कूलमे छुटिये अछि, मुदा कपड़ो-लत्ता साफ केनाइ आ निचेनीक भोजनो ने नीक-निकुत हेबा चाही।”

पानक डाली नेने भौजी पहुँचली। आगूमे बैस पानक दागी सभ छाँटए लगली। ओना पानेक गामक अपनो छी, तँए पानक जनम-सँ-करम धरिक रस्ता देखल अछि, मुदा सभ जगहक अपन-अपन महत् छइ। ऐठाम किछु बाजब उचित नहि। बजलौं-

“भौजी, आइ पाँचम दिन छी, बुझिते छिऐ जे किसान छी। सभ दिन खेतक आड़िपर आ दुनू साँझ गाए दुहए पड़ैए। तैठाम समैयक अँटावेस दू दिनले कऽ नेने छेलौं, मुदा आइ पाँचम दिन छी। गामक सुरता, माने काजक गति खींच रहल अछि।”

आगूएसँ लपैक कऽ भौजी वृन्दावनक गोपी जकाँ–जे कदमक गाछक डारि पकैड़ बजैत...।

बजली-

“से कि कोनो हमरा नइ बुझल अछि जे अहाँ चारि कट्ठामे माछो पोसने छी। चोर जकाँ, खेतक आड़ि आ गाए दूहब कहि देलौं आ ई कहबे ने केलौं जे माछक ओगरवाहि दिनेटा-मे नइ रातियो-के करए पड़ै छइ। नइ तँ पानिक धन पानियेँमे चलि जाइए।”

भौजीक बात सुनि अवाक भऽ गेलौं। मुदा अपन उचिती-विनतीक तँ अधिकार ब्लौकक बी.डी.ओ.सँ लऽ कऽ राष्ट्रक राष्ट्रपति धरि तँ ऐछे...।

बजलौं-

“भौजी अहाँकेँ की कहब। गाछ-बिरीछसँ धिया-पुता धरिक सुरता खींच रहल अछि।”

जहिना ठोर बिजका-बिजका बजलौं तहिना भौजी मानि लेली। बजली-

“हमरा दिससँ कोनो एतराज नहि। अखनो जा सकै छी। मुदा आइ अपनो आबि रहल छैथ..।”

भैयाक नाओं सुनिते मन चौंक गेल। जहलसँ पनरह दिनपर निकैल आबि रहला अछि, तैठाम बिना भेँट केने जाएब नीक हएत। एक तँ दस बर्खसँ भेँट नइ भेला अछि। जइमे सोल्हन्नी गलती अपने अछि, जे भैया जेना अपन समाजक काजमे बाँझल रहला तेना हमरे आबि कऽ ने भेँट करैक चाहै छल। मुदा गाड़ी-सवारीक बहाना बना भेँट नहि कए सकलयैन। गाड़ी-सवारी बन्न अछि, ओ तँ नेपालेक सीमा धरि। लौकहासँ पएरो गामे-गाम जँ अबितो, सेहो तँ सम्भव छले। मुदा आब तँ यएह ने कहल जाएत जे जे समय पाछू चलि गेल, ओकर पश्चातापे कएल जा सकैए, पुन: ओकरा ओइ रूपमे उपयोग तँ नहियेँ कएल जा सकैए।

विचारक पाराग्राफ बदैलते गाम दिस तकलौं तँ बुझि पड़ल जे अपने नइ रहने सभटा घटे-घाटा भेल जा रहल अछि। ओना पान खुआ भौजी अपन काजमे लगि गेली। दरबज्जाक चौकीपर बैस मने-मन दुनियाँ दिस ताकए लगलौं। अखन सघन खेतीक समैयो नहियेँ अछि, तँए खेतीक काजमे सघनता सेहो नहियेँ अछि, तँए बेसी नोकसान नहियेँ भेल। मुदा चारि कट्ठा माछक भरोस तँ तोड़ै पड़त। माछक चोर ओहन होइए जे माघो मासमे एकटा कोपीन पहिर जलवाहि कऽ लइए। जहलोसँ नमहर सजा सहैक तँ ओकरा अभियासे छै, तैपर विशाल दुनियाँ तँ सोझामे छइहे। ओकरा की नइ बुझल हेतै जे गाम छोड़ि मात्रिकमे छी। परिवारक काज रहितो परिवारक सभ थोड़े अपन बुझैए। मुदा भैया दिस नजैर पड़िते अपन काज दिससँ नजैर बहटल। बहैटते उठल दस बर्खसँ ऊपरेसँ भैया भेँट नहि भेल छैथ, केना समय बितलैन, एतबो जँ नहि बुझि पएब तखन ममियौत-पिसीयौतक बीच सम्बन्धे की रहल।

मुदा भैयापर नजैर अबिते मनमे उत्साह जगल, उत्साह ई जगल जे जँ अपने काजकेँ, पारिवारि काजटा-केँ बेसी बुझब तखन दोसराइतक काज केना करब? जाबे-दोसराइत-तेसराइतक सीमा नहि टुटत ताबे अपन सीमा केना टुटत। मन ओझरा गेल। मुदा रच्छ रहल जे भौजी आबि बजली- "पता लगल अछि जे बारह-दू बजे अपने पहुँच जेता।"

आगू-पाछू बिनु तकनहि कहलयैन- "तखन भानस कऽ कऽ रखियौन।"

भानसक नाओं सुनि भौजी मुस्कियाइत चलि गेली। मनमे भेल जे किए ने हमहूँ जलखै खा कऽ आगू बढ़ि भैयाक रस्ता देखिऐन। भेल तँ अढ़ाइ कोस जाएब। अढ़ाइ कोसपर जेल अछि, जइसँ भैया निकलता। मुदा लगले भेल जे एक तँ नेपालक कोसो नमहर अछि, दोसर उड़न्ती बातक बिसवासो करब नीक नहि। जँ ऐठामसँ जाइ आ भैयाकेँ साँझमे छोड़ैन तखन तँ भूखले भरि दिन रहि जाएब। मुदा लगले मनमे भेल जे जहलसँ कखनो भैया निकलैथ, मुदा औता तँ गामे किने। गाम औता तखन भरि मन गपो करब आ जिनगीक अनुभवक किछु बातो बुझब। जिनगियोक तँ अपन धार बहै छइ। जेते जिनगी तेते धार, मुदा कोन धारक पानि कोन गतिए चलैत अछि ओकरा गतिया कऽ गतानब बाल-बोधक खेल थोड़े छी..!

मन आगू-पाछू होइते रहए कि पुन: भौजी आबि बजली- "आठे बजे जहलसँ छोड़ि देतैन।"

'आठ बजे' सुनिते मने-मन गर लगबए लगलौं जे तखन बेरू-पहर गाम जा सकै छी। भने दुनू काज भऽ जाएत। दोहरी काज देखि मन कलशल।

साढ़े दस बजे भैया गामक सीमानपर पहुँच गेला। भौजीक संग हमहूँ अरिआतए आगू बढ़लौं। गामक पाँच गोरे जहलमे छला। माने पाँचो गोरे जहलसँ निकलल छला। चौबट्टी लग जाबे दुनू गोरे पहुँचलौं

ताबे चारू गौंआँ अपन-अपन बाट पकैड़ अपना-अपना घर दिस फुटि गेल छला।

गोड़ लगिते भैया उपराग दैत बजला- “केमहर दिन उगल बौआ जे तोरासँ भेँट भेल!”

भैयाक बात एते भारी बुझि पड़ल जे चुपे रहब नीक बुझलौं। चुपे-चाप भैयाक पाछू-पाछू घरपर एलौं।

घरपर अबिते भौजी भैयाकेँ कहलखिन- “भानसमे देरी हएत, तँए जलखै कऽ लिअ।”

‘जलखै’ सुनि भैया मुस्की दैत बजला- “भिनसुरका गुड़-बदाम खा नेने छी, तँए जलखैयक खगता नहियेँ अछि, जाबे अहाँ भानस करब ताबे हमहूँ नहाएब-सोनाएब किने। पहिने कनी चाह पीआ दिअ।”

दुनू भाँइ चाह पीबते रही कि एक्के-दुइए गामक लोक भेँट करए आबए लगलैन। भैयाक मनमे खुशी रहबे करैन। खुशीक कारण छेलैन जे तीन सालसँ जे समस्या समाधानक आन्दोलन उग्र रूपमे चलैत आबि रहल छल, जइमे ई पाँचम खेपक जेल-यात्रा छेलैन, ओइ समस्याक समाधान वैचारिक रूपमे भऽ गेल छेलैन।

जहल केहनो किए ने हुअए, मुदा फल पबिते जिनगी फलित भाइए जाइत अछि, सएह भैयाकेँ भेल रहैन। ओना, हमहूँ आगूएमे बैसल रही, मुदा गामे-समाजक तेते बात छिड़िया गेल जे दू घन्टाक पछाइत दुनू भाँइ नहेबो केलौं। खाइत-पीबैत चारि बजि गेल। अपन सभ कुशल-छेम पछुआएले रहि गेल। भिनसुरका विचार, बेरमे गाम जाएब, मनमे बसिया गेल। मनमे पड़ल अखनो धरि ओहिना रहल।

लोकक आबाजाही जे शुरू भेल, ओ बढ़िते गेल जे कमैक नाउँए ने लेलक। बीचक जे समय बीतल–माने जहियासँ भैया नइ भेँट भेल छला–ओकर मुँह मिलानी, माने भेँटक अन्तिम दिनक बातक नाँगैर आ औझुका

भेँटक मुँहक मिलानी करब जरूरिये अछि किने, से जँ नइ हएत तँ बरसाती खच्चा जकाँ थाल-खीच बनले रहत किने। भलेँ ओ समय मरियाएले किए ने रहल हुअए। भाय, जहिना मुर्दघट्टा तहिना ने जीघट्टो होइए। मुदा मरल रहल कि जीअल, घाट तँ घाटे छी। घटवारि लोककेँ दिऐ पड़ै छइ। जिनगियोक धारक घाट तँ तहिना अछि किने। जखन जन्म भेल, तखन खेलै-धुपै, पढ़ै-लिखैक समय सेहो एबे कएल, भलेँ जे भेल हुअए। तहिना कमाइ-खटाइ, बिआह-दुरागमनमे पर-परिवार अबिते अछि, पछाइत ने हार-जीतक फैसला मरै-कालमे होइए। से तँ सभकेँ होइते अछि।

मनमे जेते विचार उठैत जाए तेते मन विसाइन-विसाइन होइत जाइत रहए। गामक लोकक बीच भैया हेराएल, कखनो अपन जीतपर ठहाका मरैथ तँ कखनो ऐगला समस्याक रूप-रेखा बनबैथ जे जन-जन तक एकर गुण केते कालमे पहुँच पबैए। तहूमे सत्तो तँ सत्ता छी। चाहे राज-सत्ता हुअए कि समाज-सत्ता, ओ तँ इच्छानुसार चलैए। सदिकाल सभ काज सोझेमे नइ रहैए। मनुखेक जिनगी छी, तेते लाढ़ि-पुरैनक संग जन्म भेल छै, जे ओकरा पोछैत-पोछैत, धोइत-धाइत चिक्कन करैत लोकक जिनगीए गुदस भऽ जाइ छइ।

जखन बुझि पड़ल जे अपन कुशल-छेम करैत समैये खटिया जाएत आ गाम जा नइ हएत, तखन गामक आशा तोड़ि मनकेँ निचेन केलौं जे साँझू पहर भैयासँ भरि मन गप करब। मुदा लगले भेल जे गौंआँ-घरूआ, अपन-अपन घर साँझू पहर धरता, मुदा भौजी तँ बाँकीए छैथ। जखन भौजी अपन गप अगुएती तँ पनरह दिनक घरक मिरचाइ-हरदी गनैत-गनैत सौंझुको समय चलिए जाएत आ भिनसुरको समय खाएत। जिनगियोक भोर तँ अहिना ने दू-मुहाँ अछि। जहिना साँझ तहिना भोर। मुदा से सुतरल।

दुनू भाँइ टहलैले निककलौं। गप-सप्प करैक मौसम भेटल।

पुछलयैन- “भैया, की रंग-हवा अछि?”

ले-बलैया! भैयाक मनमे जेना वएह विचार नचैत रहैन जे अपना मनमे नचैक सुर-सार करैत रहए। बजला- “बौआ, अपनो दुनू भाँइ दू-देशाक सीमामे बन्हल छी।”

बिच्चेमे मुड़ी डोलबैत, स्वीकारैत बजलौं- “से तँ छीहे।”

जखने बजलौं ‘हँ छीहे’ कि जेना बाढ़िक पानिकेँ दोसर बाढ़िक पट-पेट भेट गेल होइ तहिना भरिसक भैयोकेँ भेलैन।

दुइए भाँइ रही, तँए भैया तरैंग कऽ नहि बाजैथ मुदा नजैरक रूखिसँ बुझि पड़ैत रहए जे मन तरंगल जरूर छैन। भैया बजला- “बौआ, कोनो समाजकेँ कहियौ आकि बेकतीकेँ, अपन संस्कार-संस्कृति होइ छइ।”

कहलयैन-

“हँ, से तँ होइते छइ।”

“बौआ, जहिना हम सभ साहित्य-संस्कृतिमे घेराएल छी, तहिना तोहूँ सभ छह, तँए...।”

भैयाक बातक भाँज तँ ठीकसँ मनमे नै चढ़ल, मुदा जेना अपन साहित्य आ अपन समाजक सुरता खिंचए लगल...।

बजलौं- “भैया, अखन अहूँ जहलक थाकल-ठेहियाएल छी आ हमहूँ धड़फड़ीमे छी, दस दिनक पछाइत अबै छी, तखन भरि पेट विचार करब।”



शब्द संख्या : 2265, तिथि : 19 अक्टूबर 2016

खतियाएल घर

बेरुका चाह पीब जीतू काका टहलैक सुर-सार करिते रहैथ कि छोटका बेटा आबि कहलकैन- "बाबू, अपना अछैते दुनू भाँइक ठौर लगा दैतिऐ तँ हमरा दुनू भैयारीमे आगू कहियो बद-विवाद नइ होइत?"

ओना जीतू कक्काक मुँहक पान फुला गेल छेलैन जइसँ अपन मन अपना मन्दिरमे पूजा करए चाहैत रहैन, तँए 'हँ-हूँ' बिना किछु बजने टहलैले विदा भऽ गेला।

टहलबो तँ जिनगीक जीबैक अनिवार्य शैली छीहे। जाबे मन नइ टहलत ताबे कोनो वस्तुक नीक-बेजाए परेख केना सकैए। कोनो प्रश्नक उत्तर दइसँ पहिने मनकेँ टहलब उचिते छी। हँ, एहनो प्रश्न जरूर अछि जइले मनकेँ टहलब जरूरी नहि, ओ गीरह-गाँठ जकाँ बन्हाएले रहैए। माने ई जे जँ अहाँकेँ कियो पुछए जे 'कए भाए-बहिन छी..?'

ई विचारैक कोन बात, बुझले अछि...।

सत्तैर बर्खक जीतू काका दस साल पहिने हाइ-स्कूलक हेड-मास्टरक पदपर सँ सेवा-निवृत्ति भेला। तकदीरगर लोक छला जे सेवा-निवृत्ति होइसँ पाँच बर्ख पूर्व नवका वेतनो आ पेंशनोक सुविधा भेट गेलैन। दुनू बेटो, हाइए-स्कूलक शिक्षक छैन। जे गद्दी–माने नवका वेतन–जीतू काका अन्तिम अवस्थामे पौलैन तइ गद्दीपर दुनू बेटाक जन्मे भेलैन।

जीतू कक्काक जन्म पाँच बीघा जमीनबला किसान परिवारमे भेल

छेलैन। पितोक लगन आ अपनो मगन जीतू काका बी.ए. पास कऽ हाइ-स्कूलक शिक्षकक गद्दीपर, बैसला। मुदा अखुनका चक-चकी नइ रहने जे कमेला ओ पिताकेँ हिसाब दिअ लगलखिन। समरस परिवार बनल रहलैन। सबहक अपन-अपन जिनगी अछि तँए सभकेँ जीवनोपन करइ पड़त। ओना, ने कहियो जीतू काका हाथसँ दरमाहाक रुपैआ गनि कऽ पिताकेँ देलखिन आ ने पिता कहियो जिज्ञासा केलकैन। भाय! परिवार छी, सबहक छी, हजारो क्रियाक बीच परिवार चलैए। ओही क्रियामे अक्रिया भेने कखनो ठमकबो करैए, कखनो तेजो गतिए चलैए आ कखनो उनैटियो जाइए। मुदा से नहि, जीतू काकाकेँ सन्तानक नाओंपर मात्र दूटा बेटा। मनमे एते बात, पिता बनला पछाइत जरूर घर कऽ नेने रहैन जे जखन साधारण पढ़ल-लिखल किसानक बेटा हाइ-स्कूलक शिक्षक पैदा करैक शक्ति सृजन केलक, तँ शिक्षककेँ केहेन बेटा पैदा करक चाही?

..अपन जिनगी जीतू काका पितेक जिनगीमे सटौने, मुदा बेटाकेँ पढ़ै-लिखैमे कोनो पितृ बाधा नइ होइ, विचारकेँ मनमे सटौने अपन जिनगी पार कऽ लेलैन।

सेवा-निवृत्ति होइसँ पहिनहि जीतू कक्काक जेठका बेटा सात साल पूर्व आ छोटका चारि साल पूर्व हाइए-स्कूलमे शिक्षकक नोकरी शुरू कऽ नेने छेलैन।

जेठ बेटाक नाओं रमानन आ छोट बेटाक नाओं कृष्णानन छिऐन। ओना, दुनू भाँइ एक हाइ-स्कूलमे नहि छैथ मुदा साइकिलसँ गामेसँ स्कूल अबै-जाइ छैथ। तीनू बापूत–माने जीतूओ काका, रमाननो आ कृष्णाननो छुट्टी–दिन छोड़ि बाँकी दिन सभ अपन-अपन धुइनक धुनकीसँ जिनगीक रूइया धुनै पाछू बेहाल रहै छैथ। भाय, बेहालो केना ने रहता, जहिना छोट-छोट बच्चाक संग जच्चा–बच्चाक सेवा सम भावे जरूरी अछि, तही लाटमे ने मतो-पिता छैथ, कुटुमो परिवार छैथ आ सरो-समाज अछि।

सबहक संग जलियाएल चुनमुनियाँ जकाँ समाजक जालमे पड़ले छी। जहिना माया-जाल, तहिना जमीन-जाल। खाएर जे छी, छी तँ अही गाम-समाजमे, रहितो एलौं, आगूओ रहैक अछि। भलैं ओकरा अयोधिया बना रही वा लंका, मुदा रहब तँ अही गाम-समाजमे। ओना, अयोधियामे दुतकारैवाली धोबिन सेहो ऐछे आ लंकोमे विभीषणो छैथे। मुदा, भाय एकटा बात कहि दइ छी, जइ विभीषणक चर्च केलौं अछि, ओ त्रेता युगक भेल, अखन द्वापर टपि अपना सभ कलयुगमे आबि गेल छी। तँए राम-लक्ष्मणक शक्ति कमलैन कि बढ़लैन से तँ नइ बुझै छी, मुदा रावणक शक्ति जरूर बढ़ल, एकरा हम मानै छी। कहब केना? त्रेता युगक लंकाक विभीषणकेँ अपन परिवार आ दियाद-वाद सहयोगी रहैन, ओना त्रेता युग तक–माने राम तक–साठिए कलाक जन्म सेहो भेल छल जे द्वापर जुगमे–माने कृष्णावतारक पछाइत–चौंसैठपर पहुँच गेल। अपना सभ ते सहजे तहूसँ टपि कलयुगमे छी। तँए वैचारिक क्षेत्र हौउ कि कार्यक्षेत्र, विभीषणक विभीषिका बढ़िए गेल अछि। माने ई जे परिवारक भीतर पुत्र-पत्नी तकमे वैचारिक आ कार्यक्षेत्रक दूरी बढ़ल जाइए। जइ बेवहारसँ अखन धरिक परिवार चलि रहल अछि, ओहू अधार आ आइक परिवेशमे जे पारिवारिक विचारो आ बेवहारोक अधारपर जे परिवार वा समाज उठि कऽ ठाढ़ भऽ चलत, ओ दुनूक बीच जाबे समावेशी नइ औत ताबे तँ खट-खुट हेबे करत। समावेशीक माने समावेश, सबहक अँटावेश।

पैंतीस-छत्तीस बर्खक रमाननकेँ पाँच सन्तान आ कृष्णाननकेँ चारि सन्तान भऽ चुकल छेलैन। बच्चासँ दस-बारहो बर्खक चेष्टगर बच्चाक जिनगीक भरण-पोषण परिवारक एक स्तरमे चलैत आबि रहल छैन। सत्तैर बर्खक जिनगीमे जीतू काका अखन धरि कहियो परिवारमे कोनो बेवहार-ले रक्का-टोकी नइ देखने छला। एकाएक जीतू कक्काक मन अपन बीतल अतीत–माने पिता-सोझक समय आ अपन वर्त्तमान–आइ

ओइठाम पहुँच गेल छैन, जे जइ चौबट्टीपर सँ रस्ताक फुटानौं होइए आ सटानौं होइते अछि। चौबट्टीपर चारिटा बाट रहैए तँए चारि लाइनिक सड़क सेहो अछिए।

आने दिन जकाँ आइयो जीतू काका गामक दछिनवरिया बाध–जे गामक चौबगलीक बाधसँ नम्हरो अछि आ उपजाउ सेहो अछि–तइमे भ्रमण करै छैथ। उपजाउ रहने बाधमे सभ दिन हरियरी बनले रहैए। जखने बाध हरियाएत तखने ने गामो हरियाएत आ गामक हवो हरियाएल रहत। से तँ दछिनवरिया बाधमे प्रकृति प्रदत्त अछिए।

..बाधक चारू भाग भ्रमण केलाक पछाइत रस्ता-कातक नीमक गाछ लग आबि बाधक जेते कीड़ी-फतिंगी देहपर चढ़ल रहै छैन, ओ नीमक गाछ लग अबिते सभ अपना-अपनीकेँ खेत दिस पड़ा जाइए। तैबीच नीमक गाछक निच्चाँक हवाक साँस दस बेर लाइए नेने रहै छैथ, तँए मन हृदयसँ पवित्र भाइए जाइ छैन। तैसंग समटल परिवार आ समटल परिवारक जिनगी, तँए परिवार-ले बेसी सोचबोक जरूरत तँ नहियेँ रहे छैन। बस एतबे ने सोचता जे औझुका दिन केहेन बीतल। काजक नापसँ चौबीसो घन्टा नापि लेब। काल्हि-ले काल्हि छइ। मुदा छोट-बेटा– कृष्णानन–क प्रश्न जीतू कक्काक मनकेँ मथए लगलैन। अपना जनैत कृष्णानन कोनो अधला नइ कहलक, मुदा नीके केना कहलक? ई तँ घटिया पुरुखक लक्षण भेल! बढ़िया पुरुख तँ ओ ने भेल जे जीरो बैलेन्सपर दौड़ैत चलए। जहिना रस्ता चलल बटोही रस्तामे केतौ बिलैम अपन रस्ताक हिसाब लगबैत तहिना जीतू काका आजुक उठल प्रश्नपर विचार करैक मन बनबए लगला।

जहिना भोरुका सपना भरि-रातिक सपनासँ बेसी जगताजोर होइए तहिना सौंझुका सपना सेहो रातिक लेल जगताजोर होइते अछि। जीतूओ काकाकेँ सएह भेलैन। भेलैन ई जे कृष्णानन जे पुछलक ओ केते

समीचीन अछि। जाधैर परिवारमे समीचीन विचार पनैप नइ चलत ताधैर परिवारमे विषमताक बीआ पनपबे करत। ओना, अखन धरि अबैत परिवारक बीच सेहो समीचीनता आबि रहल अछि, मुदा आजुक परिवेशमे जे नव-नव प्रश्न उठि रहल अछि ओइले तँ आइये ने समीचीनता परिवारमे बनबए पड़त। ओ तँ आजुक जे परिवार अछि ओइमे जे सदस्य छैथ हुनके बीच ने समीचीन बनबैक प्रयोजन अछि। कृष्णाननक प्रश्नक हिसाबसँ दूटा बेटा रमाननोकेँ आ कृष्णाननोकेँ, ओइमे समीचीनता अछिए। दुनू भाँइ हाइ-स्कूलमे नोकरी करिते छैथ, आधासँ बेसी माने खाइ-पीबैक, सम्हारिये दइ छिऐ, अपन कमाइ अपना हाथेमे छैन, अपना-अपना इच्छानुसार अपन-अपन बेटाकेँ पढ़ा लिअ। रहल बेटीक बात...।

रमाननकेँ तीन बेटी, कृष्णाननकेँ दू बेटी। एक बेटीक बिआह तीस लाखक। तीस लाखक बिआह हाइयो-स्कूलक शिक्षक आ कौलेजोक शिक्षक काइये रहला अछि। भैयारीक हिसाबसँ बँटवारा भेने रमानन तीस लाख तर पड़िये जाएत। भाए-बापकेँ की करक चाही? लगले मनमे उठि गेलैन जे एक पीढ़ीक दू परानी छी, जे पोखैरक घाटक सीढ़ी कहियौ आकि सरोवरक घाटक, आकि राजस्थानक पुष्कर घाटक सीढ़ी कहियौ, अपन परिवारक तँ अपने दुनू परानी वंशक घाटक एकटा सीढ़ी भेलिऐ। जखने एक सीढ़ीक घाट हएत तखने ओ एक रंग चाकर-चौरस बनबए पड़त। तँए परिवारमे बहुत लोक छैथ, मुदा अखन अपने दुनू परानीमे विचारक घाट बनबैक अछि।

घरसँ निकलबा काल माने टहलैले निकलैकाल जीतू कक्काक मनमे जे बोझ उठल छेलैन, घुमती बेर ओ जेना उतैर गेल छेलैन। तँए मन फुला गेल छेलैन।

..सोझे दरबज्जापर सँ निकैल कलपर गेला। हाथ-पएर धोइ दरबज्जापर पहुँचबे केलाह कि सुलोचना काकी चाह नेने पहुँच गेली।

पत्नीक हाथक चाह देखिते जीतू कक्काक अपन विचारक चाह जगि गेलैन। भाय, कोनो विचारीसँ जे कोनो विचार लेब तइले तँ विचारीकेँ अनुकूल बनाएब, तखने ने नीक विचार भेट सकैए। ..हाथसँ चाहक गिलास पकड़ैत जीतू काका बजला-

"चाहक रंग बड़ ढबगर अछि, अपने हाथक बनौल छी की?"

सुलोचना काकी रमणी छैथे। पुतोहुमे अपन रूप देखि बजली-

"अपन हाथक नइ रहत तँ की अनका हाथक रहत।"

विचारक दौड़मे सुलोचना काकीक विचार जेतए रहल होनि मुदा काजक वाह-वाही अपन सिर मढ़ि मुस्की तँ देबे केलखिन। मुस्की देखि जीतू काका समाधानक वाण छोड़ैत बजला-

"दुनू गोरेमे एकटा एकान्ती विचार करैक अछि। काजसँ निचेन भेलौं कि कौल्हक बरद जकाँ अढ़ाइ मोड़ बाँकीए अछि?"

एकान्ती विचार-दे सुनि सुलोचना काकी, लोहियामे चढ़ल दूध जकाँ तेना उधिया लगली जे ऐगला बात बुझबे ने केलैन। जेना जे काज जेतइ लटकल छल से काज तेतइ बन्न। बजली-

"गाइयक घरक घूरटा पछुआएल अछि। सब काज भऽ गेल अछि।"

टोकारा दैत जीतू काका बजला-

"चाह पीलौं?"

चाहक नाओं सुनि सुलोचना काकी बजली-

"अहीं दुआरे हाथ-पएर तँ धोइ लेलौं मुदा मुँहमे पानि कहाँ लेलौं।"

सुलोचना काकीक बात सुनि जीतू काका बजला-

"गप-सप्प की केतौ पड़ाएल जाइ छै, निचेनसँ करब। पहिने घूर केने आऊ। ताबे हमहूँ चाह पीब पान लगाएब।"

जहिना कोनो फलक अन्दाज मनमे एने रंग-रंगक कल्पना सपना बनि मनमे उठए लगैत, जइसँ चालि आ सोभावमे कनी-मनी विशेष गुण आबिये जाइत, तहिना सुलोचनो काकीमे दरबज्जासँ निकलला पछाइत आबिये गेल छेलैन। जे देखि दुनू पुतोहुओ ऑकि नेने छेली जे बुड़हा-बुड़ही किछु खानगी काज करता। मुदा भानसक बेर रहने दुनू पुतोहुक मनक विचार बेसीकाल टिकलैन नहि। टीकबो केना करितैन। जहिना हमरा सबहक परिवार छी माने दुनू भैयारीक, तहिना ने हुनको छिऐन। तहूमे एक सीढ़ीक दूरी अछि। अकास-पताल कहियौ कि पोखैरक पानिक महार कहियौ, दिशा भेद भेने रंग-रूप आ गुणक संग एकक दूरी आ दोसराक नगीची तँ आबिए जाइए। माने ई जे मानि लिअ सात घाटक पोखैरमे तेसर वा चारिम सीढ़ीपर छी, ऐठामसँ महार दिस, जेतए माटि अछि, चढ़ब तँ माटि नगीच हएत, मुदा जँ दोसर दिस बढ़त तँ पानियेँ ने नगीच हएत।

जीतू काका जहिना बच्चामे मुँहगर पढ़ैक चनचलता गुण पेब रहला, तहिना हाइ-स्कूलक नोकरीमे सेहो बनले रहला। वेदान्तक श्लोक सभ तेना बारीकीसँ पकैड़-पकैड़ गुणि-गुणि जिनगी सिरैज नेने छला, जे हाइयो-स्कूलमे मुँहगरी जीविते रहलैन। ओना, आन शिक्षक जकाँ ने हेडमास्टरक मुहेँ कहियो सुनलैन जे 'अहाँ समैयक महत् नइ बुझै छिऐ आ ने कहियो एको दिनक दरमाहा जुरमाना तरे कटौने छला। तेकर कारणो छेलैन जे जिनगीक पहिल काज विद्यालयक सेवाकेँ बुझैत छला। जे जीविका देने छेलैन, जइसँ अपन जीवनो जीबैत आबि रहल छला। ..पान लगा मुँहमे लऽ जीतू काका सुलोचना काकीक रस्ता देखए लगला।

सुलोचना काकी, जे सभ दिन मालक घरमे घूर करै छेली, जीतू कक्काक 'एकान्ती' शब्द सुनि तेना दलमला गेल छेली जे घूर लगबैयोमे धड़फड़ा गेली। धड़फड़ा ई गेली जे घूरक निचला तहमे पजरैबला आलन देल जाइए, बीचमे ठहराउ बनबैले दाब देल जाइए आ ऊपरमे चारूकात

पजारैले पसाही लगबैबला समचा देल जाइए, से उनटा-पुनटा सुलोचना काकीकेँ भऽ गेलैन। मुदा जिद्दयाहि तँ सुलोचना काकी छैथे, गोइठाबला तेहेन आगिक अँगोरा चुल्हिसँ निकालि घूरक बीचमे तेना कऽ रखि देलखिन जे जल्दीवाजीमे भलेँ नइ पजरइ, मुदा रहियो-सहि कऽ पजरबे करत, जे मिझाएत नहि। लटपटाइतो काज सम्हरले छेलैन। मुदा कलपर जे हाथ-पएर धोली तइमे भारी चूक भेलैन।

चूक ई भेलैन जे हाथ-पएर आ मुँह-कान धोइ-पोछि लेली मुदा सौंझुका जल पीबिये ने सकली। माने सुलोचना काकी 'एकान्ती' गप करैले तेते उताहूल भऽ गेली जे मने थीर नइ रहलैन। जहिना मनमे गरमी चढ़ैत रहैन तहिना पानि नइ पीने, पेटक गरमी सेहो जीविते रहैन। दुइये घोंट जहाँ चाह मुँहमे देलखिन कि मने चनैक गेलैन। हाथमे चाहक गिलास नेनहि जीतूकाका लग पहुँचली।

हाथमे चाहक गिलास देखि जीतू काका टोक देलखिन- "मुइलोपर जे धरमराजक दूत औत, तँ ओकरो कहबै जे कनी थम्हू, अखन हाथ काजमे लगल अछि।"

जीतू कक्काक बात सुनि सुलोचना काकीक मन आरो पाकल आम जकाँ फुइल गेलैन। फुलबो केना ने करितैन, एक दिन छुट्टी भेटलासँ तँ लोक सालक-साल काजक छुट्टी पेब लइए आ हमरा तँ दसो दिनक मोहल्लत तँ धर्मराजक दूत देबे करत किने। तैबीच केते जुग देखि लेब तेकर ठेकान अछि।

..चाहक अन्तिम घोंट पीबैत सुलोचना काकी जिज्ञासा करैत जीतू काकासँ पुछलखिन- "तखन जे किदैन कहए लगल छेलौं?"

सुलोचना काकीक जिज्ञसा देखि जीतू कक्काक मन बिहुँस गेलैन। बिहुँसबो केना ने करितैन। भाय, जिज्ञासुक ने ई दुनियाँ छी। जेतए जेते जिज्ञासा तेतए तेते दर्शन, जेतए दर्शन तेतए दृष्टि आ दृष्टिक सुचालि-कुचालि...।

अपन विचारकेँ तहियबैत जीतू काका बजला- “तखन जे कहने छेलौं जे एकान्ती करब?”

सुलोचना काकीक मन फेर धड़फड़ा गेलैन। धड़फड़ा ई गेलैन जे जहिना तखन एकान्तीए लग विचार अँटकल रहैन तहिना बीचमे फेर अँटैक गेला! बिच्चेमे सुलोचना काकी पाकल मालदह जकाँ टभैक गेली-

“सएह तँ हमहूँ विचारै छेलौं।”

जीतू काका- “देखिते छी जे गाममे अपनासँ बेसी उमेरगर लोकक धवाहि लगिते केते अपने उमेर आ अपनासँ कमो उमेरक जाइए रहल अछि, तखन की अपने दुनू परानी खुट्टा गाड़ि कऽ रहब।”

जीतू कक्काक विचारक धारमे सुलोचना काकी भँसिया गेली। बजली- “से तँ नहियेँ रहब।”

तैपर जीतू काका कहलखिन- “अपना अछैते दुनू बेटाकेँ सम्पैतक खल लगा दैतिऐ।”

अपन माथक मोटरी झँकैत सुलोचना काकी बजली- “अहाँ किछु छी तँ पुरुख-पात्र छी। अहीं ने पुरुखाह घर बनाएब बुझब। हम तँ अहाँक संगी छी, जे कहब से करब।”

जीतू कक्काक मन मानि गेलैन जे पत्नी पतिव्रतक लेल केतौ बाधा नहि छैथ। मुदा अपना संगे तँ समाजक अनेको जाल लगले अछि। किछु सुजालो अछि मुदा कुजाल नइ अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। परिवारमे जेठाँस हिस्सा जन-गणक जिनगीक हिसाबसँ नहि, भाए-भैयारीक बीचक प्रश्न, इत्यादि-इत्यादि अनेक प्रश्न अछि।

❑

शब्द संख्या : 2057, तिथि : 09 नवम्बर 2016

बात-कथा सुनौलक

आसीन मास, सोहनगर मौसम। आन सालसँ भिन्न मासक रूप-रंग। रूप-रंग भिन्न होइक कारण ई जे एबेर आन साल जकाँ ने सौने-भादोसँ लाधल अबैत बरखा लधाएले रहल आ ने धुरिया सौन पकैड़ धुरा उड़बैत भादोक संग पुरैत धुरियाएल रहल। ऐ दुनूसँ भिन्न ऐबेरक आसीनक चुहचुही अछि। चुहचुहीक कारण ई अछि जे सौन-भादो रौदियाएल रहल जइसँ बरखा ॠतुक कोनो लक्षण मासमे ऐबे ने कएल। ओना, शंकरपुर-गामक जे धनहर खेत अछि ओ जेना-तेना अबाद जरूर भेल मुदा किसानक लाख मेहनतोक बावजूद आन सालसँ फसिल दब अछि।

संयोग नीक बनल। मौसममे सुधार भेल। सुधारक कारण भेल जे दुर्गापूजाक शुरू होइसँ एक दिन पहिने झमकौआ बरखा भेल। जइसँ जरलो खेत सभ जे छल जइमे पैघ-पैघ दरारि फाटि गेल छल, तहू सभमे बीत भरि पानि लगि गेल। जहिना कोनो रोगीक देहसँ दुख निकलला पछाइत देह फौदाए लगैत तहिना धानक फसिलकेँ भेल। ओना किछु किसानक फसिल जिनका पटबैक गर नइ लगलैन ओइ खेत सबहक धान आधा-छिधा जरि कऽ सुखियो गेल आ आधा-छिधा बँचबो कएल अछि, ओहो धान सभ अधबेसुओमे बिआन करैत एकसँ दू-तीन-चारि-पाँच जरूर भेल मुदा जइ धानक पटबी समय-समय पर होइत गेल, ओकर तँ सेखीए बदैल गेल। जेना बुझिए ने पड़ैत जे रौदीक मारल धान छी।

ओना, ओहू खेतक धानकेँ बीत भरि पानि जड़िमे लागल रहने जेना समुचित वृद्धि होइत तेना तँ नहियेँ, मुदा तैयो ओहन रंग-रूप तँ बनियेँ गेल अछि जे धानक सुभर उपज हेबे करत। ओना जखन असिनी-कतिकी धान नइ होइ छल, भदइक रूपमे गद्दैरो आ आँउसो-गम्हरीक खेतीक संग असिनी-कतिकी धानो होइ छल, तहियो हथिया नक्षत्रमे लाठीक हूर गड़बसँ किसानकेँ संतोख होइते छेलैन जे अगहनी धान हेबे करत, मुदा ऐबेर तँ खेतमे सहजे पानि लागल अछि। तखन तँ यएह ने हएत जे बिलमसँ अनुकूल समय पकड़ने थोड़े बिलमसँ हएत। मुदा हएत, ई बिसवास तँ किसानक मनमे जनमियेँ गेल छैन।

तीन दिन पहिने दुर्गापूजा समाप्त भऽ गेल, मुदा पीठपर कोजगरा पछुआएल अछि, परसू हएत। आन गामसँ आएल कुटुम-परिवार आ परदेशसँ आएल परदेशिया, किछु-किछु चलियो गेला आ किछु-किछु बाँकियो तँ ऐ दुआरे छैथे जे कोजगरा पुरिये कऽ जेता। ओना आन सालसँ भिन्न ऐ बेरक दुर्गापूजामे शंकरपुर-गामक रौहानी रहल। रोहानीक कारण भेल जे जइ अनुपातमे गामक किसानक मुँह मरियाएल छेलैन, रौदी भेने तइ हिसाबे गामक धीओ-जमाए आ गामक नवयुवकोकेँ कोलकाता, आसाम, बंगलोर, मुम्बै, दिल्ली इत्यादि शहरमे नोकरीक परसादे नीक आमदनी तँ भाइए गेल छैन। जेकर फल भेल जे दुर्गापूजासँ पहिने केते खबैर पूजा कमिटीकेँ पहुँच गेल छेलैन जे हमरा दिससँ मुरती क खर्च रहत तँए आन सालसँ बीस हेबा चाही। तहिना नाचो-तमाशाक भेल। तँए दुर्गापूजाक नीक आयोजन तँ भेबे कएल।

दोसर साँझ, लालकाकी अँगनाक उतरवरिया ओसारपर बैस कानए लगली। दिन भरिक काज सम्पन्न केलाक पछाइत, कलपर हाथ-पएर, मुँह-कान धोइ, पानि पीब लोटामे पानि नेने लालकाका दलानपर अबैत रहैथ कि लालकाकीक कानबो सुनलैन आ उतरवरिया ओसारपर बैसलो देखलैन। मुदा टोक-टाक नइ देलखिन। टोक-टाक नइ दइक

कारण रहैन जे दुपहरियामे बँगला उपन्यास–हुमायूँ अहमदक–'नंदित नरके'क रामलोचन बाबूक मैथिली अनुवाद पढ़ने छला, जइमे मंटूकेँ फाँसीक आदेश भेल। ई विचार लालकक्काक मनकेँ घेरने रहैन जेकर निराकरण करैक विचार मनमे घुमैत रहैन। ओना, सौंझुका चाह पीला पछाइत नीक जकाँ विचारता, जे नइ पीने छला। ओ तँ दरबज्जापर पहुँचला पछाइत हेतैन। तइ बिच्चेमे लालकाकीक कानब सुनलैन। मुदा ई बात तँ लालकाकाकेँ बुझले छैन जे जखन कोनो स्त्रीगण कनै छैथ तखन कानबक बीच घौना सेहो करिते छैथ।

लालकाकी सेहो कनबो करै छेली आ घौनो करै छेली। घौनाकेँ अकाइन लालकाका चुपे रहब नीक बुझलैन।

लाल कक्काक जेठकी पुतोहु चाह बना नेने छेली जे लालोकाकी देखने छेली। कानब बन्न कऽ चाहक गिलास नेने लालकाकी लालकाका लग पहुँचली। कानब तँ बन्न कऽ नेने छेली मुदा आँखिमे नोर ढबकल रहबे करैन।

पतिक हाथमे चाहक गिलास पकड़ा लालकाकी आगूमे ई सोचि ठाढ़ भेली जे दू-चारि घोंट चाह जखन पीब लेता तखन बाजब। मुदा से भेल नहि, एक घोंट चाह पीब लालकाका बजला-

“भोर आकि साँझक कानबक महत् बुझै छिऐ, जे अनेरे कानै छेलौं?”

लालकाकीक मनमे जे विचार घुरियाइ छेलैन, से बात नहि उठि दोसरे बात लालकाका उठा देलकैन। तँए लालकाकी तारतम करए लगली। भेल ई छल जे दुर्गापूजा बीतलाक तेसर दिन परिवारक संग माझिल बेटा गामसँ अपन कर्मस्थल, जे गामसँ चालीस किलोमीटर हटल अछि, टेम्पूसँ जाइ छलैन। रस्तामे टेम्पूक ड्राइवर धकचुका गेल जइसँ गाड़ी पलटी मारि देलक। दिनेशक सभ परिवारक संग ड्राइवरो गाड़ीसँ

खसि पड़ल। ओना, छह गोरे गाड़ीमे सवार छला, जइमे चारि गोरेकेँ किछु ने भेलैन, साधारण चोट-चाट लगलैन। मुदा दू गोरेकेँ विशेष चोट लगने जख्मी भेला। ड्राइवरकेँ लहेरियासराय अस्पताल पठौल गेल आ दिनेशक जेठकी बेटीक पएर टुटि गेल, जेकर इलाज निरमलीए-मे हुअ लगल।

मोबाइल-जुग भेने एते तँ सुविधा भाइए गेल अछि जे पाँच-दस मिनटमे केतौ-सँ-केतौ समाचार पहुँच जाइए। घटनाक पाँचे मिनटक पछाइत लालकाकाकेँ सेहो जानकारी पोताक-मुहेँ भेटलैन। समाचार सुनिते पोताकेँ पुछलखिन-

"केना की घटना भेल?"

पोता कहलकैन-

"मझिला काका कहला जे घटना तँ भेबे कएल मुदा क्षति बेसी नइ भेल। तँए कोनो बेसी चिन्ता करैक नइ अछि।"

समाचार सुनि लालकाका बजला-

"अपना नजरिये देखि लेब, बेसी नीक हएत, तँए तूँ जा कऽ देखि आबह।"

पोता कहलकैन-

"काका मनाही कऽ देलैन जे अबै-तबैक काज नइ अछि।"

पोताक बात सुनि लालकाका बजला-

"बड़बढ़ियाँ।"

मुदा मनमे नाचि उठलैन जे एक समझदारक समझदारी भेल। जँ अपन परिवारक भार अपने केने निपैट ली तँ ओ बेसी नीक भेबे कएल। परिवार छिऐ, जखने कोनो क्षतिकेँ नमहर करि कऽ बाजब तँ ओ लोकक मुहेँ तेते नमहर भऽ जाएत जे अनेरो असथिर मनकेँ लहरा देत। मुदा

जखन कोनो क्षति भऽ गेल तँ ओकर पुरती केना हएत, तइ दिस अपनाकेँ लगाएब अछि। ओना, लोकोक मुँह मुँहे छी। झूठो बातकेँ ताड़क गाछसँ नमहर सत् बना देत आ ताड़ो गाछसँ नमहर सत्-केँ फूसि बना देत। खाएर जे बनबए...। पोताक मुँहक बात सुनि लालकाका अपने-मुहेँ दिनेशसँ हाल-चाल बुझैक विचार करैत बजला-

"मोबाइल लगाबह, कनी अपनेसँ समाचार बुझि लेब।"

पोता कहलकैन- "ड्राइवरकेँ बेसी चोट लगल छै, ओकरे उठा कऽ अस्पताल लऽ गेला।"

अपनो मन लाल कक्काक मानि गेल जे एते तँ जानकारी भाइए गेल अछि जे कम क्षति भेल। अखन जँ मोबाइलसँ समाचार बुझौ चाहब तँ या तँ दिनेश मोबाइल उठेबे ने करत या जँ कोनो हलतलबी काजमे लागल हएत, माने दिनेशो तँ प्रैक्टिश करिते अछि, तैबीच बाधा ठाढ़ करब नीक नहि। दोहरा कऽ गप-सप्प लालकाकाकेँ नहि भेलैन। बेसी जरूरियो बुझब मनमे नहियेँ रहैन। तइ बीचमे दिनेशेक पत्नी दियादिनीकेँ फोन कऽ घटनाकेँ तीन-चारि गुणा बेसी करि कऽ कहि देलखिन। कोनो दुखकेँ छोट करैत मेटौल जा सकैए। जँ बढ़ा देबै तँ ओ बढ़बे करत। ओना, सुपात्र आ कुपात्रक भेद लालकाकाकेँ बुझल रहबे करैन, तँए मनमे कोनो उतबल नहियेँ उठलैन। मुदा परिवारोमे लैंगिक धारा तँ चलिते अछि। पुरुख पात्र वृक्ष सदृश डारिक महत् बुझैए जे गाछक सभ शीलमे फड़ नइ फड़ैए, मुदा किछु फल तँ ओहन ऐछे जे शीलोमे फड़िते अछि। तँए पुरुख पात्र पुरुख पात्र, दिस झूकल रहै छैथ। मुदा नारी पात्र नइ छी सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। नारीक सिनेह पात्रसँ अधिक होइते अछि। लालकाकीकेँ ऑखिक देखल पहिलुका एकटा घटना नैहरक देखल छेलैन जे एकटा बारह-तेरह बर्खक लड़कीकेँ बामा टाँग टुटि गेल। गरीबीक चलैत ओ डॉक्टरी इलाज नइ करा सकल। झाड़-फूक, जड़ी-बुटीक इलाज करौलक। जान तँ बँचि गेलै मुदा नाँगर भऽ गेल। जइसँ बिआह नइ

भेलइ। बिआहक लड़की चुनैक ई पद्धति अछि जे किछु जातिक बीच लड़की देखि बिआहक चलैन अछि तँ दोसर दिस किछु जाति एहनो तँ छैथे, जइमे लड़की देखैक चलैन नइ अछि। जइ जातिमे लड़की देखैक चलैन छै तइ जातिक ओ लड़की छल, तँए बिआह नइ भेलइ। ओना, ऐठाम परिवारक समस्याक प्रति चर्च अछि तँए बिआहक की पद्धति नीक आ की अधला, तैपर विचार करैक नहि अछि। ..लालकाकीकेँ ओ लड़की माने नैहरक लड़की, तेना मनकेँ ममोरि कऽ मोड़ि देने छेलैन जे मनकेँ बेकाबू कए देने रहैन। बोम फाड़ि लालकाकी लाल कक्काक आगूमे कानए लगली।

कानब सुनि जँ धधड़ाकेँ तत्काल शान्त नइ कएल जाएत तखन की कएल जाए। तहूमे अक्लबेर अछि। माने साँझ आ भोरककेँ अक्लबेर कहल जाइए। जहिना भोरुका सपना साकार करैले बारह घन्टाक सूर्ज उगल दिन रहैए तहिना ने सौंझुका सपना-ले भरि राति ऐछे, भलेँ ओ अन्हरियामे अन्हार आ इजोरियामे इजोते किए ने होइ। अखन भानस-भातक बेर अछि, जखने सौंझुका नढ़ियाक एकटा आवाज निकलैए तँ कात-करोटक नढ़िया सेहो आवाज निकालबे करैए। ई तँ कानब छी, पसाही जकाँ लगले हवामे उधिया जाएत। तँए ओइ हिसाबसँ ने कानबकेँ रोकल जा सकैए...।

लालकाका पोताकेँ कहलैन-

“मझिला काकाकेँ फोन लगाबह।”

पोता फोन लगबए लगलैन। एमहर गदह करैत लालकाकीकेँ देखि लालकाका कड़ैक कऽ बजला-

“भागत ऐठामसँ की नहि!”

मोबाइलसँ सम्पर्क बनैमे किछु बिलम भेलैन। तैबीच लालकाकी लाल कक्काक लगसँ हटि ऑंगन दिस कनैत भगली, जेना घरसँ

लालकाका निकालि देने होनि, तहिना मनमे नाचए लगलैन। दरबज्जापर सँ निकलैत कनैत लालकाकी बजली-

“कोन असोच जतरासँ ओ सभ आएल..!”

आगूक बात लालकाकीक पेटमे जे रहल होनि मुदा मुहसँ एतबे दरबज्जाक सीमानपर निकललैन। ऑॅगन पहुँचते लालकाकी दुनू पुतोहुपर अपन दुखक झाड़ झाड़ैत दमैस कऽ बजली-

“यएह सभ बात-कथा सुनौलक!”

लालकाकीक मुहसँ निकलल ‘असोच’ शब्द लाल कक्काक मनकेँ हौंर देलकैन। मनमे उठलैन- की दिनेशक सोचमे कमी रहल जे गाम आएल? की समाजक बीच कएल कीर्ति-कीर्तिमानकेँ बिसैर जाए? परिवारकेँ बिसैर जाए? अपन कएल दुर्गापूजाकेँ लोक अपने बिसैर जाए? शुरूक बीस बर्ख जेकर अपन परिवार सामाजिक कीर्ति बुझि करैत आएल। बाप-दादाक कएल कीर्तिकेँ अपने ओ जखन छोड़ि देत तखन ओइ कीर्तिक की महत् रहत? ओहने ने हएत जे रचनाकारक रचना अपने परिवारमे हेरा जाए..! जँ अपने हेरा देब तखन अनका केते जरूरत छै, से तँ अपने ने बुझब।

..यएह सोचि ने दिनेश सपरिवार साले-साल दुर्गापूजामे गाम अबैए, तइमे ‘असोच’ भेल की ‘सोच’ ई के बुझत? मुदा विचारैत-विचारैत लाल कक्काक मन असथिर भेलैन। तैबीच लालकाकी अँगनमे झौहैर मचा देलैन। ऑॅगनक झौहैरक आवाज दरबज्जो दिस बढ़ए लगल। अपन विचारकेँ रोकि लालकाका चौकीपर सँ उठि कऽ ऑॅगनक मुँहथैरपर जा त्रिभुजक अकारमे किनछिया कऽ ठाढ़ भऽ कनसोह लिअ लगला। त्रिभुजक एहेन अकार बनौलैन जे लालकाकीक नजैर तखन पड़तैन जखन ओ पाछू उनैट तकती। मुदा पुतोहुक नजैर त्रिभुजक ऐगला रेखापर पड़ैत रहैन। मनक जे विचार पनैप गेल छेलैन जे भलमानुस

परिवार सेवक बनि, नीक-बेजाए काजकेँ देखैत दिन-राति जे (माने पत्नी) एकबट्ट केने रहै छैथ, माने जहिना काजक दिन छी तहिना ने काजक रातियो छी। मुदा से तँ करब असानो नहियेँ अछि। तइले तँ अपन बाड़ी-फुलबाड़ी बुझए पड़ै छइ। पढ़ल-लिखल, पुतोहु सासुक कृर्ति-वृर्त्तिक चित्रकेँ कोन रूपेँ देखि रहल छैथ, ओ तँ विचारए पड़त। परिवारक बीच जिनका जेते काजक भार अछि ओ सीमित दायरामे अछि, जँ से नइ रहैत तँ बेकारी नइ रहैत। तइमे अहाँ अपन काज सासुक माथ थोपि देब तखन अहाँ अपनो-जोकर काजसँ जँ देह चोराएब, तँ परिवारमे चोरि हएत की नहि। ओहिना नइ ने कबीर बाबा नाचि-नाचि-गाबि-गाबि खौजरीपर कहै छेलखिन- 'तोरा संगेमे चोर..!'

परिवारक प्रतिष्ठा बुझि पुतोहुक कानमे जे खबैर मोबाइलसँ दोसर दियादिनी पठौने छेलखिन ओ स्पष्ट करैत दुनू दियादिनी अपनाकेँ पाक-साप केलैन।

लालकाका मने-मन सोचलैन जे जैठाम सबहक बीच, माने दुनू पुतोहुक आ सासुक बीच कहा-कही हेतैन, तइमे की कएल जाए? मनमे अबिते लालकाका गमैया पनचैती करैत लालकाकीकेँ कहलैन-

"भरि राति झगड़े करैत रहब आकि चाह पीएलौं, पानो खुआएब?"

लाल कक्काक बात सुनि लालकाकी अपन पनचैती भेले बुझलैन। ऑगनक ओसारसँ दरबज्जा दिस बढ़ली। ओसारपर सँ लालकाकीकेँ सहैटते लालकाका आगू बढ़ि अपन जगहपर आबि बैसला। तही बीच दिनेशसँ सम्पर्क भेलैन। माने मोबाइल लगल। पोताकेँ पंच मानि लालकाका कहलखिन-

"मझिला काकाकेँ कहक जे ऐठाम दादी-बाबा सहित सभ-कियो छी। केना की घटना भेल?"

समझदारीक समझदार जकाँ दिनेश बाजल- "ड्राइवर धकचुका

गेल, जइसँ गाड़ी पलटल। अपन परिवारमे एक गोरेकेँ पएरमे कनी चोट लगल छइ। सभ डेरेमे छी। ड्राइवरकेँ लहेरियासराय जाए पड़लै।”

दिनेशक समटल विचार सुनि लालकाका लालकाकीकेँ हूथकारी दैत कहलखिन-

“अहीले अहाँ एते आफन तोड़ै छी!”

जेना जेठमे तबल धरतीमे जँ बाढ़ि वा बर्खाक-पानि पड़ने धरती सुगन्धित भऽ उठैए तहिना लालकाकीकेँ भेलैन। लाल कक्काक मन लगले उनैट मंटूक फाँसीपर पहुँच गेलैन। फाँसी केतए हेबा चाही, बुझिये ने पेब रहला अछि।



शब्द संख्या : 1889, तिथि : 15 नवम्बर 2016

अनका बेर ओंघी

बड़का भोरेसँ, बड़का भोर भेल तीन बजे जे रातिक तीन बजेक सीमान सेहो छी, मनोहर बाबा अड़ना साँढ़ जकाँ ढेकड़ए लगला। ढेकड़ैक कारण भेलैन मनक छिनाएल काज...।

ओना ओछाइनसँ उठि हाथ घोइ कऽ मनोहर बाबा चाह बनबैत रहैथ, तँए अड़ना साँढ़ जकाँ चौगामा आवाज तँ मुहसँ नइ निकलैन मुदा अपन परिवारो आ लगक पड़ोसियो सभ सुनैत रहैन। ओना, समाजक किछु लोक एहेन छथिए जे मनोहर बाबाकेँ कर्मक साँढ़ सेहो कहै छैन। कर्मक साँढ़ ओ भेला जे अपन मनोनकूल जिनगीक रूटिंगमे चलै छैथ।

मनोहर बाबाक घरसँ सटले पच्छिम अपन घर अछि। तहूमे पुर्बाक सिहकी सेहो चलिते अछि, तँए मनोहर बाबाक बाजब कान तक पहुँचैत रहए। मुदा शब्द साफ नइ बुझि पबैत रही। मनमे उड़ी-बीड़ी जकाँ हुअ लगल। अखन मनोहर बाबाक रूटिंगक हिसाबसँ, प्रभात-वेल रहने मनन-चिन्तनक छैन, तखन किए बाजि रहला अछि? ओछाइनपर सँ उठि, पएर दबैत चुपे-चाप मनोहर बाबाक कोठरीक मुँह लग पहुँचलौं आ कतवाहिमे ठाढ़ भऽ केबाड़क फाटमे कान सटेलौं।

..जेना कियो बेर-विपैत पड़लापर घौना कऽ-कऽ घुघिंया-घुघिंया कनैत तहिना बुझि पड़ल। आरो केबाड़क फाटमे कान सटेलौं तँ आरो स्पष्ट आवाज आबए लगल-

“अनका बेर ओंघी!”

मनोहर बाबाक रूटिंग भंग जिनगी देखि केबाड़ ढकढकेलौं। मनोहर बाबा बजला-

“जगले छी, केबाड़ खुजले अछि, आबह।”

मनमे भेल जे पहिने बाबाकेँ मन मधुआएब जरूरी अछि। किए नीन तोड़ि कड़कल छैथ...।

केबाड़ खोलि भीतर पहुँचते बजलौं-

“बाबा, अहाँक पुरान हड्डी भेल, पुर्वाक सिहकी सिरसिरबैत हएत, मुदा हमर तँ असल आनन्दक समय छी किने। माने अठबजिया उठनिहार छी।”

पहुँचैसँ पहिने, केबाड़ सटा मनोहर बाबा चाहक चुल्हि पजाइर चाह बनबैत रहैथ। अपना तँ बुझले अछि जे मनोहर बाबा दू बजे रातिमे ओछाइनपर सँ उठि मुँह-कान-हाथ-पएर धोइ भरि छाँक पानि पीब, चाह बना मन भरि पीब मनक संग जिनगीक मनमौजमे लगि जाइ छैथ, तँए कोनो नव गप नइ बुझि पड़ल। मुदा पोखैर हौउ आकि इनार, पानि रहितो धारक पानि जकाँ थोड़े धरधराइत चलैए, ओ तँ असथिर रहैए। हँ, जखन ओइमे माने पोखैर-इनारमे कोनो भरिगर वस्तु फेकल जाइ छै तखन लहैर उठैए आ ताधैर लहरैत रहैए जाधैर असथिर नइ भऽ जाइए। तहूमे जेना मनक टोकारा देलिऐन तेना ‘हँ-हूँ’ किछु ने बजला, ईहो तँ कोनो कारणक घर भाइए सकैए। आब जँ फेर दोहरा कऽ किछु बाजी आ जँ मनक प्रतिकूल पड़तैन तखन तँ आरो गड़बड़ हएत, तँए लगमे आबिए गेल छी, मनमे जे हेतैन से बजबे करता। जानियेँ कऽ बाबाक घुन-घुनी सुनि एलौं, जँ पुन-पुनी सुनने बिना चलि जाइ, सेहो तँ नीक नहियेँ हएत, तँए बाबाक पँजरामे बैस चुल्हिक आगि तापए लगलौं। तहूमे जाड़क आगमन, ओ तँ भोरहरबेसँ ने अपन पएर पसारत, तँए आगिक तृष्णो ऐछे...।

पोखैरक लहैर जकाँ मनोहर बाबाक मनक लहैर सेहो कम हुअ

लगलैन, जइसँ अपने मने बाबा जे सुनैत होथु, मुदा मुँह नहि फुटने अपने किछु ने सुनि पबैत रही, जे गुनितौं। तँए कोनो सुनि-गुनि रहबे ने करए। ओना बाबाक मनक लहैर अपन विचारसँ कमैत रहैन आकि हमरा सोझा पड़ने कमलैन, से बुझिए ने पेबैत रही। किए तँ एहनो भऽ सकैए जे बेरपर, घाट परक छबड़ा जकाँ जे पानिमे पैसिते पड़ा जाए, फेर हुअए जे जँ एकटा छबड़ा पड़ा जाए आ दोसर कतला चलि आबए, तखनो तँ मनक लहैर कमिते अछि। मनोहर बाबाक मनमे जे होइत होनि मुदा अपना मनमे कोनो रस्ते ने सूझए। मुदा कोनो कि आइए बाबा-लग बैसल छी, जे कियो देखबो करत तँ मनमे कोनो शंका थोड़े हेतइ। सभ दिन तँ नहि, मुदा बेसीकाल एकठाम बैस दुनू गोरे देश-दुनियाँक चर्च करिते छी।

तैबीच बाबा चाह छानए लगला। दू कपमे देखि मन मानि गेल जे अपना संग हमरो हिस्सेदार बना चाह छानि रहला अछि। मुँह-कानमे पानियोँ ने नेने रही, बजलौं-

“बाबा, कलपर सँ कनी मुँह-कान धोने अबै छी।”

मुस्की दैत बाबा बजला-

“तोहर ओछाइन छोड़ैक बेर छह आठ बजे दिन, अखन अढ़ाइ बजैए, तोरा-ले अखन तरतरौआ राति अछि, तखन अनेरे किए ठंढामे कलपर जेबह। पानि पीबैक मन छह तँ, लोटामे अछिए पीब लएह।”

बाबाक बात सुनि मनमे कोनो कुवाथ नइ भेल, कुवाथो किए होइत, कोनो कि हमहींटा एहेन छी जे बिना मुँह-कानमे पानि नेनहि चाह पीब आकि हमरा सन-सन आरो छैथ। हँ ई बात जरूर जे मुँह-कान पवित्र भेला पछाइत चाहो पीब पवित्र होइतो अछि आ लगबो करिते अछि। मुदा एकठाम रहने, खेने-पीने, एकरंगाह काज केने सम्बन्धमे प्रगाढ़ता अबिते अछि। की बाबा नइ बुझै छैथ, जे हम तेहाला भेलौं। परिवारमे जँ किछु परिवारक सदस्यक संग भेल होनि, ई तँ वएह ने बजता। तेहाला

होइक नाते जहाँ धरि सम्भव हएत तहाँ समरूप बनबैक परियास करब। तैठाम जँ चलाकी करता जे परिवारक बात छी, आन परिवार कियो किए बुझत। तहूले हमर कोन दालि गलि जाएत, भाय जँ अपन परिवारकेँ इज्जतदार बुझै छी तँ इज्जतदार जकाँ बना निमाहौ पड़त किने। मुदा ओ असान थोड़े अछि। समाजक धारमे परिवार वहैए, आइक परिवेशमे समाजक बीच एते प्रदूषित वायुमण्डल भऽ गेल अछि जे धुँआसँ भरि गेल अछि, तैबीच नीक-अधलाकेँ बेरा लेब, बाल-बोधक खेल थोड़े छी..?

मने-मन मनोहर बाबा जे सोचैत-विचारैत होथि मुदा हम अखनो तक अग-दिगेमे छी, जे की केने नीक हएत आ की भेने अधला हएत। परिवारक बीच जँ कोनो तेहेन बात हेतैन तँ ओ अपना परिवारमे समीचित बना लोथु मुदा हम तँ तेहाला समाज भेलौं, ओना दियादियो अछि, मुदा से अछि सराधे-बिआह धरि।

चाह पीब पान खाइते जेना मनोहर बाबाक मन पनफूल गेलैन। बजला-

"आइ सामाक राति छी।"

चाह-पान परक मन फुहर रहबे करए, बजा गेल-

"एह बाबा, बारह बजे धरिक राति खेलेमे कटि गेल!"

हमर बात जेना बाबाकेँ नीक लगलैन तहिना भूखल बटोही जकाँ बजला-

"से की?"

बाबाक बात सुनि मन चौंकल। अनेरे सामा-चकेबाक खेलमे ओझराए चाहै छी। अखन की चारवाक औता बाबाक समैयक मूल्य छैन तैठाम जँ काजक समय बाधित भेल होनि ई तँ विचारणीय विषय अछिए। मनक विचारकेँ मनेमे धकलैत बजलौं-

"बाबा, अखन भोरुका राति छी, तहूमे बारह बजे राति तक खेलेमे

बीतल, मुदा अहाँ..?"

एकाएक मनोहर बाबाक मन असथिर हुअ लगलैन। नीक जकाँ मन असथिर भरिसक भेलो ने रहैन। बजला-

"जिनगीक सभसँ अमूल्य धन अमूल्य मनक अमूल्य समैयक उपयोग छी।"

बाबाक बात नीक जकाँ बुझबे ने करैत रही तँए मन घुरिया लगल। बाबाकेँ धोखा भेलैन। धोखा ई भेलैन जे नीनक आगमन बुझि पड़लैन, तँए टारैत बजला-

"सुतबो जे छी, ओहो आनन्दक घर छीहे, जेहेन हल्लुक नीन तेहेन भरिगर सपना आ जेहेन गढ़गर नीन तेहेन स्वर्गक सुख तँ होइते अछि।"

ओना मन पहिलुका विचार अमूल्य तन-मन आ धन दिस ओझरा गेल रहए, तँए बाबा जे नीकक खियालसँ बजला से नीक नइ लागल। नीक नइ लगैक कारण भेल जे विचारक ओइ धारमे मन घुमए लगल जे जेकरा जइ धारकेँ मोनि बनबैक लूरि हेतइ ओ ओते ने जीअलगर धार भेल। सोझे कोसी-कमला आकि गंगा-बागमती कहि देने तँ नइ हएत। चारूमे ईहो ने देखए पड़त जे बागमतीक धार असथिरसँ बहैए, तैसंग मोइनो बनबैक लूरि नै छइ। तैठाम तँ कोसीकेँ मोनि बनबैक लूरि छइहे, तँए वएह ने कमलोक संग मिलि मोनिफोरिया धार कहौत।

..हँ-हूँ किछु ऐ दुआरे नइ बजलौं जे अखुनका समय जे बाबाक छैन, ओ अपन नहियेँ अछि। मुदा बाबा जँ सोझरा कऽ कहितैथ जे जीवनक लेल सुतब अनिवार्य अछि, आ ई समय नीनियाँ देवीक पूजाक छी, जे पूजाक वस्तु भेल ओ आनन्दक केना हएत। आनन्द तँ पूजाक पछातिक अवस्था छी। मुदा मन मानि गेल छल जे जेते समय बाबाक विचार बुझैले बना चलल छेलौं तेते समय बीतत, उठि कऽ विदा भऽ जाएब। भाय कियो अपना रूटिंगे चलैए।

गुम-सुम देखि बाबा बुझि गेला जे भरिसक महेन्द्र अकछा रहल अछि। तैसंग ईहो चेतलैन जे हमर कानब सुनि ने महेन्द्र आबि नोर पोछए चाहलक। बजला-

“भरदुतिया दिन, परिवारमे विचार भेल जे भोरमे दू बजे जे बाबा अपनेसँ चाह बनबै छैथ, से किए ने भनसिये, जे बारह-एक बजे राति तक जगले रहै छैथ, भलैं जे पसिनगर काजमे बितैत होइन। जखन गैस चुल्हि भेल तखन दस मिनटक काज चाह बनाएब भेल, थर्मश छैन्हे, जइमे सात-आठ घन्टा चाह चाहक अवस्थामे रहैए। बना कऽ ओसारक खिड़कीपर रखि देती।”

बाबाक विचारक धारमे अपनो भँसिया गेलौं। बजा गेल-

“ई तँ उत्तमो-मे-उत्तम भेल। सबहक जिनगी सेहो सुढ़ियाएल चलत आ परिवारमे केतौ रग्गा-दोगी, माने चलैकाल जे ऍंड़ी-दौड़ी लगै छइ, सेहो नइ लगत।”

अपना जनैत नीक बात बजलौं मुदा से बाबाकेँ अधला लगलैन। अधला लगैक कारण भेलैन जे कलकत्ता युनिवर्सिटीसँ बी.ए. पास पुतोहु छैन। मनमे ऐ बातक कुवाथ मनोहर बाबाकेँ छैन जे मिथिला युनिवर्सिटीक छात्रा रहितैथ तँ मनो मानि लैत जे कीनुआ डिग्रीधारी छैथ तँए कोनो लूरि-बुधि तेते नइ हेतैन, मुदा से तँ नहि, ओ कलकत्ता युनिवर्सिटीसँ बी.ए. पास केने छैथ। तहूमे गृहविज्ञानसँ। जे चाह बनाएब गछि कऽ बिसैर गेली। मनोहर बाबा बजला-

“जँ पढ़ल-लिखल लोक अपन जिनगीकेँ अनुशासित बना नइ चलत तँ परिवारक कोन बात जे अपना मनोमे ढाही लगिते ने रहत।”

मनोहर बाबाक बात सुनि अपनो मन तँ मनोहर भेबे कएल जे मनोहर विचारो फुटि कऽ बहरा गेल-

“जिनगीक क्रियामे केकरो बाधा उपस्थित करब, सचमुच..!”

मुदा अपनाकेँ रोकि लेलौं। रोकि ई लेलौं जे पढ़ल-लिखल परिवारमे जखन समुचित विचार नइ चलत तखन, बहुरंगी परिवार– बहुरंगी भेल जे कोनो परिवारमे सोल्होअना पढ़ल-बिनु-पढ़ल अछि, कोनोमे बारहअना, कोनो भेल आठअना आ कोनो परिवारमे चारिअना-पढ़ल-बिनु-पढ़ल अछि–केना चलत..? मुदा मनक सभ विचारकेँ समेट बजलौं-

“बाबा, केकरो बाधा उपस्थित केने कियो बाधित हएत? ओ तँ एकटा जिनगीक अमूल्य क्रिया छिऐ, तइले..?”

हमर विचार जेना मनोहर बाबाकेँ छुलकैन। मुदा रगड़ी कोनो आइयेक मनोहर बाबा छैथ सेहो नहियेँ कहल जा सकैए, सहए भेबो कएल। बजला-

“अखुनका समय बेसी दुइर करैक नइ अछि। मुदा अपने सोझामे कनी भाएकेँ (माने पुतोहुक भाएकेँ) मोबाइलसँ कहि दहुन जे एना-एना दिन-दुनियाँ अछि।”

अखुनका समयसँ आगुक समय बढ़ैत देखि सुतैले चलि एलौं। ओना आन दिन ऐ समयमे, माने तीन बजे भोरुका राति, नीनक कड़कड़ाएल अवस्थामे रहै छेलौं। मुदा आइ की भऽ गेल जे नीनक केतौ पते ने अछि। ऐ कड़सँ ओइ कड़ करै छी मुदा नीन आबिए ने रहल अछि। पाछू उनैट तकलौं तँ बुझि पड़ल जे बाबाक घुनघुनाएब नीन तोड़लक, तैपर अकलबेरक चाह पीलौं। अकलबेर भेल जे समय नियमित नइ अछि। मुदा दोसर दिस ईहो तँ ऐछे जे रूटिंग जिनगीमे बाबाक लेल से अकलबेर छीहे।

आइ पुर्णिमा छी, कातिकक अन्तिम तिथि आ इजोरिया परवक पनरहम दिन। आइसँ तेरह दिन पहिने, भरदुतियामे पुतोहुक भाए– राघव आएल छल, वएह हमरा चाह बनबैत देखलक तँ वेचाराकेँ दया लगलै।

घरक भनसिया बहिन, तँए ई तँ अपने हाथ-मुट्ठीक काज भेल। बीच-बचाव करैत समझौता भेल जे आइसँ बाबा अपना हाथमे चुल्हि-केटलीक कारीख नइ लगौता।

हाथमे कारीख लागब सुनि अपनो मनमे माया जगि गेल, दुनू गोरेक बीचक दया मयामे बदैल गेल जइसँ अपनो मन हल्लुक भेल जे भने चुल्हि लगक काज अन्त भेल। ओना मनमे लगले ईहो उठि गेल जे भाय सरलो-सुखलो माछ लऽ कऽ जे काठमाण्डू जाएत सएह ने पशुपति नाथक दर्शनो करत। काठमाण्डूक बागमती नदीक बीच बसल पशुपति नाथ, ओना अपनो सोमनाथ मुदा ओइठाम सुखटीक वणिज नइ होइत। भाय चाह बनबैक बहन्ने माघमे दू बजे रातिक आगिक सुख घन्टा-दू-घन्टा हुअए तँ माघोक राति किए ने हौउ, पसीनो तँ चुबाइये सकैए।

आइसँ तीस बर्ख पूर्व राघव मैट्रिक पास केलाक पछाइत गाम छोड़ि कलकत्ता गेल। गाम छोड़ैक कारण भेलै परिवारक वाध्यता। वाध्यता ई जे कोसी धारक कटानमे आधा गाम कटि गेलै, जइसँ परिवारक आमदनी टुटलै। मनमे ई रोपि राघव कलकत्ता गेल जे जइ शहरमे बिनु पढ़लो-लिखल लोकक अँटावेश अछि तैठाम तँ हम पढ़ल छी, मैट्रिक पास छी। हमर दुनियाँ तँ बिनु पढ़ल-लिखलसँ नमहर अछि तखन अँटावेश किए ने हएत। ..पढ़ल रहने राघवकेँ सुपारीक एकटा थौक गोदाममे नोकरी भेलइ। थौक कारोबार तँए दिन भरिमे एक-दूटा वेपारीसँ बेसी नइ पहुँचै मुदा ओकरे काज ओते जे मटियासँ मेट धरि भरि दिन खटैत रहइ। राघवकेँ गामक उजरल-उपटल जिनगी मनमे नचलै। समैयक उपयोग केलक। नीक कमाइक संग काजक समैयक बचत भेलइ।

पाँच बर्खक पछाइत ओ नोकरी छोड़ि राघव दोसर शुरू केलक। बी.कॉम. सेहो केलक, संगे थौक वेपारक कारोबार बुझल रहबे करइ,

साले भरिक पछाइत एकाउन्टेन्टमे बदैल गेल।

गाममे माए-बापकेँ छोड़ि, गामेमे खर्च दिअ लगलैन, आ सभ भाए-बहिनकेँ कलकत्ते लऽ गेला। भाइक फर्ज निमाहैत बहिन–सुशीला–केँ बी.ए. पास करा, बाबाक परिवारमे बिआह केलैन। ओना, पितो अपन काज, जे नइ करै-जोकर स्थितिमे बदैल रहल छला, माने परिवारक आमदनीक टुट आ सामाजिक सम्बन्धमे बढ़ोत्तरी एने तँ एहेन परिस्थिति बनिते छइ। तँए पितो राघवकेँ परिवारक उद्धारकर्त्ता बुझै छथिन आ सुशीला सेहो मानियेँ रहल छैन, जे पिता दाखिल भाए छैथ।

नोकरीक अन्तिम पड़ावपर राघव पहुँच गेल। ओना, प्राइवेट नोकरी, तँए सेवा निवृत्तिक कोनो ठेकान नहियेँ, मुदा पैंतीस सालक जिनगीक तीत-मीठक अनुभव करैत भरदुतियामे बहिनक ऐठाम आएल छल। ओना अपनो ओछाइनपर कछमछाइते रही, तँए गप-सप्प करैक मन होइते रहए। मुदा एते रातिमे केतए जा कऽ गप करब। तहिना मनोहर बाबाकेँ सेहो भेलैन। मुदा हुनका तँ बुझल रहबे करैन जे महेन्द्र जगले अछि। धड़फड़ाएल आबि ओसारपर चढ़ैत बजला- "महेन्द्र?"

बाबाक बोल अकानि बजलौं- "की भेल अछि, बाबा?"

उठि कऽ केबाड़ खोलि इजोत केलौं। दुनू गोरे एकेठाम बैस गप-सप्प करए लगलौं।

बाबाक मन जेना कड़ैक गेल होनि, तहिना बजला- "महेन्द्र, अखने राघवकेँ फोन करि कऽ कहि दहुन जे जइ मुहेँ भरदुतिया दिन बजलौं से आइ सामा दिन माने पुरनिमा दिन की भेल, से काल्हिये आबि कऽ देखि जाउ।"

बाबाक कड़कल मन देखि मनमे भेल जे जँ कोनो नरमाएल बात कहबैन तँ कहीं हमरेपर अपन तामस ने झाड़ए लगैथ, तखन तँ नाहक मारि जोलहा खाए। बजलौं- "अखन तीन बजे रातिमे ओ थोड़े जागल हेता जे फोनपर गप हएत।"

हमर बात सुनि बाबा कनीकाल ठमकला। मुदा लगले बजला- “बौआ, तूँ अखैन तीत-मीठ नइ बुझै छहक अपन काज सदिकाल अगुएने चली।”

आशा हारि बजलौं-

“तखन की करब नीक हएत?”

“एस.एम.एस. कऽ दहक।”

सएह केलौं।

मुदा मनमे उठि गेल जे परिवारमे एहेन-एहेन समस्या उठैत किए अछि? बजलौं-

“बाबा, जिनगीक तीन अवस्था अछि। बीतल, आजुक आ काल्हुक। काल्हुक लेल हम अपन जिनगीकेँ अपन भविस देखि जँ नहि ढालब तखन एहेन-एहेन समस्या परिवारमे उठबे करत।”

दोसर दिन राघव, सुशीलाकेँ पुछलैन-

“बहिन, बाबा बिगड़ल किए छथुन?”

सुशीला-

“भैया, सामाक दिन छेलै, समाजमे अपन कला प्रदर्शनक अवसर छल, अहीं जे शीशी नेने आएल छेलौं तइमे सँ एक गिलास खेबेकाल पीब लेलौं। ताबे गाममे सामा गीत शुरू भेल, हाँइ-हाँइ कऽ हाथ धोइ, सामाक डाली साजि आँगनसँ निकैल गेलौं, तँए चाह बनबैक सुरते ने रहल।”

❑

शब्द संख्या : 2233, तिथि : 20 नवम्बर 2016

देव उठान

कातिक मासक इजोरिया पखक एगारहम दिन माने एकादशी-के देवउठान पाबैनक दिन।

आइ जिनगीक पचपनमा बर्खक उतार-मासमे पहुँच गेल छी। उतार मास ई जे जहिना कातिक पाँचे दिन बाँकी अछि, तेरहम मास छी, तहिना अंगरेजीक नवम्बर मास छी, मात्र दिसम्बरटा पछुआएल अछि। अपन बर्खक कोनो मोजरे ने अछि, किएक तँ सालक हिसाब भेने दिन-महिना कटि जाइए। पढ़ल-लिखल लोक अपन जन्मकुण्डलीए-सँ आ स्कूल-कौलेजक तारीखोसँ अपन उमेर गनि लइ छैथ, मुदा बिनु पढ़ल-लिखलमे तँ से नइ अछि।

ऐ पचपन बर्खक जिनगीमे बाबन बर्ख ओहन रहल जे मन मानि गेल छल जे जे दिन धार बहैए, बहैए। आब करवनो मरना भऽ जाएत। तेकर अनेको कारण अछि, मुदा ऐठाम दुइए-टा। पहिल ई भेल जे दस-बीस हजार बीघाबला जमीन्दार परिवार नहि, ने साए-पचास बीघाबला जेठरैयत परिवार, आ ने पाँच-दस बीघाबला सीमान्त किसान। बीघासँ निच्चे जमीन अछि, जइमे जीबैत आबि रहल छी। खेतीक उपजो घटने आ धिया-पुताक बढ़बारि, जिनगीकेँ थौआ करए लगल। जिनगीक बाबन बर्खमे परिवारक ओहन धारमे बहैत जीवनकेँ मरने बुझि, घिसियौर कटैत आबि रहल छेलौं। मुदा जीबैत रहि गेलौं। सालक केतेको पाबैन परिवारसँ पड़ा गेल। ओना, कोनो-कोनो दोहरा-दोहरा एबो कएल, मुदा बेसी निपत्ते

भऽ गेल। ई बात हम अपने परिवारटा-क नइ कहै छी, आनोक कहै छी। जखन ढेरबा रही तखन सिंहेश्वर स्थान गेल रही। ओइठामक मेलाक जे रोहानी देखने रही, से एकाबनम बर्खमे दोहरा कऽ जखन गेलौं तखन कहाँ देखलिऐ। मरनासन्न बुझि पड़ल। ढेरबामे जखन गेल रही तखन हजारो जोड़ दुधारू गाए, सैयो घोड़ा-हाथीक आ सरर-तेजपातक जे मेला देखलौं से अखनो मोन पड़ैए तँ बुझि पड़ैए जे सिहेश्वर बाबा बड़ जगताजोर छला। मुदा चारि साल पहिने माने एकावनम बर्खक अवस्थामे जे गेल छेलौं तखन बुझि पड़ल जे स्थान मरनासन्न भऽ गेल अछि! तहिना अपन जिनगीमे सेहो बुझि पड़ैए जे कोन मनुक्खक रूप लऽ कऽ ऐ दुनियाँमे जन्म लेलौं, जे चालिस बर्ख टपैत-टपैत घपचालीस भेल जा रहल छी! मुदा निराश नइ छी। भाय, जाबे साँस अछि ताबे तँ जीबैक आस ऐछे किने। अखन तँ दस कोस साइकिलो चला लइ छी।

चन्देश्वर बाबा ऐठाम हरड़ी बच्चेमे गेल छेलौं, करीब आठ-नअ बर्खक तहिया रही। शिवरातिक मेला रहइ, गामक करीब तीस-चालीस गोरे गेल रही, मेलामे तेते रेड़ा रहइ जे जेरसँ छुटि गेलौं, हेरा गेलौं। ओना देखिऐ जे सभटा लोके छिऐ तखन बीचमे हम केना हेरा जाएब, तँए आन धिया-पुता जकाँ कानी नहि। मुदा फलो तेकर नीक नइ भेल, जेरसँ जे छुटलौं से असगरे रहि गेलौं।

किरिण लहसैत मेलाक लोक घर-मुहाँ भेल आ हम असगरे छुटि गेलौं। तीन दिनक पछाइत गाम पहुँचलौं। तहू हरड़ी स्थानमे पैछला पाँचम साल, माने पचासम बर्खक अवस्थामे गेल छेलौं। तैबीच परसा स्थानक जन्म सेहो भऽ भेल। सूर्ज मन्दिर, छीहे। मुदा चन्देश्वर स्थानक ओ रोहानी नहि जे जीवंतताक होइ छइ। तँए मनमे कखनो-कखनो अपन बुझल विचारपर बिसवास होइते अछि।

बुझल विचार ई अछि जे राजासँ रंक आ देवसँ दानव धरिक जिनगी सुख-दुखक बीच चलिते अछि, तहीमे ने अपनो छी। अखन

दुखक समय अछि काल्हि सुखक एबे करत। एहेन विचारक की अपनेटा बुझनिहार छी आकि सभ छैथ, जँ से नइ छैथ तँ एहेन विचार बजै किए छैथ। सुखक आशामे दुखकेँ टारैत एलौं। टारैत-टारैत बाबन बर्ख बीत गेल। मुदा मन तखन मुरैछ गेल जखन मनक बीच उठल जे जखन जिनगीक कोनो निसचित बिसवास नहि अछि जे कखनो खुश कऽ चलि जाएत, जेकर सुखक आशा धेने जीबैत एलौं से केना भेटत, केना पएब? मन आगू बढ़ल माने अपनासँ आगू बढ़ि जखन आन परिवारसँ समाज धरि आ अपन इलाकासँ देश दिस नजैर उठेलौं तँ बुझि पड़ल जे जे बुझै छी ओ मने-मन गुड़-चाउर फँकै छी। जँ से नइ छी तँ गरीब किए आरो गरीब भेल जा रहल अछि आ धनीक किए आरो धनिक भेल जा रहल अछि? गरीब कहिया धनीक बनत आ धनिक कहिया गरीब बनत। सबहक मुहेँ सुनिते छी, आने किए अपनो बजै छी जे 'गाड़ीक पहिया जकाँ जिनगी चलैए, जे कखनो ऊपर होइए आ कखनो नीचा होइए। माने कखनो सुखक अवस्थामे तँ कखनो दुखक अवस्थामे जिनगी चलैत रहैए।' जँ से नइ चलैए तँ लोक किए बजै छैथ, आकि अपने किए बजै छी जे 'एक दिन नावपर गाड़ी आ एक दिन गाड़ीपर नाव?'

समय बदलल। बाबन बर्ख पूर होइत रहए कि सरकारक घोषणा भेल जे तीन लाख शिक्षकक बहाली हएत। जइमे उमेरक कोनो हिसाब नइ रहत। तही बीच एजेन्ट सभ गाम-गाममे जगल।

आठ बजे भिनसुरका उखराहाक समय, दुनू परानीमे चाह-ले भोरे-भोर रक्का-टोकी भेल। रक्का-टोकीक कारण भेल जे नमहर परिवार अछि, पाभैर चीनी आ पनरह ग्राम चाहपत्ती भोरक खर्च अछि, से नइ रहइ। अपना तामस उठल रहए जे भनसियाक काज ने भेल चाह बनाएब, ऐ मे सोल्होअना भनसिया दोखी भेली। मुदा पत्नीक तामस रहैन जे पुरुख आनि कऽ घरमे देता तखन ने हम करब।

..कहा-कहीमे दुनू गोरे अपन-अपन तामस धोबिया घाटक वस्त्र

जकाँ पटकैपर रही। तेहाला कियो ओतए नहि, जे बीच बँचाउ करैत। अपने दुनू गोरे पटके-पटकीमे लागल रही, तँए अपन-अपन बात बुझैक विचारे ने मनमे जगए। जँ से जगैत तखन ने बुझितिऐ जे खाइ-पीबैले ओइ वस्तुक ओरियानो करए पड़ै छै जे अभावमे नहि भऽ सकल, तँए दुनू परानीमे कहा-कही होइए। तही बीच राजे भाय पहुँचला। कनी फरिक्के अबैत देखलयैन तँ अपनो बाजब कम केलौं आ पत्नियोंकेँ आँखि दाबि चुप करैत आँगन विदा केलौं।

..ओना, राजे भाय उमेरमे दस बर्ख कम छैथ मुदा हमहींटा नहि, हमरा सन-सन उमेरक आरो गोरे भाइये कहै छैन। ओना भाइक पाछू ईहो एकटा कारण अछि जे ओ रुपैआक लेन-देनबला कारोबार करै छैथ। लोक पुरुखाह बुझिते छैन, किए तँ कहिते छथिन जे राजे भाय रुपैआ दुआरे केकरो माए-बापक सराध बाधित नइ हुअ देता...।

लगेमे बैस राजे भाय बजला-

“तीन लाख शिक्षकक बहाली हएत। तोरो बहाली करा देबह।”

जहिना भातमे कोनो आँकर पड़ि गेने देह सिहैर उठैए तहिना राजे भाइक बात सुनि भेल। कहू जे नाम-गाम छोड़ि ने किछ लिखए अबैए आ ने किताब पढ़ल होइए, तखन कोन जादू-मन्तरसँ राजे भाय शिक्षक बनेता, से जिज्ञासा मनमे भेल।

राजे भाइक सूर-मे-सूर मिलबैत बजलौं-

“भाय, तखन तँ अहाँ वैतरणी पार कऽ देब।”

सह पबैत राजे भाय बजला-

“कौल्हुका अखबारमे समाचार निकलल हेन। सरकारेक भाषण छी, तहूमे अखन अखबारेमे आएल अछि। सहरजमीनपर अबैत-अबैत छह-मास-साल भरि लगबे करत।”

टोकारा दैत बजलौं- “से ते लगबे करत। देखै छिऐ जे तीस-तीस

बर्ख पूर्वमे जे काजमे हाथ लगल, माने काजक जे उद्घाटन भेल, सेहो सभ ओहिना अछि, ई तँ सहजे अखन कागजेमे अछि।"

हमरा विचारमे राजे भायकेँ की भेटलैन से ते ओ जानैथ मुदा हमरा बुझि पड़ल जे मनमे हरियरीक लहकी, पानिक समाढ़ जकाँ मनमे जरूर भेलैन। बजला- "हजारे रुपैआक पूजीमे हजारक कमाइक रस्ता छी। जखन समाजमे सभ एकठाम छी, तखन तोरोसँ बेर-बेगरता निमहत आ हमरोसँ निमहबे करतह।"

ताड़क गाछ जकाँ राजे भाइक गप-सप्पमे केतौ डारि-तारि नजैरपर पड़बे ने कएल। बजलौं- "भाय अहाँकेँ लोहा गाममे के ने मानत। हमरा नइ बुझि पड़ैए जे अहाँसँ बेसी उपकारी गाममे कियो छैथ।"

हमर बात सुनि राजे भाइक मनक चपचपी बढ़लैन। बजला-

"सैयोसँ ऊपर परिवारक उपकार केने छिऐ।"

बजलौं- "भाय, अहाँ ते तेहेन सगुनियाँ विचार देलौं जे जिनगीक उद्धार भऽ जाएत!"

अपन सुढ़ियाएल मोकिर (असामी) बुझि राजे भाय सुतरल वेपारक वेपारी जकाँ मुस्की दैत बजला-

"हमरा मनमे कि कोनो कलछपन अछि जे केकरो अधला करबै। जहाँ तक भऽ सकत तहाँ तक उपकार करबै। जँ उपकार नइ कएल हएत ते अपकारो नहियेँ करबै। मुदा अखन अगुताइमे छी, तँए बेसी गप-सप्प नइ करब। काजक गप करह।"

बजलौं- "हमरा कि किछ बुझल अछि जे काजक गप करब। अहीं ने कहब?"

राजे भाय बजला- "मास दिनक पछाइत परीक्षा छी, अखन धुर-झाड़ रजिष्टेशन आ परीक्षा फीस जमा होइए। तीन दिन आरो हएत। अखन एतबे बुझह। चारिम दिन युनिवर्सिटी जाएब। ओमहरसँ घुमि कऽ

आएब तखन ऐगला बात करबह।”

बजलौं-

“अखन की सभ करऽ पड़त?”

राजे भाय-

“तोरा किछु ने करए पड़तह, खाली एक हजार रुपैया दऽ दएह। सभ काज निपैट लेब।”

राजे भाइक बात सुनि मन तर-ऊपर हुअ लगल। दस मिनट पहिने चाह-चीनी-ले जे पत्नीक संग रक्का-टोकी भेल, हजार रुपैआ केतए-सँ औत। मुदा लगले मनक कुहि छँटल। छँटिते बजलौं-

“भाय, कनी घरोवालीकेँ पुछि लइ छिऐ।”

पत्नीक नाओं सुनिते राजे भाय बजला-

“मेल-फीमेल दुनूक बहाली हएत। तहूमे महिलाक तँ आरो बेसी गारंटी अछि।”

राजे भाइक बात सुनि मन दोसर दिस औना गेल। औना ई गेल जे जैठाम आइ धरि महिलाक दुर्दशाक कोनो कर्म बाँकी नइ रहल तैठाम महिलेक जिनगीक सुधारक बेसी गारंटी भऽ गेल! मनमे पचबे ने कएल। बजलौं-

“से की यौ भाय?”

बिसवासक संग राजे भाय बजला-

“एक तँ जाइतिक आरक्षण, तैपर सँ महिलाक आरक्षण सेहो भेल। तहूसँ पैघ बात ई अछि जे पुरुखमे तँ नाँउ-गाँउ लिखनिहार ऐछो मुदा महिला तँ पनरहअनासँ बेसी सफाचटे अछि। तेते शिक्षिकाक बहाली हएत जे ओते महिला पुरबो ने करतै।”

अपनासँ नीक भवितव्य पत्नीक बुझि पड़ल। चाह चीनीबला रक्का-

टोकी मनसँ बहटारि पत्नी लग पहुँच फुसफुसा कऽ बजलौं-

"अहाँक भाग जगि गेल, अहाँ कि कोनो आन छी। करवनो हमरा भागे अहाँ जीब आ करवनो अहाँ भागे हम जीब। जरवन दुनू गोरेक जूर-बनहन भेल अछि, तरवन तँ ओकरा निमाहबो ने अपने सभकेँ करए पड़त।"

अपन सभ बात बिसैर पत्नी कन्हा झँकैत बजली-

"दुनू परानीमे अहाँ ने पुरुख भेलौं। अहाँक पाछूए-पाछू ने हम चलब। अहाँकेँ जे नीक लगत सएह ने हमरो नीक भेल। अहीं जिनगिये ने हमरो मांग सिनूर।"

आँगनसँ आबि राजे भायकेँ कहलयैन-

"भाय, सभ दिन अहाँसँ रुपैया-पैसाक काज होइत रहल अछि, सूदिये सही, मुदा बेरपर ते अहीं ने ठाढ़ो होइ छी। अरवन हाथमे एकोटा पाइ नइ अछि, ताबे अहाँ काज सम्हारैत चलू सूदि लगा कऽ सभटा देब।"

'पाइ पूत पहाड़ तोड़ए' सएह भेल। पँच-पँच हजारमे दुनू परानीकेँ सर्टिफिकेट हाथमे आबि गेल।

गाम-गामक विद्यालयमे शिक्षकक बहाली हएत। पचीस हजार रुपैया पत्नीक बहालीमे आरो रवर्च भेल। राजे भाय जी-जानसँ मेहनत केलैन। पत्नीक बहाली गामेक स्कूलमे आ अपन बहाली गामसँ कोस भरि हटल सासुरेमे भेल। मुदा अपनामे ढौआ-कौड़ी नइ लगल। तेकर कारण भेल जे झमटगर परिवारमे बिआह भेल अछि। जेमहर ससुरक दियादी झूकै छैथ तेम्हरेसँ मुखिया-सरपंच बनै छैथ। तँए अपन भोँट-बैंक बनबै दुआरे बहालीमे सभ सहे लगौलैन जे विरोध नइ केलैन।

तीन साल शिक्षक बनना भेल अछि। दुनू परानी शिक्षक छी, एके रंग दरमहो पबिते छी। मुदा नाम-काममे दुनू गोरे दू रंग भऽ गेलौं। माने ई

जे सासुरमे अपन बहाली भेने कियो ‘पाहुन’ तँ कियो ‘पीसा’ कहिते रहि गेल अछि, आ पत्नी गामक स्कूलक ‘मैडम’ बनि गेल छैथ, तँए अपन कमाइ अपने मने खर्च करै छैथ, आ घरक अभिभावक भेने सोल्होअना परिवार अपने चलबै छी।

बीचमे अपन ड्यूटीक चर्च सेहो काइए लइ छी। गाम-गामक स्कूलमे दिनक भोजनक बेवस्था सेहो भाइए गेल अछि। तहूले तँ एकटा शिक्षक चाही। जइ दिन जुआइन करैले गेल रही तइ दिन अपन सारो आ पंचायतक मुखिया सेहो रहैथ। गामक लोककेँ सेहो बुझले छैन जे बिआहक समयमे पढ़ल-बिनु-पढ़ल वरक रूपमे बिआहो एक साल पछुआ गेल छल। स्कूलक खिचड़ी विभागमे नोकरी शुरू केलौं, आब तँ कहियोकाल नवका मकान सभ जे बनि रहल अछि, तेकर सीमटीक बोरा आ ईटा गनैक ड्यूटी सेहो करए लगलौं अछि।

काल्हि देव उठान पाबैन छी। देवता उठबाक पावन अवसर। स्कूलमे कौल्हुका छुट्टियोक सूचना भऽ गेल। बाल-बच्चा सभ खाइले पतियानी लगा, अपन-अपन छिपली, बाटी अपना-अपना आगूमे रखि भण्डार दिस देखि रहल अछि। भोजनो नीक बनले छइ। तेकर कारणो अछि जे काल्हि पाबैन छी तँए आइयेसँ जँ मन खुशी रहतै तँ काल्हि पाबैनियोंमे नीक पौत। तैबीच परसनिहारि भोजन विन्यास परसए लगली, तँए बाल-बोधक आँखि भण्डार दिससँ उनैट बारीक दिस चलि आएल। ओसारक कुरसीपर बैसल आँखि बाल-बोध दिस देने छी, मुदा मन कौल्हुका पाबैनपर तड़ैप गेल। मुदा समैयक परिवेशमे जे पाबैनक रूप बनि गेल अछि ओ ने एकोअना परम्परानुकूल अछि आने समयानुकूल परम्परानुक परिवर्द्धित सनातनी पद्धतिक विकासित रूप अछि।

खाएर जे अछि, पाबैन-तिहार तँ सहजे पत्नियेँक मुँहगरीमे चलि रहल अछि, तखन जे बीचमे अगुआ कऽ किछ बाजब ओ अपन मुहेँ दुइर

करब हएत। अनेरे जनिजातिसँ मुँह नोचाएब नीक नहि। जँ किछु पुछती तँ जे सुपथ बुझि पड़त, से विचार देबैन। जँ से नइ पुछती तँ सेहो बड़बढ़ियाँ। घर-अँगना जखन हुनका सुमझाइये देने छिऐन तखन घर-अँगनाक साँठो-उसार तँ हुनके ने करए पड़तैन। अपने बर बेसी करब तँ एतबे ने करब जे पुरुखक दलान बना पुरुख जकाँ पुरुखपनाक काजमे लगल रहब। पोखैरक पानि जकाँ थीर होइत-होइत मन थीर भेल।

थीर होइते बिसवास जगल जे जखन पत्नियोँ कमाइते छैथ, तखन अँगनाक काजक भारो तँ हुनके ने भेलैन। मन मानि गेल जे ऐ पाबैनसँ अपन फारकती भऽ गेल।

हल्लुकाइत मनमे अपन जिनगी उठि आएल। उठि ई आएल जे अपन जे नोकरी शुरू करैसँ पूर्वक जिनगी छल, ओना अखनो ओही जिनगीकेँ ई सोचि अपनौने छी जे जहिना हवा-बिहाड़िमे नोकरी खसल तहिना उड़ियो ने जाए तेकर कोन ठेकान अछि।

काल्हि पाबैन छी, कातिक मासक इजोरिया-एकादशी, पाँच दिन पहिने छठिक सूर्जक डुबैत-उगैत दुनू रूपक अर्घ देल गेल, पाँच दिन आगू पूर्णिमा-के सामा सेहो छी, बीचक पाबैन देव उठौन छी। जेना भक्क खुजल, आगूमे बाल-बोधक पतियानी देखि मनमे उठल- यएह बाल-बोधक उठानक पाबैन ने देव उठान छी।

तैबीच बाल-बोधक बीच हल्ला होइते धियान ओमहर चलि गेल। बाल-बोध एका-एकी उठए लगल।

टहलैत-बुलैत, बाड़ी-झाड़ी देखैत आने दिन जकाँ किरिण डुमला पछाइत घरपर एलौं। जहिना घात लगा शिकारी महारपर बैस देखैत रहैए तहिना पत्नियोँ दरबज्जेक कुरसीपर बैस, प्रतीक्षा करैत रहैथ।

..हमरा पहुँचते बजली-

“जाबे अहाँ कपड़ा बदैल हाथ-पएर धोब ताबे हमहूँ चाह नेने अबै

छी।”

पतिक आगत-भागत करैत पत्नीक रूप देखि मन दू-दाँतक बछोर बरदक उठल कलश जकाँ कलैश उठल। बजलौं-

“आबक लोकमे की कोनो आचार-विचार छै, ई तँ अहीं सन-सन जे छैथ, तिनके सभकेँ लोक-लहाज छैन।”

चाकर-चौरगर देह रहितो पत्नीकेँ जेना पानि चढ़ि गेलैन, तहिना छहछटीसँ बुझि पड़ल। ड्यूटीक पक्का लोक जकाँ पत्नीक पाकल रूप बुझि पड़ए लगल।

ओछाइनपर बैसते पत्नी चाह-पान नेने पहुँच गेली। चाह पीबैत बजली-

“काल्हि पाबैन छी, आन अँगना सभमे देखलौं हेन जे रंग-रंगक चीज-वौस सभ लोक अनलक हेन।”

पत्नीक रूपसँ बुझि पड़ल जे अखन हाथ-मुट्ठी गर्म छैन। टोक भरैत बजलौं-

“कियो धरम अपना-ले करैए आकि अनका-ले?”

पत्नीक मन सहमलैन। बजली-

“दू-मासक दरमाहा भेटल अछि, तइमे काज चलि सकैए आकि नहि?”

तम्मामे चाउरक मुड़ी जहिना छोपल जाइए तहिना छोपैत बजलौं-

“किछु छी तँ मिथिलाक सनातनी पद्धति छी किने, नइ पान तँ पानक डण्टियोसँ पाबैन-पूजा होइते अछि..!”

मने-मन गर अँटबए लगलौं जे चालीस हजारक एस्टिमेट बनबैक अछि। एस्टिमेट मनमे देव उठानक डालीपर नजैर गेल। विश्वकर्माक आदिम रूपक अस्त्र-शस्त्र जे कोदारि, खुरपी, हँसुआ, टेंगारी इत्यादिक

संग चलैले खराम बैसैले पीढ़ी आ भोजन-ले फल-फलहरीक संग तीमनो-तरकारीक डालीक हाथ उठैए।

पाबैनक भोर, अड़िपन-उसरपन हएत। दुनू परानी बैस अपन-अपन हिस्सा पाबए लगलौं। फल-फलहरी आ तीमन-तरकारीक डाली सझिया भेल, दुनू गोरे खाएब। खरामो आ आनो-आनो ओजार हिस्सा पड़ल। मुदा पीढ़ी रहि गेल सझिया।



शब्द संख्या : 2297, तिथि : 24 नवम्बर 2016

नमहर घरक चोइर

गामक विचारक वृक्षमे जेना फुलक नव कोढ़िक सिरखार होइए तहिना अनुमान भेल।

भेल ई जे पढ़ुआ भाय दरभंगा कौलेजमे प्रोफेसर छैथ। मनमे जे विचार, जेहेन विचार रहल हौन वा गामसँ हटल समाजक बीचक जे जिनगी हौन, मुदा गामक लेखे जेहने अमेरिकाक प्रवासी तेहने गामसँ हटल देशोक शहर-बाजारमे रहनिहार प्रवासी...। मुदा नोकरीक पचीसम बर्ख पुरला पछाइत मनमे जेना पालाक मारल कोनो फूल वसन्तक हवा पबिते फुरफुरा कऽ जगैए तहिना पढ़ुओ भायकेँ जगलैन। ओना, नोकरीक पचीसम बर्खमे परिवारक बोझ जे माथपर छेलैन सेहो उतैर गेल रहैन। माने ई जे दूटा बेटा आ एकटा बेटी छैन। बेटीक बिआह प्रोफेसर बरसँ केलैन आ दुनू बेटा पछुआएल छैन। दुनू प्रशासनिक पदाधिकारीक जिनगीसँ जीवन शुरू केलैन।

माथक अपन उतरैत भारसँ जेना पढुआ भाइक मन हल्लुक भेलैन। पढ़ुआ भाइक मोटा तँ नमहर अछि मुदा ऐठाम खाली बिआहक चर्च करब। समाजक बीच जे बिआह पद्धतिक रूप-रेखा बनि गेल अछि ओ नैतिक विचारपर सोझ प्रहार कऽ रहल अछि, माने ई जे लेन-देनक एहेन रूप बनि गेल अछि जे केतौ बेटा अपन इमान उठबए चाहैत तँ पिताक आज्ञाक उल्लंघनक अपराधी बनैत, तँ केतौ पिता अपन इमान बँचबए चाहैत तँ बेटाक नजैरमे अफराधी बनैत। माने ई जे पढ़ुआ भाइक पिता

जखन दहेजक नाओंपर एको पाइ नइ छुलैन तखन बेटे अपने किए नीच अनीति-रीति परिवारमे आबए देब, मुदा जेकर बिआह हेतइ, जँ ओ अपन काज बुझि अपने करैले तैयार भऽ जाए, तखन अनेरे ओइमे देह रगड़ब हएत। ओना, एके परिवारक भाए-बहिनक बीच बिआह एते दूरी बना देलक अछि, जे चीन-पहचीन समाप्त भेल जा रहल अछि। खाएर जेतए जे हौउ, पढ़ुआ भाइक अपन सोच-विचार छैन, जेकरा हथिया अपन जिनगीक पैंतालीस बर्ख गुजारि लेलैन अछि।

पढ़ुआ भाइक परिवारक प्रति–माने अपनासँ ऊपरसँ लऽ कऽ निच्चाँक खाढ़ी धरि–अपन स्पष्ट विचार छैन जेकरा अपन सीमा बुझि, परिवार-जनक सीमाक संग सम्बन्ध बना परिवारक गाड़ीक जे पहिया होइ, ऐगला होइ कि पैछला होइ, समैयक गतिसँ चलैत रही। अखन धरिक जिनगी पढ़ुआ भाइक ई रहलैन जे आजुक परिवेशमे केहेन मनुक्खक जरूरत अछि, जइसँ दुनियाँक चालिमे बराबरीक रूप होइ। एहनो एकभगाह माता पिता तँ छथिए जे बाल-बच्चा-ले धनेकेँ सर्वोपरि बुझि ओही दिस चलै छैथ। एक जगहपर ओहो नीक। मुदा समयानुसार जँ बौद्धिक-आर्थिक रूप संग मिलि नइ चलत तँ बीचमे खच्चा हेबे करतै।

माता-पिताक पार लगबैत बेटा-बेटीक भार निमाहि जेना ऐ साल पढ़ुआ भाय नमहर साँस छोड़लैन। अखन तक धारणा बनल छेलैन आ किछ-किछ अखनो छैन्हे, जे समाजक खतियान बनैसँ पहिने खेत बनत आ खेतक आड़ि-मेड़ रस्ता, मुदा से तँ खेते बलुआह अछि! सिनेहक कोनो लज्जैत छइहे नहि! माने जहिना उर्वर माटिमे जे सिनेहक शक्ति अछि ओ मुदा दोखरा बाउलमे नइ अछि तँए पहिने परिवारकेँ सम्हारब दायित्व अछि। ओना बजनिहारक मुँहमे कियो ताला थोड़े लगा सकैए, ओ तँ लोककेँ अपने लाजे-विचारे लगै छइ।

ओना तीन मास पहिने पढ़ुआ भाय, चाल-चूल देलखिन जे गाममे साहित्यिक कार्यक्रम हुअए। आने गाम जकाँ अपनो गाम ऐछे जे तीन

मासपर मेला आ मनचोभी नाच नचिते अछि। तँए साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम नइ होइए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। मुदा एते तँ कहले जा सकैए जे कोनो गाम-समाज समुद्र जकाँ अछि, जइमे घोंघासँ लऽ कऽ अमृत धरिक बास अछि। तँए सबहक अँटावेश भेले पछाइत ने समाज निर्णायक दौड़मे पहुँचत जे साहित्य-सांस्कृतिक परिमार्जित रूप की हएत। तइले तँ समाजकेँ जगाएब जरूरी अछि। जगले लोकसँ ने अधिक सम्भव हएत। यएह सोचि पढ़ुआ भाय साहित्यिक नव सिरासँ सिरमौड़ करैक विचार केलैन।

दू मास पहिने गाम आबि पढ़ुआ भाय गामक स्कूलोपर जा आ जेतए जे कला-प्रेमी, जइ रंगक भेटलैन सभकेँ कहलखिन जे गाममे साहित्यिक कार्यक्रम करब, से सभ कियो एकठाम बैस विचार करब बेसी नीक हएत।

साहित्यिक कार्यक्रमक चर्चा कऽ पढ़ुआ भाय दरभंगा चलि गेला। ओना गामक बीच अनेको प्रश्न पढ़ुआ भाइक प्रति, कार्यक्रमक संग-संग सेहो उठए लगल। कौलेजक शिक्षक रहितो गाममे पढ़ुआ भायकेँ दुइए यूनिटक मटियो तेल, चाउरो-गहुम आ चीनियोँ अनके जकाँ कोटा छैन, भलेँ अपन गामक कोटा नइ उठा दरभंगेमे किए ने उठबैत होथि।

साहित्यिक संग कलाक चर्च समाजमे एक नव दृश्य ठाढ़ केलक। लोकक रिझान सेहो रंग-रंगक हुअ लगल। कियो साहित्यिक कार्यक्रमकेँ कथा-कविताक कार्यक्रम बुझैत तँ कियो मनुक्खक जिनगी-ले कलाक अनिवार्यताक जड़ि साहित्यकेँ बुझैत। मुदा से कम। ओना, समाजक बीच कथा-पिहानी, गीत-संगीत, नाच-तमाशा, कहबी-लोकोक्ति, भित्रि-चित्र इत्यादि-इत्यादि भरले अछि।

नव कार्यक्रमक चर्चक संग पढ़ुआ भाइक जिनगीक कथा-बेथा सेहो गामक चौक-चौराहाक संग दुआर-दरबज्जापर हुअ लगल। मुदा

ओइठाम आबि विचारमे विराम लगि जाइत, जे साहित्यिक कार्यक्रमक की रूप-रेखा हएत। यएह सोचि पढ़ुआ भाय समाजकेँ बैसार करैक विचार केलैन।

हजारो परिवारक समाज छी, हजारो वृत्तिसँ जुड़ल लोक अछि, तैठाम एकटा निर्धारित समय बना बैसार करब नीक हएत। से धड़फड़मे नइ हएत। तँए पहिने एकटा तिथि निर्धारित भऽ जाए, जइसँ लोक अपन रूझानोक परिचय देता। माने ई जे कियो अपन मननुकूल जिनगी बना चलए चाहै छैथ, तैठाम दू तरहक बान्ह लागल अछि, एक अपन काजक बान्ह आ दोसर जँ अनकर मातहती काज करै छी तँ ओ बान्ह। मुदा सभकेँ तँ बुझले छैन जे गामक-बच्चासँ बुढ़ धरि सेहो समाज भेलौं। एक जातिक समाज सेहो भेलौं, तहिना एक वृत्तिक समाज सेहो होइते अछि। दोसर दिस ईहो तँ ऐछे जे सभ मीलि समाज सेहो छीहे, पाँचो-दस गोरे मीलि सेहो छी आ दू गोरेक झगड़ामे तेहाला एक गोरे सेहो समाजे भेला। मोबाइलिक जुग छीहे। तहूमे पढ़ुआ भाइक जिज्ञासा रहबे करैन। तँए अनका जे से मुदा हमरा तँ दिनमे एकबेर खोंचाड़ियो दइ छैथ जे समाज सभसँ सम्पर्क-सम्बन्ध बनबै छह किने।

ओना हमरो जहिना एक दिस पढ़ुआ भाय खुट्टा जकाँ ठाढ़ छैथ तहिना दोसर दिस समाजोक उपकारक क्रिया तँ साहित्यिक कार्यक्रम छीहे। तँए रस्ता चलैमे काँट-कुश केतौ ने बुझि पड़ैत।

ओना लोकक विचारो आ जिज्ञसो पढ़ुआ भायकेँ समाचार दइते छिऐन। अपने तँ अपनाकेँ वएह भर-उघा बुझै छी जे समाजक विचार पढ़ुआ भायकेँ दइ छिऐन आ पढ़ुआ भाय की करए चाहै छैथ से समाजकेँ कहै छिऐन।

ऐगला रबि दिन दू बजे दिनसँ बैसार छी। कुरसीपर बैसल पढ़ुआ भाय मने-मन विचारि रहला अछि जे अपन जिनगीक केते सम्बन्ध

समाजसँ रहल आ अखन की अछि। की अपनाकेँ भटकल बुझब। दोसर मन रोकैत कहलकैन-

"भटकल तँ ओ भेल जेकर जिनगी भटैक जाइ छै, पथ-सँ-कुपथ दिस चल जाइ छइ। मुदा पथसँ सुपथ दिस जँ जाए तखन ओ की भेल?"

पढ़ुआ भाइक मन ठमकलैन। ठमकलैन ई जे भटकल जँ नहियोँ छी तैयो तँ छिटकल कहियौ आकि हटकल कहियौ चाहे फड़कल कहियौ, से तँ भेबे कएल। मुदा किछु भेल तैयो तँ ई सत्य ऐछे जे वएह गाम छी जैठामसँ एम.ए. पास केलाक पछाइत प्रोफेसर भेलौं। गाम हमरो छी, नीक करबाक अधिकार हमरो अछि...। मनमे अबिते संतोष जगलैन।

पढ़ुआ भाय साहित्यक ओहन साधक छैथ जे साहित्यकारक पत्रानुकूल जिनगी बना साहित्य साधना कऽ रहल छैथ। मुदा नोकरीक जीवन रहितो परिवारकेँ सम्हार करबमे अखन धरिक समय ससरलैन। ओना, जइ हिसाबसँ पढ़ुआ भाय अपनासँ ऊपर अपन परिवार–माने बेटा-बेटीक जिनगी–केँ उठौलैन ओहो तँ ओही समाजक ने उठल, जइ समाजमे रहए चाहै छी। ..आगूक रस्तामे केतौ विघ्न-बाधा नहि देखि पढ़ुआ भाय विचारि लेलैन जे आठ बजे भोरे गाम पहुँचब।

भिनसुरके बससँ दुनू परानी पढ़ुआ भाय गाम पहुँचला। ओना, सालमे दू-तीन बेर गाम अबिते छैथ, मुदा से अपना काजे, तँए गाम एला पछातियो गाम-समाजसँ कम सरोकार छैन। सरोकार कम किए ने रहतैन, अगहनमे धान, जेठ-अखाढ़मे आम आ फागुन-चैतमे दालि-दलिहनसँ लऽ कऽ रब्बी-राइ समटए अबै छैथ। काजो तँ काज छी, ओ तँ समाजक कोन बात अपनो दैनंदिनक रूटिंग गड़बड़ा दइए।

ओना, आन दिन जे पढ़ुआ भाय गाम अबै छला ओइ रूपमे आ ऐबेरक रूपमे अकास-पतालक अन्तर बुझिमे आबि रहल अछि। मन हुअए जे कहिऐन- 'भाय चेहरामे कलमी-सरही आमक रूप झलैक रहल

अछि।’ मुदा कलमी कि सरही ओ रूपमे थोड़े अछि, ओ तँ अछि गुणमे। माने ई जे सरहियो–फैजली, सजमैनिया–आमक फलक साइज केते गुणा नमहर कलमी–गुलाब खास वा बमबई–सँ अछि। मालदहो बड़ नीक तँ ओकरोसँ देह-दशामे दोबर-तेबर अछिए। अपने मनमे भेल जे जेते मनमे उपकए ओते बाजब उचित नहि। जँ भौजीकेँ कहबे करिऐन तँ ओ कनी सोहंतगरो हएत मुदा भायकेँ कहब नीक नहि। तहूमे पढ़ल-लिखल विचारवान लोक छैथ, हुनकामे तँ ई शक्ति पसरिये गेल छैन जे क्षण-क्षण अपनाकेँ नीकसँ नीक बढ़बाक बाट सुझिते छैन।

पढ़ुआ भाय दियादेमे छैथ। दियादोमे ओहन दियाद जे घरो लगेमे अछि। एको माता-पिताक सन्तान दूर रहने सम्बन्धमे कमी आबि जाइ छइ, मुदा आनोक सम्बन्ध तँ एकठाम बास रहने बढ़िते अछि। अपनो घर-दुआर डेराबला घर-दुआर बनियेँ गेल छैन। माने ई जे सभ दिन नइ रहने कुत्ता-बिलाइ, मूस-छुछुनैरक संग बीढ़नी-माछी आ मकड़ाक जालक बास तँ बनियेँ जाइए। तेकरा चिक्कन केलाक पछाइते ने रहै जोकर होइए। तँए दुनू परानी अबिते झाड़-झूड़ करए लगला।

गामपर नइ रही, आइ दू बजे बैसार छी, जहिना विद्यार्थी परीक्षा दिनक महत बुझैत तहिना ने समाजोक काज छी। गोविन्द ऐठाम गप-सप्पमे समय लगि गेल। ओना बुझल रहए जे पढ़ुआ भाय आठ बजे गाम पहुँच जेता। मुदा मनमे ईहो हुअए जे जखन अपन घर-दुआर सभ किछु छैन्हे तखन गामो ने हुनको छिऐन। समाजक बीच बैसार छी, समाजक काज छी, सबहक छी।

घरपर अबिते पढ़ुआ भायकेँ देखलयैन। देखिते कहलयैन-

“भाय, गोड़ लगै छी। आउ पहिने चाह-ताह पीब लिअ, तखन माया-जालक फन्दामे लागब।”

ओना पढ़ुआ भाय ससैर कऽ दरबज्जापर आबि गेला, हमरा गपक

की माने लगलैन से तँ वएह बुझता, मुदा एला चुपे-चाप। लगमे अबिते बजला-

“बैसारक तैयारी केहेन छह?”

कहलयैन-

“गाम तँ गामे छी। तहूमे मिथिलाक गाम जेतए साहित्यक भिन्न रूप माने कलाक रूप, तेना जिनगीसँ जुड़ि गेल अछि जे फुटा कऽ ने अपने देखि पबै छी आ ने भरिसक समाजे देखि पाबि रहला अछि।”

ताबे चाह आबि गेल। गम्भीरते-गम्भीरतामे पढ़ुआ भाइक विचार रहि गेलैन। मुदा हुनकर गम्भीरता देखि मनमे ईहो हुअए जे जेना मनमे अटुट साहस भरि पढ़ुआ भाय गाम पहुँचल छैथ। चाह पीबिते बजला-

“बौआ, पाँचो-दस गोरे एकठाम बैसब किने?”

हमरा तँ गामक दुर्गापूजाक बैसार बुझल अछि, कहलयैन-

“भाय, एना झुझुआ कऽ किए बजै छी! कम-सँ-कम पान साए गोरे बैसता।”

गामेक समय छी, तहूमे सार्वजनिक काज। एक तँ ओहिना बेरुका उखड़ाहा, माने बेरमे बेरूका चाहोक चाह, जलखैयोक चाह, भाँगोक चाह आ सभसँ आफत ई जे भाँग पीला पछाइत बिनु दिशा-मैदान गेने, सेहो नीक नहि। खाएर तीन बजे पहुँचैत-पहुँचैत पनरह-बीस गोरे पहुँच रंग-रंगक गप-सप्प कन्ना-फुसीक रूपमे शुरू भेल। तहूमे रुपैयाक किरदानी आइ-काल्हि पसरले अछि तँए गपक मशल्लो तरगर अछिए।

विधिवत बैसार शुरू भेल। अपन कार्यक्रमक रूपरेखा पढ़ुआ भाय रखैत बजला-

“अखन कार्यक्रमक छोट-छीन जानकारी अछि। तँए पहिने ई तँइ कऽ लिअ जे कार्यक्रम कोन रूपेँ हुअए।”

गामक चन्दाक रंग-ढंग जीयालालकेँ बुझल, बाजल-

“पारिवारिक काजक नाप-जोख ने परिवारसँ होइए, मुदा सामाजिक काजक नाप-जोख तँ समाजेसँ होइत हएत। तँए खर्चक चिन्ता भाय नइ करू, समाजक लाली चारूकात माने गामक चौबगली पसरै से करैक अछि।”

अन्तमे निर्णय भेल जे ऐगला पनरहम दिन, रबिकेँ दिनक दू बजेसँ कार्यक्रम शुरू हएत आ आठ-नअ बजे राति तक सम्पन्न हएत।

सात गोरेक संचालन समिति बनल, जिनका सभकेँ अपन-अपन जिम्मा देल गेलैन। आ ईहो तँइ भेल जे कार्यक्रमक मुख्य आकर्षण कविता हएत। जइमे तीन गोरे बाहरसँ औता, बाँकी गोरे गामक रहब।

कविता तँ लिखऽ नइ अबैए, मुदा तुकवन्दी तँ कएल होइते अछि। भलेँ स्त्रीकेँ पुलिंग बना दिऐ आ पुरुषकेँ स्त्रीलिंग। ओना पत्नी अपनासँ बेसी पढ़ै-लिखैमे ढंगर छैथ, विद्यार्थियो नीक रहली। तइ हिसाबे अपनाकेँ भाग्यक जोरगर बुझिते छी जे हमरा सन भुसकौल बरकेँ ओहन तेजगर कन्या भेटल। मुदा ऐमे जेते अपन भाग्य नइ काज केलक तइसँ बेसी काज केलक दहेज। भाय जँ अपन मन-माफित जोड़ी लगि जाए तँ दहेज लोक अनेरे किए लेत। तहूमे अपने तँ भुसकौले छी, जँ तेजगर पत्नी भेट जेती तखन ने जिनगीक गाड़ी दनदनाइत चलत।

पत्नीकेँ कहलयैन-

“एक तँ पढ़लो तेहेन नइ छी, मुदा तैयो गामक पढ़ल-लिखलमे गिनती तँ होइते अछि। मुदा अहाँ ते अपन परिवारक काज सम्हारि दिन-राति उपन्यासे, कविता पढ़ै छी, तेहीमे सँ गोटे लिखि दिअ। गामक मंच छी, मुहोँ बन्न राखब नीक हएत।”

पत्नी बजली-

“अपन लिखल तँ किछु ने अछि, मुदा आन-आन कविक कविता

तँ कंठस्थ अछिए।”

मनमे भेल अनकर रचनाक शब्दक चोइर नइ होइए, किए तँ ओ सार्वजनिक छी, मुदा पाँति तँ अपन भऽ जाइए। जँ अनकर पाँति लेब तखन तँ ओ भेल अनकर लिखल।

ओना कहबियो आ लोकोक्तियो सार्वजनिक अछि तँए ओकरे अधारो आ उदाहरणो बनाएब तँ उचित मानले जाइए। बजलौं-

“अखन एक पनरहिया बाँकी अछि माने कार्यक्रमक, तैबीच समाजोक नामपर किछु करब से नइ? एक पनरहियामे तँ देखै छिऐ जे अमावश्या पुरनिमा बनि जाइए आ अहाँ तँ सहजे नीक छात्रा रहलौं।”

पत्नी बजली-

“अच्छा विचारै छिऐ।”

आइ कार्यक्रम छी। भिनसरेसँ गामक चहल-पहल बढ़ि गेल अछि। तहूमे तीन दिनसँ चलि अबैत सभ बेवस्थाक अन्तिम क्षण छी। कोन काज पूर्ण तैयार अछि आ कोन अधूरा...।

अही सभ भाँज-भूँजमे पढ़ुआ भाय भोरे जुमि गेला। जुमि कि गेला जे एकेठाम घरो अछिए।

पढ़ुआ भायकेँ देखिते बजलौं-

“भाय, देखै जोग बेवस्था हएत।”

काज देखि पढ़ुआ भाइक मन जिरा गेल छेलैन।

बजला-

“बौआ, अपना सभ ते सहजे उपराड़िमे छी, चारूकात हाटो-बाजार पसरल अछि आ रोड-सड़क भेने गाड़ियो-सवारीक बाढ़ि अछि। मुदा जैठाम एहेन नहियोँ अछि, जेना धारक कातक गाम सभ, तहूठामक लोक जँ अपन स्थिति बुझैत करए चाहता तँ ऐसँ नीक बेवस्था कऽ सकै

छैथ।"

ओना पढ़ुआ भाय अपन विचारे बजला मुदा हमरा ओते पसिन हुनकर विचार नइ लगल जेते पसिनगर विचार छेलैन। मुदा एते तँ मन मानिते अछि जैठाम मेहनती लोक रहत तैठाम किछ-सँ-किछ भऽ सकैए।

..लेकिन जँ उपराड़ियेमे आलसी-निकम्मा समाज रहत तखन की भऽ सकैए। बजलौं-

"भाय, कौआ कान नेने जाइए, ओइ भाँजमे थोड़े जाएब की अपन कान देखि बिसवास करब। अखन धरिक बेवस्था कार्यक्रमक क्रियाक अनुकूले नीक अछिए।"

गमैया लोक बुझि, आकि की, पढ़ुआ भाय बजला-

"बौआ, जखन तूँ नीक बुझै छहक तँ ओ नीक हेबे करत। बेवस्थाक अन्तिम दौड़मे छी, तँए ओहीठाम माने ब्रह्मस्थानमे टेन्ट-समेना बेवस्था कएल गेल, चलि कऽ सभ किछु देखि लेब नीक हएत।"

बजलौं-

"हँ, चलू।"

संचालन समितिक क्रिया-कलाप नीक रहने जमगर कार्यक्रम शुरू भेल। प्रचार-प्रसारक ई ढंग रहल जे जेना कोनो नव जागरण भऽ गेल हुअए। जहिना समेनाक दृश्य, तहिना बैसकक दृश्य।

ओना बचकानी धिया-पुता सभ एक तोर भिनसरोमे आ खेला-पीला पछाइत समेनाक बाहर परती अजबारि अपना-अपना घुनियेँ खेलमे लागल। गामक महींसवार स्थानेक इर्द-गिर्द अपन-अपन महींस चरबए चलि आएल। घसवाहिनी सभ सेहो खुरपी-पथिया नेने ओही इर्द-गिर्दमे घास छीलए पहुँच गेली।

ओना ई विचार पहिने भऽ गेल छल जे जइ कविताक पाठ जेते

समयमे हुअए कमसँ कम ओते समयमे ओकरा बुझौलो जाए। ई नइ जे एकटा शब्द मुहसँ खसल आ बाह-बाही शुरू भेल...। पत्नी कुरताक ऊपरका जेबीमे एकटा कविता रखि देने छेली। समय भेटल, मंचपर ठाढ़ भेलौं। कविता पढ़लौं। आवाज किछु मौगमिसरी ऐछे, सुननिहार थोपड़ी बजौलक।

समीक्षक उठि कऽ बजला-

“कविता शुद्ध-अशुद्ध अछि, पाँइतिक चोरि तक सम्भव अछि। भावमे चौपाइयो भऽ सकैए। मुदा ई कविता तँ ओ नमहर घरक चोइर छी, जे सभकेँ बुझल छइ। जँ छोट-छीन घरक आ दबाएल-हेराएल घरक रहैत तँ दोग-सान्हिमे निकैलियो सकै छल, मुदा... ।”

समीक्षकक समीक्षासँ दुख नइ भेल। मनमे भेल ई जे पत्नी भरिसक मजाक केलैन। हुनको सोचबमे केतौ भूल नइ भेलैन। ओहो तँ एहेन मंचकेँ मजाके मंच ने बुझै छैथ। फेर भेल जे एहेन मजाक कोन मजाक भेल जे बेपाइन भेलौं। मुदा लगले मनमे उठल जे जे बात अपने नइ बुझि गलती केलौं, जँ तेहने बुद्धियारि पत्नियों होथि, तखन। कहुना-कहुना मनकेँ थीर करैत ऐगला कार्यक्रमक भार लेलौं।

❑

शब्द संख्या : 2397, तिथि : 28 नवम्बर 2016

❑❑❑

❑❑

❑

Notes